COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II) का कार्यालय,
महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु – 560 001

80 वाँ स्वतंत्रता दिवस

आशीर्वाद

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका - 2026

अंक 39 वाँ

सत्यनिष्ठा | पारदर्शिता | उत्तरदायित्व | निष्पक्षता | सेवा

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2026 के दौरान भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय की गरिमामयी उपस्थिति

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II) का कार्यालय,
महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु - 560 001

आशीर्वाद

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका - 2026

अंक - 39

पत्रिका परिवार

संरक्षक - श्री अशोक सिन्हा/ प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

श्री जहांगीर इनामदार/ महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्री दीपक मैथ्यूज/ प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

अध्यक्ष: श्री सुब्बैय्या, वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन(लेखापरीक्षा-II)

संपादक: श्री देव प्रकाश गुप्ता, सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप संपादक: सुश्री प्रियंका संजीव सिंह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रूफ रीडिंग एवं टंकण: 1. सुश्री प्रियंका संजीव सिंह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

2. श्री शिव शंकर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पृष्ठ सज्जा एवं चित्र: राजभाषा अनुभाग एवं आई टी सेल

सहयोग: राजभाषा परिवार के समस्त सदस्य

चित्र संकलन: कल्याण अनुभाग

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं ज़िम्मेदार हैं।

पाठकों की कलम से... (अनुशंसा पत्र)

हिंदी.../पत्रिकाओंकीपावती/2024-25/36(2)

PDF.js viewer

I/1168330/2025

महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले (ले.व ह.)/हि.क/प.पा./2025-26/176 दिनांक: 13.10.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय: "आशीर्वाद" के-38वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 38वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर सुश्री प्रियंका संजीव सिंह की कहानी 'कोशिश', सुश्री आरती प्रिया दर्शनी का लेख 'मानसिक स्वास्थ्य' एवं कहानी 'मेरी मदर इंडिया', श्री प्रसाद पी. जोशी की कविता 'नदी जीवन की धारा', इत्यादि प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की सभी रचनाएं लेखकों की सर्जनात्मकता एवं हिंदी के प्रति रुचि को दर्शाती हैं।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 16-10-2025
17:56:04

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

...office.gov.in/efile/#/draft/I000CAG0001859071/2/view?source=FILE&documentId=F000CAG0000346882&viewParam=eyJkb2N1bWV... 1/2

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
O/o Principal Accountant General (A & E), Jammu & Kashmir, Srinagar

क्रमांक: हिंदी प्रकोष्ठ/प्रमले (ले.व ह.)/हिंदी गृह पत्रिका-समीक्षा/2025-26/63
दि. 03.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
बेंगलूरू-560 001

विषयः गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की ई-प्रति प्राप्ति हुई है। सादर धन्यवाद। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु यह एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका में संकलित रचनाएं जैसे सुश्री प्रियंका संजीव सिंह, वरिष्ठ अनुवादक की रचना 'कोशिश', श्री संजीव चंद्र पाठक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'मिथिला एक परिचय', श्री कुमार अग्निवेश, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'भारत में शिक्षाः प्राचीन से नई शिक्षा नीति 2020 तक का सफर, श्री ओम कुमार अडलक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'हिमालय की गोद में पाँच दिन', श्री प्रसाद पी. जोशी, सहायक पर्यवेक्षक का लेख 'आज की शिक्षा' तथा श्री मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक का लेख 'लक्ष्य निर्धारण का महत्व' अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की साज- सज्जा व मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली–110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

दिनांक / Date...............

सं. रा.भा./प्रशा./बाह्य पत्रि./23/2025-26/47 दिनांक 31.10.2024

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय बेंगलूरू
ऑडिट भवन, बी ब्लॉक, पहला माला, डाक थैली सं./5398
बैंगलरू -56001

विषयः वार्षिक गृह पत्रिका आशीर्वाद के 38 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 38 वें अक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत सुंदर है। पत्रिका में संकलित सभी रचानाएं पठनीय एवं रोचक है। सुश्री प्रियंका संजीव, वरिष्ठ अनुवादक की "कोशिश", एवं सुश्री आरती प्रिया दर्शनी की "मानसिक स्वस्थ्य" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के उद्देश्यों की पूरा करती है। यह अंक गत अंको से बेहतर बनाना गया है।

पत्रिका के संपादक एवं संपादक मंडल को पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

सहायक निदेशक

Ph. : +91-11-23702357 Fax : +91-11-23702359 Email : pdaica@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 62 दिनांक07.11.2025

प्रति,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
बेंगलूरु

विषय : वार्षिक गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 38 अंक की पावती बाबत ।
संदर्भ : आपका ई-मेल दिनांक 01.10.2025

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "आशीर्वाद" के 38 अंक के ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर कोशिश, डिजिटल युग में नैतिकता की भूमिका, हिमालय की गोद में पाँच दिन, एक जीवन-कई पड़ाव, भारतीय समाज में कृषकों की स्थिति, आज की शिक्षा, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

प्रफुल
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, AUDIT (II), WEST BENGAL, CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK, SECTOR-I, SALT LAKE CITY, KOLKATA - 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/62
No.H.C/P.P/

दिनांक:- 07/10/2025

07 OCT 2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/ राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
कर्नाटक, बेंगलूरु -560 001
To,
The Assistant Director/ O. L
Office of the Principal Director of Audit (Central),
Karnataka, Bengaluru-560 001

डाक / TAPPAL
10 OCT 2025
TPRS No-418

विषय: कार्यालयीन वार्षिक गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'आशीर्वाद' के 38वें अंक की ई-प्रति** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- मानसिक स्वास्थ्य, भारत में शिक्षा, हिमालय की गोद में पाँच दिन, मिथिला-एक परिचय, दुलारी बेटी, महिला जीवन तथा कायर राजा आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

07.10.25
सहायक निदेशक (राजभाषा)/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1159040/2025 दिनांक:10-10-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय),
बेंगलूरु-560001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" का 38वां अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्र. सं	रचनाकार	रचनाएँ
1	सुश्री प्रियंका संजीव सिंह	कोशिश
2	श्री मयंक कुमार	खाली दिमाग एक रचनात्मक ज़रूरत
3	श्री शिव शंकर	एक जीवन कई पड़ाव: बचपन, संघर्ष और संतोष की कहानी
4	श्री कुमार अग्निवेश	भारत में शिक्षा: प्राचीन से नई शिक्षा नीति2020 तक का सफर
5	श्रीमती प्रीति कुमारी	भारत में महिला सशक्तिकरण: किए जा रहे प्रयास एवं चुनौतियाँ
6	श्री प्रसाद पी. जोशी	नदी-जीवन की धारा

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

EKTA
सहायक निदेशक(राजभाषा)

Digitally signed by Ekta
Date: 10-10-2025 11:45:36

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
Office of the Director General of Audit (Central Expenditure)
डी जी ए सी आर भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–110 002
DGACR Building, Indraprastha Estate, New Delhi -110 002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/659 **दिनांक: 12.01.2026**

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
बेंगलुरु, कर्नाटक – 560 001

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 38वें अंक के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 30/09/2025 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका **"आशीर्वाद"** के 38वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री प्रियंका संजीव सिंह की "कोशिश", श्री कुमार अग्निवेश का "भारत में शिक्षा: प्राचीन से नई शिक्षा नीति 2020 तक का सफ़र", श्री मयंक कुमार 'मयंक' का "खाली दिमाग-एक रचनात्मक जरुरत", बहुत ही रोचक कहानी एवं ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री गजे सिंह 'अंजाना' की "नारी तुम अबला नहीं", सुश्री रेजीना जॉर्ज की "कटाक्ष", एवं सुश्री रश्मिराज की "नारी-एक शब्द" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

पूजा 12/1/26
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Ph. : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271
e-mail : dgace@cag.gov.in
Website: https://cag.gov.in/cen/new-delhi-iii/ten

एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/421 दिनांक 14.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
बेंगलूरु - 560 001.

विषय:- वार्षिक गृह पत्रिका - **'आशीर्वाद'** के 38वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. प्र.नि.ले.प.(कें.)/राभा.अ./हि.प.आ./2025-26/139 दिनांक 30.09.2025 द्वारा आपके कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका - 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के समस्त लेख/रचनाएं प्रशंसनीय है, विशेष रूप से निम्नलिखित लेख :-

कोशिश	सुश्री प्रियंका संजीव सिंह
यूपीएस-एनपीएस और मेरी कहानी	श्री रवि प्रकाश
खाली दिमाग एक रचनात्मक ज़रूरत	श्री मयंक कुमार
एक जीवन, कई पड़ाव: बचपन, संघर्ष और संतोष की कहानी	श्री शिव शंकर
महिला जीवन माँ	श्रीमती साधना सिंह
नारी.... एक शब्द??	श्रीमती रश्मि राज
तिरंगे को झुकने नहीं दूँगा	श्री गजे सिंह 'अंजाना'

आपके कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका - **'आशीर्वाद'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

Admin/HindiCell/SammatiseSambandhit/

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्य प्रदेश

ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/जावक- दिनांक:09-01-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, बैंगलूरु,

कर्नाटक, बैंगलूरु

विषय – हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक हैं । पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद । सुश्री प्रियंका संजीव सिंह द्वारा लिखित लेख 'कोशिश', श्री ओम कुमार अड़लक द्वारा लिखित लेख 'हिमालय की गोद में पांच दिन' सराहनीय है । पद्य खंड में श्री अमित मोहन झा द्वारा रचित कविता 'सच का होगा क्रूर श्राद्ध', श्री संजीव चन्द्र पाठक द्वारा रचित कविता 'चुनाव' एवं श्री प्रसाद पी जोशी द्वारा रचित कविता 'नदी-जीवन की धारा' प्रशंसनीय है । शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं ।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

MANISH KUMAR

सहायक निदेशक (राजभाषा)

18/11/2025, 10:28 Fwd: Re: [Cag-all-users] आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

के आगामी अंकों में यथोचित सुधार कर पत्रिका को और भी अधिक उत्कृष्ट एवं समृद्ध बनाया जा सके।

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II MAHARASHTRA

Ph: 0712-2565161-67 / Fax: 0712 – 2560484

Email: agaeMaharashtra2@cag.gov.in

Web: https://cag.gov.in/ae/nagpur/en

Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Cag-all-users mailing list -- cag-all-users@lsmgr.nic.in

सं. राजभाषा/प्र.प/2025-26 जा.क्र-49 दिनांक- 13/11/2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय

कर्नाटक, बैंगलूरु

1 Attachment(s)

आशीर्वाद-प्रशंसा पत्र.pdf

विषयः आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद के 38वें अंक" हेतु प्रतिभाव पत्र संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद के 38वें अंक" की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारो को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। इस अंक में प्रकाशित कुछ विशेष रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

क्र.सं.	रचनाएँ	रचनाकार (श्री/श्रीमती/सुश्री)
1.	चुनाव	संजीव चंद्र पाठक
2.	कटाक्ष	रेजीना जॉर्ज
3.	तिरंगे को झुकने नहीं दूँगा	गजे सिंह 'अंजाना'
4.	कोशिश	प्रियंका संजीव सिंह
5.	मानसिक स्वास्थ्य	आरती प्रिया दर्शनी
6.	महिला जीवन	साधना सिंह
7.	लक्ष्य निर्धारण का महत्व	मयंक कुमार 'मयंक'

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

about:blank 2/2

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्याः हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/216 दिनांकः 23/10/2025

सेवा में,

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,

कर्नाटक, बैंगलूरु,

पिन - 560 001

विषयः पत्रिका के 38 वाँ अंक की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका **'आशीर्वाद'** की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीय,

23/10/25

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

19/12/2025, 09:45 Fwd: वार्षिक गृह हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

Fwd: वार्षिक गृह हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

EDP Cell PDA C Bengaluru < edpcellpdac.kar1.au@cag.gov.in >

Thu, 18 Dec 2025 4:57:13 PM +0530

To "राजभाषा अनुभाग प्र.नि.लेप.(कें.) बेंगलूरु"<hindicellpdc.kar1.au@cag.gov.in>

============ Forwarded message ============
From: MOUSUMI CHOUDHARY <mousumic.asm.au@cag.gov.in>
To: "EDP Cell PDA C Bengaluru"<edpcellpdac.kar1.au@cag.gov.in>
Date: Thu, 18 Dec 2025 15:03:10 +0530
Subject: वार्षिक गृह हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।
============ Forwarded message ============

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा) ,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) कार्यालय,
बेंगलुरु

विषय: वार्षिक गृह हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के ३८वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदया,

प्रधान महालेखाकार (लेप-II), प्रधान महालेखाकार (लेप-I) एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बेंगलुरु के कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के ३८वें अंक की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिकाओं में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

'आशीर्वाद' पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
OFFICE of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172- 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/फा-10/2025-26/ दिनांक: /10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बेंगलूरु,
ऑडिट भवन: बी. ब्लॉक, पहला माला, डाक थैली संख्या -5398.
बेंगलूरु - 560001

विषय: वार्षिक गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की पावती प्रेषित करने संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'आशीर्वाद'** के 38वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री रवि प्रकाश, स.ले.प. अधिकारी की रचना **'यूपीएस-एनपीएस और मेरी कहानी'**, सुश्री साधना सिंह, व. लेखापरीक्षक की रचना **'माँ'** तथा श्री मयंक कुमार 'मयंक' लेखापरीक्षक की रचना **'लक्ष्य निर्धारण'** विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 06-10-2025
09:09:07
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu ई-मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफ़ोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.I./2025-26/17603 दिनांक: 10.10.2025

सेवा मे, सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, बेंगलूरु ऑडिट भवन, बी- ब्लॉक, प्रथम तल, कर्नाटक बेंगलूरु-560001	To, Assistant Director (Official Language), Office of the Principal Director of Audit (Central), Bengaluru Audit Bhavan, B-Block, First Floor, Karnataka Bengaluru-560001

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र - संबंधी

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेप.-II), प्रधान महालेखाकार (लेप.-I) एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) के कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका हेतु हृदय से आभार। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं उच्च स्तर की हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका जैसे "कोशिश", "यूपीएस एनपीएस और मेरी कहानी", "मानसिक स्वास्थ्य", "खाली दिमाग एक रचनात्मक जरुरत", "हिमालय की गोद में पाँच दिन", "मिथिला एक परिचय", "एक जीवन, कई पड़ाव: बचपन, संघर्ष और संतोष की कहानी" हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। 'आशीर्वाद' पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग,
कार्यालय: प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, वित्त व संचार दिल्ली
शाखा: वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय
बसवा भवन, दूसरा तल, बसवेश्वरा सर्किल, बेंगलूरु-560001
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT, FINANCE AND COMMUNICATIONS DELHI
BRANCH: FINANCE AND COMMUNICATIONS AUDIT OFFICE
BASAVA BHAVAN, BASAVA CIRCLE, BENGALURU-560001
(ईमेल : bgpbangalore@cag.gov.in, फोन -९१ -०८० -२२२ ६२३४१)
(Email: bgpbangalore@cag.gov.in, Phone: +91-080-22262341)
सत्यमेव जयते

सं.हि.क./हि.पत्रि.पा./2025-26/88 दिनांक: 30.10.2025

सेवा में
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय कर्नाटक,
बेंगलूरु- 560001

विषय: वार्षिक गृह पत्रिका *'आशीर्वाद'* के 38वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली वार्षिक गृह पत्रिका *'आशीर्वाद'* के 38वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत सुंदर और मनमोहक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेषकर श्री मयंक कुमार 'मयंक' जी का लेख *'खाली दिमाग- एक रचनात्मक जरूरत'*, श्री संजीव चंद्र पाठक का लेख "मिथिला- एक परिचय", *सुश्री आरती प्रिया दर्शनी का लेख 'छठ पूजा: आस्था, समर्पण और प्रकृति का पर्व'*, श्री गजे सिंह 'अंजान' की कविता *'नारी तुम अबला नहीं'*, तथा श्री प्रसाद पी. जोशी की कविता *'नदी- जीवन की धारा'* रचनाएँ।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 30-10-2025
16:08:03
सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

पत्रांक: रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका-पावती/2025-26/148 दिनांक:15-10-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (रा.भा.)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, बेंगलूरु
पिन- 560 001.

विषयः हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 38वें अंक की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र संख्या- प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./हिं.प.आ./2025-26/139, दिनांक- 30.09.2025 के साथ हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 38वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है।

सर्वप्रथम पत्रिका के मुख्य पुष्ठ को बया पक्षी से सुशोभित करने एवं इसके विशेष वर्णन के लिए बहुत धन्यवाद। साथ ही अभिव्यक्ति में प्रथम स्थान प्राप्त करने हेतु श्री गिरजेश कु. कोठीवाला को अशेष बधाई। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है, विशेषकर श्री रवि प्रकाश का "यूपीएस-एनपीएस और मेरी कहानी", श्री प्रसाद पी. जोशी द्वारा लिखित "डिजिटल युग में नैतिकता की भूमिका", सुश्री प्रीति कुमारी द्वारा रचित "भारत में महिला सशक्तिकरण", श्रीमती साधना सिंह की रचना "महिला जीवन" और रेंजीना जॉर्ज की "कटाक्ष" इत्यादि।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 15-10-2025
17:18:59
सहायक निदेशक (रा.भा.)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

---

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI-752003

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/80 दिनांक:- 09.10.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
बेंगलुरु

विषय : वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 38वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपकी वार्षिक हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद" के 38वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"आशीर्वाद" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "मिथिला-एक परिचय", "दुलारी बेटी", "सच का होगा क्रूर श्राद्ध" और "तिरंगा को झुकने नहीं दूँगा" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

हिंदी दिवस 2026 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

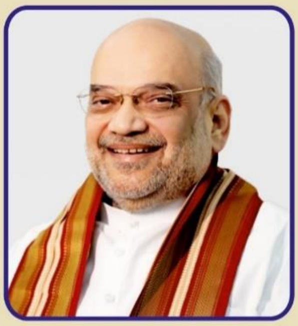

प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन–दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक–संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन–जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत **'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण** का भी विशेष अवसर है। आज जब देश **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय **शासन को जनसामान्य के अधिक निकट** लाने, **लोक–संवाद को सशक्त** करने और **भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त** करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का **'विकास भी, विरासत भी'** का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। **इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।**

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित **'भारतीय भाषा अनुभाग'** केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला **'हिंदी शब्द सिंधु'** डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द–संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान–साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान–विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान–निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2026

(अमित शाह)

संदेश

कार्यालयीन संयुक्त वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 39 वें अंक का प्रकाशन तीनों कार्यालयों के संयुक्त प्रयास का सफल परिणाम है। राजभाषा के रूप में हिंदी भाषाई विविधता को दूर करते हुए विचारों, भावनाओं एवं अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों में एकरूपता स्थापित कर रही है। बस आवश्यकता है उसके इन प्रयासों को सजगता से आगे बढ़ाया जाए और इसी क्रम में 'आशीर्वाद' एक कड़ी की भूमिका निभा रही है।

तीनों कार्यालयों की संयुक्त साहित्यिक रचनाशीलता एवं कलात्मक सहभागिता ने 'आशीर्वाद' के 39 वें अंक को सुधी पाठकों तक पहुँचाया है। आशा है कि पत्रिका से जुड़े अपने विचारों को आप अवश्य साझा करेंगे।

'आशीर्वाद' के 39 वें अंक के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल सहित सभी रचनाकारों एवं कार्यालय परिवार को सहर्ष बधाई एवं शुभकामनाएं।

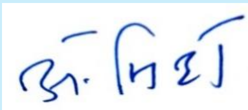

(अशोक सिन्हा)
प्रधान महालेखाकार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 39 वें अंक के माध्यम से आप सभी रचनाकारों की रोचक एवं सुंदर रचनाओं के योगदान से मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी न केवल भारत की पहचान और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है बल्कि यह वैश्विक मंच पर भी अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रही है। भाषा स्वयं में एक बहते हुए नीर की तरह है जितनी अधिक प्रयोग होगी उतनी ही अधिक समृद्ध होगी क्योंकि समृद्ध भाषा समृद्ध राष्ट्र की परिचायक होती है।

किसी भी सरकारी कार्यालय की पत्रिका केवल कार्यालयीन गतिविधियों के साथ-साथ अधिकारियों व कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरूचि को अभिव्यक्त करने का माध्यम ही नहीं है बल्कि उनमें लेखन प्रतिभा को खोजने का अवसर भी प्रदान करती है। इस संदर्भ में, कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 39वें अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

मैं 'आशीर्वाद' पत्रिका के इस अंक से जुड़े संपादक मंडल के सभी सदस्यों, लेखकों और योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि 'आशीर्वाद' पत्रिका का यह अंक भी पूर्व अंकों की भांति सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा तथा राजभाषा हिंदी के विकास में सकारात्मक योगदान देगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

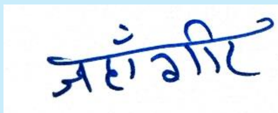

(जहाँगीर इनामदार)
महालेखाकार
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'आशीर्वाद' पत्रिका के 39वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे कार्यालय की सृजनात्मक अभिव्यक्ति, ज्ञान-साझाकरण तथा राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है ।

इस अंक में इस कार्यालय के कार्मिकों की साहित्यिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों को समाहित किया गया है । मुझे विश्वास है कि इसमें प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण, विचार एवं अन्य रचनाएँ पाठकों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उन्हें प्रेरित भी करेगी । राजभाषा हिंदी का प्रभावी प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ बनाने का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है । 'आशीर्वाद' पत्रिका इस दिशा में निरंतर सार्थक भूमिका निभा रही है और कार्यालय में हिंदी के प्रति जागरूकता एवं सृजनशीलता को प्रोत्साहित कर रही है ।

पत्रिका के संपादक मंडल तथा इसके प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। साथ ही, आशा करता हूँ कि 'आशीर्वाद' पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट सामग्री के साथ निरंतर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होती रहेगी

'आशीर्वाद' पत्रिका के 39वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

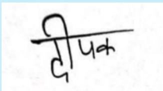

(दीपक मैथ्यूज़)
प्रधान निदेशक
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

"विचार जब शब्दों का रूप लेते हैं, तब साहित्य जन्म लेता है; और जब साहित्य समाज से जुड़ता है, तब संस्कृति समृद्ध होती है। शब्द समय के क्षणभंगुर प्रवाह को शाश्वत स्मृति में रूपांतरित करने की अद्वितीय क्षमता रखते हैं।"

हमारे तीनों कार्यालयों की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 39वें अंक का प्रकाशन एवं विमोचन केवल एक वार्षिक परंपरा का निर्वहन नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक बौद्धिक चेतना, सृजनात्मक अवबोध, सांस्कृतिक उत्तरदायित्व तथा राजभाषा हिंदी के प्रति संस्थागत प्रतिबद्धता का सशक्त दस्तावेज है। कार्यालय केवल प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन के केंद्र नहीं होते; वे विचार, संवाद और मानवीय मूल्यों के संवाहक भी होते हैं। 'आशीर्वाद' इसी आदर्श का मूर्त रूप है, जो कार्यालयीन जीवन को साहित्यिक गरिमा एवं सांस्कृतिक विमर्श से समृद्ध करता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'आशीर्वाद' का यह 39वाँ अंक अपने वैचारिक वैभव, साहित्यिक उत्कृष्टता एवं बहुआयामी विषय-वस्तु के माध्यम से पाठकों को प्रेरित करेगा तथा राजभाषा के संवर्धन और ज्ञान-संस्कृति के सतत् विकास में सार्थक योगदान देगा।

मैं संपादक मंडल, राजभाषा अनुभाग एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की सतत उन्नति एवं व्यापक लोकप्रियता की मंगलकामना करता हूँ।

(सुब्बैय्या)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

संपादक की कलम से

भाषा एक ऐसा माध्यम है, जिसमें संस्कृति, संस्कार और सामाजिक बोध का प्रकटीकरण होता है। वास्तव में सृष्टि सृजन के बाद मानव समाज के लिए भाषा का आविष्कार एक महानतम उपलब्धि है। मनुष्य का निर्माण केवल रक्त, मांस, मज्जा और अस्थियों से ही नहीं होता है, बल्कि मनुष्यों में सूक्ष्म संस्कारों, संवेदनाओं, अनुभूतियों, पारस्परिक व्यवहार और सांस्कृतिक संकेतों से होता है। वरना मनुष्य और पशु में कुछ अंतर ही नहीं रह जाएगा। इसलिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है कि-

**"जिसको न निज भाषा, गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर- पशु निरा है और मृतक समान है।।"**

भाषा मनुष्य के संस्कारों, संवेदनाओं और सांस्कृतिक अनुशासन का दर्पण होती है। भारतीय चिंतन में मनीषी ऋषियों ने शब्द को 'ब्रह्म' और वाणी को 'सरस्वती' का पर्याय माना है, इसके पीछे उनकी गहरी मनोवैज्ञानिक समझ थी, वे जानते थे कि मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा बोलता है और जैसा बोलता है वैसा ही उसका धीरे- धीरे चरित्र और स्वभाव बनता जाता है। भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति ही नहीं है बल्कि वह व्यक्तित्व निर्माण भी करती है। इसलिए सभ्यता का विकास उचित शब्दों के चयन और वाणी के अनुशासन से सृजित साहित्य से होता है। अतः साहित्य सृजन भी एक धर्म है। साहित्य संवेदना, कल्पना, अनुभूतियों और विचारों का संवाहक भी है। इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। जैसा साहित्य में लिखा जाता है, वैसा समाज में परिलक्षित होता है। ऐसे में किसी भी साहित्यकार का यह कर्तव्य होता है कि वह शाश्वत चिंतन कर कालजयी और सकारात्मक साहित्य का सृजन करे जिससे देश और समाज का हित हो। ऐसे साहित्य से जनकल्याण और लोकोपयोगी भावना पनपती है। यह स्वांतः सुखाय का ही न होकर कर्त्तव्य बोध सहित सर्वजन हिताय के उद्देश्य को भी पूरा करता है। इसलिए महाराज भर्तृहरि ने 'नीतिशतक' में लिखा है कि-

***साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥***

इन्हीं सब उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हमारे तीनों कार्यालयों की संयुक्त हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 39 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका का संपादक बनने का गौरव प्राप्त होने से मन अत्यंत प्रफुल्लित है और इसमें कार्यालय के अधिकारियों द्वारा उनकी अपनी सृजनशीलता को कलमबद्ध करके रचनाओं की जो शृंखला बनाई गई है, वह काबिले तारीफ़ है। इन रचनाओं में रचनाकारों की रचनाधर्मिता प्रस्फुटित हो रही है। यह भी गर्व का विषय है कि हिंदीतर राज्य में लगातार 39 वर्षों से कार्यालयीन पत्रिका निर्बाध गति से प्रकाशित हो रही है। इसके लिए मेरी तरफ से सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित हैं। इसके साथ सभी कार्यालय अध्यक्षों के निरंतर सहयोग, प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए हृदयतल से आभार व धन्यवाद व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रकाशन संबंधी व्यय आदि के व्यय में खुले मन से समर्थन किया।

अंत में सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका में निहित सामग्री व रचनाएं पढ़कर इसके गुणदोष की विवेचना करते हुए अपनी प्रतिक्रिया साझा करें, जिससे भविष्य में इसको और अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

धन्यवाद

(देव प्रकाश गुप्ता)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

अनुक्रमणिका

क्र. स.	शीर्षक	रचनाकार (सर्व श्री/ सुश्री)	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	अगर पेड़ बोल सकते	अपूर्वा मिश्रा (सुपुत्री- आरती प्रियादर्शिनी)	लेख	1
2.	सशक्त महिलाएं कार्यस्थल को सशक्त बनाती हैं	आर. जे. विजयलक्ष्मी	लेख	2-5
3.	खोए हुए प्रमाणपत्र	शिव शंकर	कहानी	6-10
4.	मिथिला विवाह की परम्पराएं	आरती प्रिया दर्शिनी	लेख	11-13
5.	कुत्ता- एक आम बेजुबां की ख़ास दास्तां	नेहा रानी	लेख	14-17
6.	साहसी मन	बीना थॉमस	कहानी	18-20
7.	सुबह का सपना: विश्व गुरु भारत अपना	नवनीत महेश्वरी	लेख	21-23
8.	मखाना	संजीव चंद्र पाठक	लेख	24-25
9.	निरंतरता	नीरज कुमार	लेख	26-27
10.	पहली भगवद्गीता	बि. एस. श्रीनाथ	कविता	28-29
11.	एटॉमिक हैबिट्स -छोटी आदतों की बड़ी शक्ति	प्रशांत शर्मा	समीक्षा	31-32
12.	भारत में नारियों की सुरक्षा	संजीव चंद्र पाठक	लेख	33-34
13.	सुख-दुःख (दादी माँ की कहानी)	ज्योत्स्ना (सुपुत्री- रंजन कुमार)	कहानी	35-37
14.	शांति का सच्चा मार्ग	रामनिवास तोमर	कविता	38-40
15.	कुछ नया हो जाए	सोनाक्षी सक्सेना	कहानी	41-42
16.	जीवन- एक पड़ाव	पंकज कुमार	कविता	43-46
17.	मेरी पहली हवाई यात्रा -दुबई की ओर	श्वेता यादव	यात्रावृत्तांत	47-50
18.	नई कार खरीदते समय एक लाख की बचत	विजय कुमार	लेख	51-52
19.	कार्यरत महिला- दो मोर्चों की विजेता	साधना सिंह	कहानी	53-56
20.	नजरिया जीवन जीने का	कमल नयन प्रसाद	कविता	57-58
21.	सच्ची दोस्ती	प्रसाद पी जोशी	कविता	60-61
22.	मेरा ब्लड ग्रुप ओ (ओम) पॉजिटिव	ओम कुमार अड़लक	कहानी	62-66
23.	पापा आप मेरी ताकत हो	काजल	लेख	67-68
24.	डॉ अंबेडकर का मजदूर और कर्मचारियों के लिए योगदान	रंजन कुमार	लेख	69-70
25.	याद आए मुझको माँ के हाथ	प्रशांत शर्मा	कविता	71-72
26.	वक्त की रेत हाथ से फिसलता जीवन	प्रसाद पी जोशी	लेख	75-77
27.	बिल्ली स्नोवी: एक डर और राहत	विजय कुमार	लेख	78-79
28.	जाने कहाँ गए वो दिन	आरती प्रिया दर्शिनी	लेख	80-81
29.	भागदौड़ में खोया जंगल	रामनिवास तोमर	कहानी	82-85
30.	माँ का निस्वार्थ प्यार	काजल	कविता	86-88
31.	भाग्यशाली कौन?	सोनाक्षी सक्सेना	कहानी	92-93
32.	प्राचीन हिंदी से आधुनिक हिंदी की विकास यात्रा	देव प्रकाश गुप्ता	लेख	94-98
33.	पुरानी घड़ी	नवनीत महेश्वरी	कविता	99-101
34.	आदि के संघर्ष से सफलता तक का सफर	बी राजू आदित्य	कहानी	102-105
35.	हिंदी दिवस ईमानदारी और उत्साह की कहानी	नीरज कुमार	लेख	106-107
36.	जीवटता	प्रियंका संजीव सिंह	कहानी	109-113
37.	हमें पढ़ना है	मुकेश अंबानी	कविता	114-115

<u>अगर पेड़ बोल सकते</u>

“अगर पेड़ बोल सकते तो क्या बोलते ? यह प्रश्न बहुतों के दिमाग में आता होगा। तो सुनो, कि हम सब पेड़ क्या कहना चाहते हैं?

इस पृथ्वी पर बहुत सारे पेड़ों को कुछ न कुछ आवश्यक कार्यों के लिये काटा जाता है, जैसे घर बनाने के लिये, मेरी लकड़ियों को जलाकर ठंड भगाने व ईंधन के लिए, फर्नीचर बनाने के लिए आदि। इससे मुझे कोई दिक्कत नहीं है। पर बहुत से लोग मुझे बेमतलब काटते हैं जैसे अपार्ट्मेंट्स और मॉल आदि के चारों ओर जगह बनाने लिए, पार्क बनाने के लिए आदि। उससे भी ज्यादा दुःख मुझे तब होता है जब लोग खाली पड़ी जमीनों पर काटे गए मेरे भाई बहनों के बदले में नये पेड़ नहीं लगातें हैं। इससे और भी ज्यादा प्रदूषण बढ़ता है, गर्मी बढ़ती है, वायु मे ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और कार्बन डाई ऑक्साईड जैसे खतरनाक गैसें बढ़ जाती हैं।

और हां, मैं ही तुम इंसानों को छाया और फल, फूल देता हूं। तुम्हारे बच्चों की किताबें, नोटबुक, इरेजर सब मुझसे ही बनतें हैं। तुम लोग मुझे बचाने के लिये ज़्यादा से ज़्यादा पेड़-पौधे लगा सकते हो। पर याद रखना, अगर तुम मुझे बर्बाद करते रहोगे तो आने वाली पीढियां और ये पूरी दुनिया नष्ट हो जाएगी। बस चारों ओर धूप ही धूप नज़र आएगी। मेरे बिना ना तो भोजन मिलेगा ना बादल बरसेंगे। तुम सब इस आपदा से बच नहीं पाओगे। इसलिए तुम लोग मुझे ज़्यादा मत काटो, मैं तुम लोगों से निवेदन करता हूं।“

................आपका प्यारा पेड़

सुश्री अपूर्वा मिश्रा
सुपुत्री- सुश्री आरती प्रिया दर्शिनी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

सशक्त महिलाएं कार्यस्थल को सशक्त बनाती हैं

आज की दुनिया में, सफल और प्रगतिशील कार्यस्थल बनाने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बहुत ज़रूरी है। जब महिलाओं को बराबरी से हिस्सा लेने और लीडरशिप की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो संगठनों को उनके विचारों, कौशल और नज़रिए से फ़ायदा होता है। सशक्त महिलाएं न केवल व्यक्तिगत विकास करती हैं, बल्कि ऐसे कार्यस्थल बनाने में भी मदद करती हैं जो समावेशी, रचनात्मक और उत्पादक हों।

इसका एक स्पष्ट उदाहरण हमारे अपने ऑफ़िस में देखा जा सकता है, जहाँ हमारी महिला प्रधान महालेखाकार ने एक उल्लेखनीय बदलाव किया। उनकी सोच और लीडरशिप ने काम के माहौल को सार्थक रूप से बदल दिया। ऑफ़िस परिसर में एक समय एक बेकार और इस्तेमाल न होने वाली जगह थी जिसे लंबे समय से नज़रअंदाज़ किया गया था। उसे बेकार पड़े रहने देने के बजाय, उन्होंने उसमें ऐसी जगह बनाने की संभावना देखी जो कर्मचारियों को एक साथ ला सके।

उनके प्रोत्साहन से, ऑफ़िस के अलग-अलग विभागों के कर्मचारी उस जगह पर एक जीवंत और रंगीन एम्फीथिएटर बनाने के लिए एक साथ आए। इस पहल को और भी खास बनाने वाली बात यह थी कि इसे कर्मचारियों ने खुद अपने हाथों से पेंट किया था। सभी ने अपने-अपने तरीके से योगदान दिया, कुछ

ने चमकीले पैटर्न और डिज़ाइन बनाए, जबकि दूसरों ने उस जगह को व्यवस्थित और सजाने में मदद की। इस सामूहिक प्रयास ने कर्मचारियों के बीच उत्साह, जोश और टीमवर्क की मज़बूत भावना पैदा की।

धीरे-धीरे, वह बेकार पड़ी जगह एक जीवंत और स्वागत करने वाली मिलन-स्थल में बदल गई। एम्फीथिएटर में अलग-अलग मौकों पर कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम और उत्सव आयोजित होने लगे। संगीत, नृत्य और छोटे-मोटे प्रदर्शन ऑफ़िस जीवन का हिस्सा बन गए, जिससे कर्मचारियों को आराम करने, अपनी प्रतिभा दिखाने और अलग-अलग विभागों के सहयोगियों के साथ बातचीत करने का मौका मिला। इन कार्यक्रमों ने कर्मचारियों के बीच रिश्तों को मज़बूत किया और कार्यस्थल में एकता और समुदाय की भावना पैदा की।

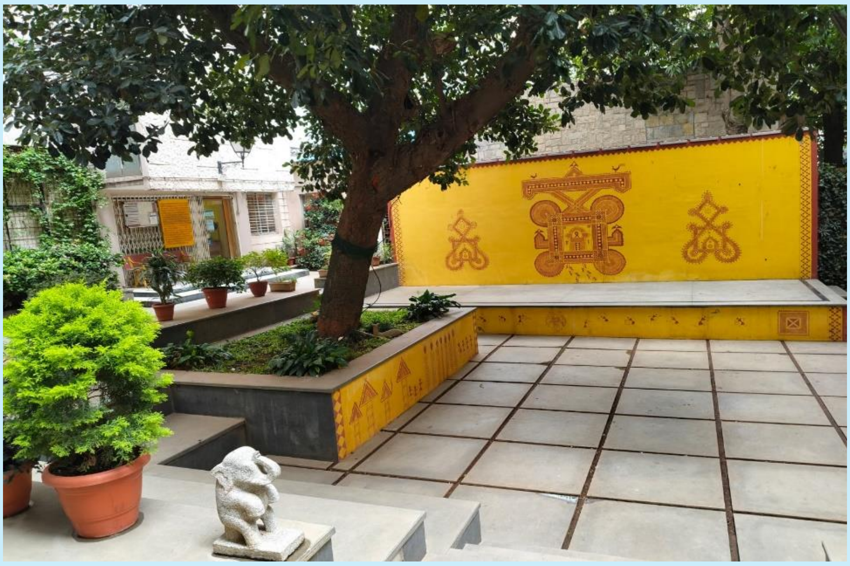

सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के अलावा, हमारी प्रधान महालेखाकार ने कर्मचारियों की भलाई पर भी ध्यान दिया। उत्पादकता बनाए रखने और तनाव कम करने में शारीरिक स्वास्थ्य के महत्व को समझते हुए, उन्होंने ऑफ़िस परिसर में एक जिम बनाने की पहल की। जिम जल्द ही एक लोकप्रिय सुविधा बन गया जहाँ कर्मचारी व्यायाम कर सकते हैं, फ़िट रह सकते हैं और लंबे समय तक काम करने के बाद तरोताज़ा हो सकते हैं। यह पहल न केवल पेशेवर उत्कृष्टता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है, बल्कि कर्मचारियों की समग्र भलाई के प्रति भी उनके समर्पण को दिखाती है।

यह उदाहरण स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सशक्त महिलाएं कार्यस्थल में क्या योगदान देती हैं। सशक्त महिलाएं आत्मविश्वासी, कुशल और लीडरशिप की भूमिका निभाने में सक्षम होती हैं। उनकी मौजूदगी समानता को बढ़ावा देती है और एक ऐसा गतिशील, संतुलित और प्रगतिशील काम का माहौल बनाने में मदद करती है जहाँ कर्मचारी अपने विचार और राय बताने में सुरक्षित महसूस करते हैं। वे सोच में विविधता के ज़रिए अलग-अलग नज़रिए लाती हैं, जिससे अक्सर नए और बेहतर समाधान निकलते हैं और बेहतर फ़ैसले लिए जाते हैं।

जब पुरुष और महिलाएँ दोनों चर्चाओं और लीडरशिप की भूमिकाओं में बराबर हिस्सा लेते हैं, तो काम की जगह ज़्यादा संतुलित और रचनात्मक बन जाती है। सशक्त महिलाएँ अक्सर मज़बूत संगठनात्मक कौशल, इमोशनल इंटेलिजेंस और मुश्किलों का सामना करने की क्षमता दिखाती हैं। ये गुण संगठनों में टीमवर्क, बातचीत और समस्या-समाधान को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। उनकी लीडरशिप शैली अक्सर कर्मचारियों के बीच समावेशिता, निष्पक्षता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देती है।

सशक्त महिलाएँ दूसरों को, ख़ासकर काम की जगह पर युवा महिलाओं को प्रेरित करती हैं। महिलाओं को लीडरशिप की भूमिकाओं में देखकर दूसरे भी अपनी क्षमताओं पर भरोसा करने और अपने लक्ष्यों को पाने के लिए प्रेरित होते हैं। इससे पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़ने और पेशेवर क्षेत्रों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। एक और महत्वपूर्ण असर आर्थिक विकास है। अध्ययनों से पता चला है कि जिन कंपनियों में लैंगिक रूप से विविध लीडरशिप होती है, वे अक्सर आर्थिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करती हैं।

निष्कर्ष के तौर पर, सशक्त महिलाएँ काम की जगह पर लीडरशिप, सहानुभूति, रचनात्मकता और इनोवेशन लाती हैं। उनका योगदान समानता, सहयोग और प्रगति की संस्कृति बनाने में मदद करता है। हमारी महिला प्रधान महालेखाकार का उदाहरण दिखाता है कि कैसे सशक्त लीडरशिप लोगों को एक साथ लाकर, भलाई को बढ़ावा देकर और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करके काम की जगह को बदल सकती है। महिलाओं का समर्थन और उन्हें सशक्त बनाकर, संगठन मज़बूत और ज़्यादा समावेशी बनते हैं और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होते हैं।

सुश्री आर.जे.विजयलक्ष्मी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

<u>खोए हुए प्रमाणपत्र</u>

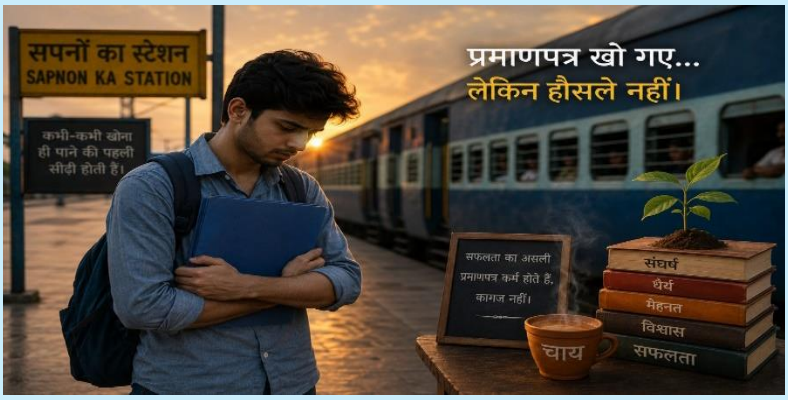

"मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान उसके प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि उसके कर्म होते हैं। कागज़ केवल योग्यता का प्रमाण देते हैं, जबकि चरित्र जीवन का परिचय देता है।"

उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में रवि नाम का एक युवक रहता था। उसका घर कच्चा था, लेकिन उसके सपने बहुत बड़े थे। पिता दिहाड़ी मजदूर थे और माँ गाँव के घरों में सिलाई का काम करके परिवार चलाने में उनका हाथ बँटाती थीं। आर्थिक तंगी इतनी थी कि कई बार घर में दो वक्त का भोजन भी मुश्किल से बन पाता था। फिर भी उसके माता-पिता ने कभी उसे पढ़ाई छोड़ने नहीं दी।

रवि बचपन से ही मेधावी था। वह अक्सर गाँव के पुस्तकालय में बैठकर घंटों पढ़ता रहता। जब घर में बिजली नहीं होती, तो वह सड़क के किनारे लगे बिजली के खंभे की रोशनी में अपनी किताबें खोलकर बैठ जाता। गाँव के लोग उसे देखकर मुस्कुराते और कहते–

“इतनी पढ़ाई करके क्या करेगा? आखिर मजदूर का बेटा मजदूर ही बनेगा।”

रवि केवल मुस्कुरा देता। उसे विश्वास था कि शिक्षा ही उसके जीवन को बदल सकती है। उसकी माँ अक्सर कहा करती थीं– **"बेटा, परिस्थितियाँ मनुष्य की परीक्षा लेती हैं, लेकिन उसका साहस उसका परिणाम तय करता है।"** यह वाक्य रवि के जीवन का मंत्र बन गया।

वर्षों की कठिन मेहनत के बाद उसने दसवीं, बारहवीं और स्नातक की परीक्षा उत्कृष्ट अंकों से उत्तीर्ण की। उसके सभी प्रमाणपत्र एक नीली फाइल में बड़े सलीके से रखे हुए थे। वह फाइल उसके लिए किसी खजाने से कम नहीं थी, क्योंकि उसमें केवल कागज़ नहीं थे, बल्कि उसके संघर्ष, त्याग और सपनों की कहानी छिपी थी।

एक दिन उसे एक प्रतिष्ठित निजी कंपनी से साक्षात्कार का बुलावा आया। घर में वर्षों बाद खुशियों का माहौल था। माँ ने भगवान के सामने दीपक जलाया और पिता ने पहली बार बेटे के भविष्य के बारे में खुलकर बातें कीं। साक्षात्कार वाले दिन माँ ने उसके माथे पर तिलक लगाते हुए कहा–

"जाओ बेटा, भगवान तुम्हें सफलता दे। लेकिन याद रखना, जीवन में कभी ईमानदारी मत छोड़ना।"

रवि ने उनके चरण छुए और अपनी नीली फाइल सीने से लगाकर ट्रेन में बैठ गया।

पूरे रास्ते वह भविष्य के सपने बुनता रहा। वह सोच रहा था कि नौकरी मिलते ही सबसे पहले घर की टूटी छत ठीक करवाएगा, फिर पिता को मजदूरी से मुक्त करेगा और बहन की पढ़ाई पूरी करवाएगा। लेकिन नियति ने उसके लिए कुछ और ही तय कर रखा था। शहर का स्टेशन आते ही यात्रियों की भारी भीड़ ट्रेन से उतरने लगी। धक्का-मुक्की में रवि भी जल्दी-जल्दी नीचे उतर गया। प्लेटफॉर्म पर पहुँचकर उसने जैसे ही अपने हाथ की ओर देखा, उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। उसके हाथ में बैग था... लेकिन नीली फाइल नहीं थी। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। वह पागलों की तरह वापस ट्रेन की ओर दौड़ा।

"रुको...! मेरी फाइल...! कोई ट्रेन रोकिए..."

लेकिन ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफॉर्म छोड़ चुकी थी।

कुछ ही क्षणों में वह उसकी आँखों से ओझल हो गई। रवि देर तक प्लेटफॉर्म पर खड़ा रहा। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वर्षों की मेहनत कुछ ही मिनटों में उससे बिछड़ गई थी। उसने रेलवे पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। स्टेशन मास्टर से मिला। खोया-पाया विभाग में आवेदन दिया। घंटों तलाश की, लेकिन फाइल कहीं नहीं मिली।

शाम तक वह पूरी तरह टूट चुका था। वह स्टेशन की बेंच पर बैठकर रोने लगा। उसे लग रहा था कि उसके सारे सपने उसी ट्रेन के साथ चले गए हैं।

"जीवन में कुछ क्षण ऐसे आते हैं, जब मनुष्य को लगता है कि अब सब समाप्त हो गया है। लेकिन अक्सर वही क्षण उसकी नई शुरुआत बनते हैं।"

रात को जब वह घर पहुँचा तो माँ दरवाजे पर उसका इंतजार कर रही थीं। उन्होंने मुस्कुराकर पूछा– "कैसा रहा इंटरव्यू?" रवि कुछ नहीं बोला। उसने खाली हाथ आगे कर दिए। माँ सब समझ गईं। रवि फूट-फूटकर रो पड़ा।

"माँ... मेरे सारे प्रमाणपत्र खो गए। अब मेरा क्या होगा?" माँ ने उसके आँसू पोंछे और उसे अपने पास बैठाकर बोलीं– "बेटा, क्या तुम्हारे प्रमाणपत्रों के साथ तुम्हारा ज्ञान भी खो गया?"

रवि ने धीरे से सिर हिलाया– "नहीं..."

"क्या तुम्हारी मेहनत खत्म हो गई?" "नहीं..."

"क्या तुम्हारी ईमानदारी खो गई?" "नहीं..."

माँ मुस्कुराईं। "तो फिर घबराते क्यों हो? कागज़ खोए हैं, तुम्हारी योग्यता नहीं।"

कुछ क्षण रुककर उन्होंने कहा–

"पेड़ अपने पत्ते खो देता है, लेकिन अपनी जड़ों के सहारे फिर हरा हो जाता है। तुम्हारे प्रमाणपत्र पत्ते थे, तुम्हारा ज्ञान तुम्हारी जड़ है।"

माँ की बातें रवि के मन में उतरती चली गईं। उस रात उसने बहुत सोचा। सुबह जब सूरज निकला तो उसने एक निर्णय लिया। वह अब नौकरी के पीछे नहीं भागेगा। वह ऐसा काम करेगा, जिसमें

एक दिन दूसरों को रोजगार दे सके। घर में पैसे नहीं थे। माँ ने अपनी शादी की चाँदी की पायल उतारकर उसके हाथ में रख दी। रवि की आँखें भर आईं। "माँ, यह मत बेचिए।"

माँ ने मुस्कुराते हुए कहा–

"गहने पहनने के लिए होते हैं, लेकिन यदि वे बेटे का भविष्य बना दें, तो उनका मूल्य और बढ़ जाता है।"

रवि ने माँ का हाथ पकड़ लिया। उस दिन उसने मन-ही-मन एक संकल्प लिया–

"अब मेरी पहचान किसी कागज़ से नहीं, मेरे कर्मों से होगी।"

कुछ दिनों बाद शहर के बस अड्डे के पास एक छोटा-सा चाय का ठेला दिखाई दिया। उस पर लिखा था–

"रवि टी स्टॉल - एक प्याली चाय, ढेर सारा अपनापन।"

लोग उसका मज़ाक उड़ाते। "इतनी पढ़ाई करके चाय बेच रहा है!" "डिग्री का यही उपयोग होना था?" रवि केवल मुस्कुरा देता। उसे अब किसी को जवाब देने की आवश्यकता नहीं थी। उसे पता था कि समय स्वयं उसकी ओर से उत्तर देगा।

रवि ने अपने छोटे-से चाय के ठेले को केवल रोज़गार का साधन नहीं बनाया, बल्कि उसे अपनी ईमानदारी और मेहनत का प्रतीक बना दिया। वह हर ग्राहक का मुस्कुराकर स्वागत करता। उसकी चाय में केवल स्वाद ही नहीं, अपनापन भी होता था। धीरे-धीरे लोग उसकी दुकान पर केवल चाय पीने नहीं, बल्कि उससे मिलने आने लगे। वह अक्सर कहता था–

"व्यापार में सबसे बड़ा लाभ पैसा नहीं, विश्वास होता है। जिस दिन लोग आप पर भरोसा करने लगें, समझिए सफलता आपके द्वार पर खड़ी है।"

एक दिन एक वृद्ध व्यक्ति उसकी दुकान पर आए। उन्होंने चाय पी और कुछ देर तक रवि को ध्यान से देखते रहे। उन्होंने पूछा, "बेटा, तुम पढ़े-लिखे लगते हो।" रवि ने मुस्कुराकर अपनी पूरी कहानी सुना दी–गरीबी, पढ़ाई, ट्रेन में खोए प्रमाणपत्र और टूटा हुआ सपना। वृद्ध ने शांत स्वर में कहा–

"बेटा, तुम्हारे प्रमाणपत्र नहीं खोए, केवल कागज़ खोए हैं। असली प्रमाणपत्र तुम्हारी ईमानदारी, मेहनत और धैर्य हैं। इन्हें कोई चुरा नहीं सकता।"

फिर उन्होंने अपनी जेब से बरगद का एक छोटा-सा बीज निकालकर रवि की हथेली पर रखा। "जानते हो, यह बीज इतना छोटा होकर भी इतना विशाल वृक्ष कैसे बनता है?" रवि ने सिर हिला दिया। वृद्ध बोले–

"क्योंकि यह मिट्टी में दबने से घबराता नहीं। मनुष्य भी तब तक बड़ा नहीं बनता, जब तक वह कठिनाइयों की मिट्टी में दबकर धैर्य और संघर्ष का अंकुर नहीं बनता।"

उस दिन के बाद रवि ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसने अपने ठेले को एक छोटी-सी दुकान में बदला। फिर दुकान एक कैफ़े बनी। कुछ वर्षों बाद उसने स्थानीय किसानों से सीधे चाय, मसाले और अन्य खाद्य सामग्री खरीदनी शुरू की। इससे किसानों को उचित मूल्य मिलने लगा और ग्राहकों को

शुद्ध सामान। उसका व्यवसाय बढ़ता गया। धीरे-धीरे उसने एक छोटा खाद्य-प्रसंस्करण (फूड प्रोसेसिंग) उद्योग स्थापित किया।

फिर दूसरा...

फिर तीसरा...

कुछ ही वर्षों में उसकी कंपनी देश के कई राज्यों में अपने उत्पाद भेजने लगी। जिस युवक के पास कभी नौकरी नहीं थी, आज उसकी कंपनी में सैकड़ों लोग काम कर रहे थे। लोग कहते– "रवि जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने कर्मचारियों को कर्मचारी नहीं, परिवार का सदस्य मानते हैं।"

वह हमेशा उत्तर देता–

"जिस सफलता में दूसरों का सम्मान न हो, वह सफलता नहीं, केवल अहंकार है।"

समय बीतता गया। एक दिन देश के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय ने रवि को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। सभागार विद्यार्थियों से भरा हुआ था। रवि मंच पर पहुँचा। उसके हाथ में एक पुरानी नीली फाइल थी। वही रंग... जिसमें कभी उसके सारे प्रमाणपत्र थे। उसने फाइल खोलकर सभी को दिखाई। फाइल खाली थी। पूरा सभागार आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा। रवि मुस्कुराया और बोला– "आज से कई वर्ष पहले इसी रंग की फाइल में मेरे सारे शैक्षणिक प्रमाणपत्र थे। मैं नौकरी के साक्षात्कार के लिए जा रहा था। ट्रेन में यह फाइल खो गई। उस दिन मुझे लगा कि मेरा जीवन समाप्त हो गया है।" पूरा सभागार शांत था। फिर उसने पूछा–

"यदि आज आपके सारे प्रमाणपत्र खो जाएँ, तो क्या आपका ज्ञान भी खो जाएगा?"

कोई उत्तर नहीं दे पाया। रवि ने स्वयं कहा–

"ज्ञान दिमाग में रहता है, प्रमाणपत्र फाइल में। आत्मविश्वास हृदय में रहता है, कागज़ों में नहीं। यदि आपका आत्मविश्वास सुरक्षित है, तो दुनिया की कोई शक्ति आपको सफल होने से नहीं रोक सकती।"

तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा सभागार गूँज उठा। रवि ने आगे कहा–

"यदि उस दिन मेरे प्रमाणपत्र नहीं खोते, तो शायद मैं किसी कंपनी में नौकरी कर रहा होता। आज मैं उन युवाओं को रोजगार दे रहा हूँ, जिनके हाथों में कभी मेरी तरह सपने थे।" उसकी आँखें नम हो गईं। उसने धीरे से कहा–

"कभी-कभी भगवान हमारी इच्छाएँ पूरी नहीं करते, क्योंकि उन्होंने हमारे लिए उससे कहीं बड़ा भविष्य चुन रखा होता है।"

सफलता मिलने के बाद भी रवि ने अपने संघर्ष को कभी नहीं भुलाया। उसने गरीब विद्यार्थियों के लिए **'नई उड़ान छात्रवृत्ति'** शुरू की। हर वर्ष सैकड़ों विद्यार्थियों की पढ़ाई का पूरा खर्च उसकी संस्था उठाने लगी। एक दिन एक छात्र रोते हुए उसके पास आया। उसने कहा– "सर, बाढ़ में मेरे सारे प्रमाणपत्र बह गए हैं। अब मैं आगे कैसे पढ़ूँ?" रवि मुस्कुराया। उसे अपना अतीत याद आ गया।

उसने उस छात्र के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा–

"बेटा, प्रमाणपत्र दोबारा बन सकते हैं, लेकिन यदि आत्मविश्वास खो गया तो कोई उसे वापस नहीं ला सकता। इसलिए अपने विश्वास को कभी मत खोना।"

उस छात्र की आँखों में आशा लौट आई। रवि समझ गया– उसकी सबसे बड़ी कमाई पैसा नहीं थी। उसकी सबसे बड़ी कमाई किसी निराश व्यक्ति के चेहरे पर लौटती हुई मुस्कान थी।

कुछ वर्षों बाद एक पत्रकार ने रवि से पूछा– "आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है?" रवि मुस्कुराया और बोला– "मेरी कंपनी नहीं... मेरी सफलता नहीं...मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि वह दिन है, जब मैंने अपने खोए हुए प्रमाणपत्रों को अपनी नियति नहीं बनने दिया।" पत्रकार ने दूसरा प्रश्न पूछा– "यदि आज आपको आपके पुराने प्रमाणपत्र वापस मिल जाएँ तो?" रवि कुछ क्षण मौन रहा। फिर उसने आकाश की ओर देखते हुए कहा– "मैं उन्हें सम्मान से संभालकर रखूँगा, क्योंकि वे मेरे संघर्ष की याद हैं। लेकिन अब मेरी पहचान उनसे नहीं है। आज मेरी पहचान उन लोगों की मुस्कान है, जिन्हें मेरी वजह से रोजगार मिला; उन विद्यार्थियों की सफलता है, जिनकी पढ़ाई कभी पैसों के कारण नहीं रुकी; और उन किसानों का विश्वास है, जिनकी मेहनत को उचित सम्मान मिला।" उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा–

"परों को खोल ज़माना उड़ान देखता है,
ज़मीं पे बैठ के क्या आसमान देखता है!
मिला है हुस्न (हुनर) तो इस हुस्न की हिफ़ाज़त कर,
संभल के चल तुझे सारा जहान देखता है।"

– कतील शिफ़ाई

"प्रमाणपत्र यह बताते हैं कि आपने क्या पढ़ा है, लेकिन आपके कर्म बताते हैं कि आपने जीवन से क्या सीखा है।" सभागार देर तक तालियों से गूँजता रहा। उस दिन हर विद्यार्थी अपने साथ केवल एक प्रेरक भाषण नहीं, बल्कि जीवन का एक अमूल्य सत्य लेकर लौटा– **"परिस्थितियाँ कभी मनुष्य की अंतिम पहचान नहीं होतीं। साहस, परिश्रम और आत्मविश्वास ही उसकी वास्तविक पहचान बनते हैं।"**

संदेश

जीवन में कभी यह मत सोचिए कि सब कुछ समाप्त हो गया है। हो सकता है, ईश्वर आपको उस रास्ते से हटाकर उस मंज़िल की ओर ले जा रहे हों, जिसकी आपने कभी कल्पना भी न की हो। याद रखिए–

"मनुष्य की सबसे बड़ी डिग्री उसका चरित्र है,
सबसे बड़ा विश्वविद्यालय उसका संघर्ष है,
और सबसे बड़ा प्रमाणपत्र उसके कर्म हैं।"

श्री शिव शंकर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

मिथिला विवाह की परम्पराएं

मिथिला-उत्तर बिहार एवं नेपाल का एक सम्मिलित क्षेत्र है, जिसे माता सीता की नगरी के नाम से जाना जाता है। त्रेता युग के समय में यह राजा जनक का राज्य था और भगवान श्री राम की ससुराल। शायद इसलिए आज भी मिथिला में होने वाले हर विवाह को राम और सीता के विवाह से जोड़ कर देखा जाता है। मिथिला क्षेत्र में वैसे तो विभिन्न जातियों एवं धर्मों के लोग रहते है। लेकिन मूल रूप से मिथिला की जनसंख्या का बड़ा वर्ग ब्राह्मणों और कायस्थों का है, जिन्हें मूल रूप से मैथिल कहा जाता है। मिथिला में होने वाला विवाह संस्कार अन्य सभी क्षेत्रों से अलग होता है। यहाँ होने वाले विवाह की हर परंपरा के पीछे कोई ना कोई विशेष कारण होता है। आइए जानते हैं मैथिल विवाह से जुड़ी कुछ खास बातें :

दूल्हों का मेला- मिथिला में दूल्हों का एक प्रसिद्ध मेला लगता है जो मधुबनी जिले के **सौराठ** नामक गांव में लगाया जाता है। यह गांव वस्तुतः पंजीकारों का गांव है जहाँ मैथिल ब्राह्मणों के प्रत्येक पीढ़ी में हुए विवाह संबंधों का पंजीकरण कराया जाता है। यूँ तो सौराठ मेले में जाकर लड़कियों के लिए योग्य वर ढूँढने की परंपरा अब बहुत कम देखने मिलती है,पर आज भी कुछ लोग यहाँ तक की विदेशों में बसे मैथिल ब्राह्मण भी यहाँ ज़रूर आते है। एक तरह से यह प्राचीन समय का मैट्रिमोनियल है जो आज भी अस्तित्व में है।

परिछन- यह वस्तुतः 'परीक्षण' शब्द से निकला शब्द है जिसमे घर की महिलाएँ दूल्हे का परीक्षण करती है। इस दौरान दूल्हे से तरह तरह के सवाल हास परिहास के रूप में पूछे जाते है। शादी से पहले लड़के का एक तरह से साक्षात्कार करना इसका उद्देश्य होता है।

नैना जोगिन- इस विधि में दूल्हे से अपनी दुल्हन पहचानने के लिए कहा जाता है जो कि किसी दूसरी लड़की के साथ एक जैसे कपड़े एवं घूँघट में बैठी होती है। महिलाएं इस दौरान गीत के माध्यम से दूल्हे को इशारे से बताती है की असली दुल्हन कौन है। यह विधि दूल्हे की सतर्कता का आकलन करने के लिए की जाती है।

चतुर्थी विवाह- मैथिलों में विवाह तभी संपन्न माना जाता है जब विवाह के चौथे दिन दूसरी बार पूरे विधि विधान से विवाह दोबारा करवाया जाता है। भारत के किसी और प्रदेश में ऐसा नहीं होता। पहले के जमाने में इस विधि की प्रासंगिकता बहुत ज़्यादा थी जब लगभग शादी करने वाले परिवार एक दूसरे से अनजान होते थे। ऐसे में **सौराठ** से आए दूल्हे और भी ज़्यादा अनजान होते थे। तब

विवाह और चतुर्थी विवाह के बीच का समय ना सिर्फ विवाहित जोड़े बल्कि उनके परिवारों के लिए भी काफ़ी महत्वपूर्ण होता था।इस अवधि में विवाहित जोड़े का पूरा समय सिर्फ पूजा पाठ, परिवार में हास परिहास, कठिन उपवास और गीत संगीत में ही बीतता है ।चतुर्थी विवाह तक लड़की की विदाई भी नहीं होती है क्योंकि इस दौरान विवाह मान्य नहीं होता। यूँ तो अब दूल्हे या उसके परिवार की उचित जानकारी पहले से ही होती है, परंतु मैथिलों ने यह परंपरा आज भी वैसी की वैसी ही बना रखी है जो उनका अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान दर्शाती है।

कोहबर - कोहबर वस्तुतः एक ख़ास कमरा होता है जहाँ विवाह के उपरांत विवाहित युगल को विश्राम करने दिया जाता है। विवाह कि बाद से लेकर चतुर्थी विवाह के बीच सारे विधि विधान एवं गीत संगीत इसी कक्ष में किए जाते है। कोहबर की परंपरा के पीछे कोई एक लिखित कहानी नहीं है, बल्कि यह **मिथिला की लोक मान्यताओं** और **रामायण** के प्रसंगों से गहराई से जुड़ी हुई है। माना जाता है कि कोहबर की शुरुआत **माता सीता और भगवान श्री राम** के विवाह से हुई थी। जब श्री राम ने शिव धनुष तोड़ा और माता सीता से उनका विवाह तय हुआ, तब राजा जनक के महल में एक विशेष कक्ष तैयार किया गया। मिथिला की महिलाओं ने उस कक्ष की दीवारों पर देवी-देवताओं, प्रकृति और शुभ प्रतीकों के चित्र बनाए ताकि नवविवाहित जोड़े का जीवन सुखमय रहे। तब से, मिथिला की हर बेटी की शादी में 'कोहबर घर' सजाने की यह परंपरा चली आ रही है।कोहबर के प्रतीकों में छिपे आशीर्वाद और लोकगीतों की मिठास के साथ, मिथिला विवाह एक ऐसा कैनवास है जिसमें भावनाओं के चटक रंग भरे होते हैं। ये परंपराएँ हमें याद दिलाती हैं कि खुशियाँ मनाना एक कला है और रिश्तों को सहेजना एक संस्कार।

आम महुआ विवाह- मिथिला में आम के पेड़ को **अक्षय फल** और **समृद्धि** तथा महुआ **को प्रेम** का प्रतीक माना जाता है। इस रस्म के पीछे कई गहरे अर्थ छिपे हैं।यह रस्म मनुष्य और प्रकृति के अटूट रिश्ते को दर्शाती है। जैसे आम का पेड़ फलता-फूलता है, वैसे ही नवविवाहित जोड़े का वंश भी फले-फूले, यही कामना की जाती है। आम और महुआ का पेड़ दूसरों को फल और छाया देता है; यह दूल्हे को सिखाता है कि गृहस्थ जीवन में उसे भी समाज और परिवार का पोषण करना है।

धोबिन से सुहाग लेना- मिथिला विवाह की अनेक रस्मों में **'धोबिन से सुहाग लेना'** एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक रस्म है। यह रस्म केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि इसके पीछे गहरे सामाजिक और पौराणिक कारण छिपे हैं। इस रस्म का सबसे बड़ा आधार **सती बिहुला और बाला लखिंदर** की कथा है। माना जाता है कि जब सर्प दंश से बिहुला के पति लखिंदर की मृत्यु हो गई, तो बिहुला उन्हें जीवित कराने के लिए स्वर्ग लोक गईं। वहाँ उन्होंने **'नेता धोबिन'** की मदद ली, जो देवताओं के कपड़े धोती थी

और बहुत शक्तिशाली थी। **नेता** धोबिन की सहायता और मार्गदर्शन से ही बिहुला ने अपने पति के प्राण वापस पाए और अपना सुहाग बचाया। तभी से धोबिन को **'अखंड सौभाग्य'** देने वाली माना जाता है, क्योंकि उसने एक सती का सुहाग लौटाने में मदद की थी।

यह रस्म मिथिला के **सामाजिक ताने-बाने** को भी दर्शाती है। विवाह जैसे मांगलिक कार्य में समाज के हर वर्ग की भागीदारी अनिवार्य होती है। यह रस्म ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाकर यह संदेश देती है कि एक नई शुरुआत के लिए समाज के हर अंग का आशीर्वाद जरूरी है।

विवाह गीत- मैथिल विवाह में गीत संगीत का बहुत बड़ा स्थान है। मैथिल विवाह गीत माता दुर्गा की आराधना,शिव पार्वती एवं राम सीता विवाह से जुड़े प्रसंग तथा गृहस्थ जीवन को शुरू करके सकुशल आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करने तथा आशीर्वाद देने वाले होते है।

मधुश्रावणी एवं कोजागरा- ये दोनों त्योहार मैथिल विवाह से जुड़े है जिन्हें क्रमशः विवाह के बाद आने वाले पहले सावन एवं पहली शरद पूर्णिमा में मनाया जाता है। मधुश्रावणी दुल्हन के जबकि कोजागरा दूल्हे के घर में मनाया जाता है। इन दोनों त्योहारों को मनाने के पीछे मान्यता यह है कि इन्हें शिव पार्वती एवं राम और सीता ने भी अपने विवाह के उपरांत मनाया था तथा इन त्योहारों को मनाने से ना सिर्फ विवाहित युगल बल्कि उनके परिवारों के बीच भी संबंध मधुर होंगे।

मिथिला के विवाह के हर संस्कार में दूल्हे और दुल्हन को राम सीता और शिव पार्वती के रूप में दर्शाया जाता है। ऐसी कई सारी विधियाँ है जिनका उद्देश्य ना सिर्फ़ पत्नी को पति का सम्मान देने के लिए शिक्षा देना है बल्कि ये पति को भी अपनी पत्नी का उचित सम्मान देने की बात करती हैं जैसे कि दुल्हन के केश बनाना, घूँघट डालकर उसकी रक्षा का वचन देना,आदि। इन सबके अतिरिक्त मैथिल विवाह में असंख्य ऐसी विधियाँ होती है जिनका एकमात्र उद्देश्य युगल को प्रेम एवं परिवार के प्रति समर्पण का एहसास दिलाना होता है।

आज जहाँ आधुनिकता की आड़ में विवाहों से धर्म संस्कृति जैसी आधारभूत बातें विलुप्त होती जा रही है मिथिला ने आज भी अपनी परंपराओं को सहेज कर रखने का प्रयास किया है। संक्षेप में कहें तो, मिथिला विवाह संस्कारों का वह संगम है जहाँ लोक-कला, धर्म और रिश्तों का मधुर सामंजस्य देखने को मिलता है। यह न केवल बिहार की शान है, बल्कि भारतीय संस्कृति का एक अनमोल रत्न है, जिसकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ती।

सुश्री आरती प्रिया दर्शिनी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

कुत्ता- एक आम बेज़ुबान की खास दास्ताँ

वैसे तो मेरा परिचय देना अनिवार्य नहीं है, क्योंकि मैं खुद को इस काबिल नहीं समझता, परन्तु फिर भी आप सभी की सुविधा के लिए बता दूँ कि मैं वह हूँ, जो दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी नदी सभ्यता के दौरान से मनुष्य का संगी रहा हूँ। और मैं यह यूँ ही नहीं बोल रहा हूँ, बल्कि इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस सभ्यता की खुदाई के दौरान मिले अवशेष से है, जिसमें मुझे मेरी वफादारी के पुरस्कार के रूप में मेरे स्वामी के साथ दफनाया गया था।

जी हाँ, आपने बिल्कुल सही अनुमान लगाया, मैं एक कुत्ता हूँ। मैं वही कुत्ता हूँ, जो आपको कभी गलियों, सड़कों पर इधर-उधर घूमते, तो कभी किसी रईस की गाड़ियों के अंदर पूरी सुख-सुविधा में जीवन यापन करते दिख जाया करता हूँ, या तो कभी इन्हीं गाड़ियों के नीचे आकर कुचला जाया करता हूँ। मैं आपको अक्सर पुलिस कर्मियों, आर्मी अफसरों के साथ भी दिख जाया करूँगा, एक सच्चे देशभक्त के रूप में, जो पहाड़ों, जंगलों, नदियों में जाकर सबूत इकट्ठा करने में, अपराधियों को पकड़ने में, मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने में क़ानून की पूर्णरूपेण निस्वार्थ भाव से सहायता प्रदान करता है।

मनुष्य ने मुझे हमेशा ही अपना मित्र समझा, मुझे मेरी वफादारी के लिए सदैव सर्वोच्च उदाहरण के तौर पर पेश किया, मेरी वफादारी को विद्यालय की किताबों में कहानियों तथा कविताओं के रूप में कई-कई रचनाओं से उद्धृत किया।

वर्तमान में जहाँ मनुष्य इस कदर व्यस्त हो गया है कि उसके पास स्वयं के लिए भी वक़्त नहीं है, चाहे वह जिम्मेदारियों के कारण हो, चाहे जीवन की प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाने के डर से हो, या फिर पढ़ाई के कारण हो, वह अपनी रुचियों पर भी ध्यान नहीं दे पा रहा है, जिससे कि उसका जीवन अत्यंत ही तनावपूर्ण होता जा रहा है। ऐसे समय में एक बेज़ुबान जानवर, यानी कि मैं (कुत्ता), अपने मालिक के जीवन में खुशियाँ और सुकून भरने की पूरी कोशिश करता हूँ। हालाँकि मैं बोलने में तो असमर्थ हूँ, परन्तु मेरे दिल में भावनाएँ बिल्कुल एक इंसान की भाँति ही हैं, जो उसके अकेलेपन और दुःख में बिना कुछ बोले उसके साथ रहता हूँ।

हालाँकि कहते हैं न, कोई भी अच्छी-बुरी उपलब्धि यूँ ही नहीं मिल जाती है, उसके पीछे छिपी होती है कठोर मेहनत, लगन, ईमानदारी। इस उपलब्धि तक का सफर तय करने में मैंने भी खुद को हर कदम पर अपने स्वामी के प्रति समर्पित रखा, चाहे वह उनकी रक्षा करना हो, चाहे घर में चोरी होने से रोकना हो, या उनका मनोरंजन करना हो। मेरे इन्हीं उत्तम चरित्रों को ध्यान में रखकर मेरे ऊपर काफी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें मुझे सच्चे एवं वफादार साथी के रूप में दिखाया गया है, जो अपने स्वामी के लिए अपनी जान तक देने से पीछे नहीं हटता।

मैं बताना चाहूँगा कि मेरी सबसे पसंदीदा फिल्मों में से एक है "चार्ली", जिसमें एक मालिक और उसके कुत्ते के बीच प्रगाढ़ एवं निश्छल प्रेम को दिखाया गया है। अगर आप एक कुत्ते के मालिक हैं, तो आप पूरी तरह से इस फिल्म से जुड़ा हुआ महसूस करेंगे, और अगर आपने अभी तक कोई भी **पेट** नहीं रखा है, तो मैं दावे के साथ कहता हूँ कि इस फिल्म को देखने के बाद आपके मन में भी मुझे अपने साथ पालतू बनाकर रखने का ख्याल जरूर आएगा।

क्षमा चाहूँगा मैं तब से अपनी बड़ाई किए जा रहा हूँ। मैं आपको बता दूँ जिस प्रकार दुनिया में कोई भी चीज सर्वश्रेष्ठ नहीं होती, उसी प्रकार मैं भी सर्वश्रेष्ठ नहीं हूँ। मुझमें भी कमियाँ हैं। यूँ तो बहुत सारी कमियाँ होंगी मुझमें, परन्तु मैं जिस कमी की बात कर रहा हूँ, वह इतनी घातक है कि इससे किसी मनुष्य की जान तक चली जाती है। अब तक तो आपने अनुमान लगा लिया होगा, मैं किसकी बात कर रहा हूँ। जी हाँ, आपने सही समझा, "रैबीज"। यह बीमारी, या यूँ कहें कि एक लाइलाज बीमारी, मेरे काटने पर ही होती है। यूँ तो समय पर टीकाकरण से इसके होने की संभावना कम हो जाती है, परन्तु लोग लापरवाही करते हैं और अपनी जान गँवा बैठते हैं। इसका उदाहरण शायद आपने समाचार में देखा या सुना होगा, जहाँ एक कबड्डी खिलाड़ी ने मुझे नाले से निकालकर मेरा रेस्क्यू किया, परन्तु अनजाने में मेरे दाँत उसे लग गए। मैं सच बताता हूँ, मेरी ऐसी मंशा बिल्कुल भी नहीं थी, परन्तु मैं काफी छोटा था। मुझे पता नहीं था कि वह मुझे बचा रहा है, क्योंकि अक्सर लोग सड़कों पर, गलियों में मुझे डंडे या पत्थरों से मारा करते थे, जिसका दहशत मेरे मन में उस वक़्त भी था, और अनजाने में मुझसे यह गलती हो गई। मुझे बताते हुए बहुत दुःख हो रहा है कि उस कबड्डी खिलाड़ी ने इस बात को अनदेखा कर दिया और टीका नहीं कराया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। इसीलिए आप लोग कभी भी यह गलती ना करें। मेरे द्वारा काटने पर या मेरे नाखून लगने पर तुरंत उसका इलाज करवाएँ और टीकाकरण उचित समय पर लें। यदि आपने मुझे अपने घर पर पालतू बनाकर रखा हुआ है, तो उचित सावधानी बरतें, जैसे कि समय पर टीके वगैरह लगवाना आदि।

मेरा एक और नाम भी है, "स्ट्रे डॉग"। वैसे कुत्ते, जिनका कोई घर नहीं होता, न कोई मालिक होता है, जो गलियों-सड़कों पर अक्सर भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकते रहते हैं। कुछ दयालु लोग मुझे खाने के लिए रोटी, बचे हुए भोजन, या बिस्किट्स वगैरह दे देते हैं, जिससे कि मेरा भरण-पोषण हो जाता है, परन्तु कुछ लोग शरारत में कंकड़-पत्थर भी मार देते हैं, जिससे कि कभी-कभी स्थिति इतनी भयावह हो जाती है कि डर के कारण खुद को बचाने के लिए मैं भी आक्रामक हो जाता हूँ, और आप लोगों पर हमला कर देता हूँ। अफसोस कि कभी-कभी छोटे-छोटे मासूम बच्चे तथा बूढ़े-बुजुर्ग भी इसका शिकार हो जाते हैं, जिसका मुझे बहुत दुःख है। मैं यह नहीं कह रहा कि मैं गलत नहीं हूँ। जो बच्चे या लोग मेरे हमले का शिकार हुए हैं, उनके प्रति मेरी पूरी संवेदना है, परन्तु यह सड़कें

और गलियाँ ही तो हमारा एक मात्र घर हैं, और अगर हमसे यह ही छिन जाएगा, तो हम कहाँ जाएँगे। सच कहूँ तो मैं बिना कारण के किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचाता। आखिर मैं भी तो एक जीव हूँ। मुझे भी दर्द होता है, मुझे भी भूख लगती है। भूख, डर और असुरक्षा की भावना मुझे भी आक्रामक बना देती है। प्रकृति ने मुझे जो स्वरूप, गुण और अवगुण जो भी दिया है, मैं उसी के अनुसार ही चलता हूँ। मेरा इस पर खुद का कोई नियंत्रण नहीं है, परन्तु मैं आपको पूरा आश्वासन देता हूँ कि भविष्य में मैं खुद को और बेहतर और भरोसे लायक साबित करके दिखाऊँगा। इसके बदले में मुझे चाहिए ही क्या, बस थोड़ा सा प्यार, पेट भरने के लिए आपके घर का बचा-खुचा थोड़ा सा भोजन और सामाजिक सुरक्षा।

हालाँकि मनुष्य और मेरे बीच इस असंतुलन को ठीक करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने भी बड़ी ही अहम भूमिका निभाई है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इंसानों की सुरक्षा सर्वोपरि है। बच्चों, बुजुर्गों और आम नागरिकों को भयमुक्त वातावरण मिलना चाहिए तथा साथ ही जानवरों के प्रति क्रूरता भी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने आदेश जारी किया कि जितने भी स्ट्रे डॉग्स हैं, उनको शेल्टर होम में डाल दिया जाए तथा उनका उचित टीकाकरण और बंध्याकरण कराया जाए, जिससे कि रेबीज जैसी जानलेवा बीमारी से लोगों को बचाया जा सके और स्ट्रे डॉग्स की जनसंख्या में नियंत्रण हो। फिर प्रक्रिया पूरी होने के बाद उन्हें वापस छोड़ दिया जाए, जहाँ से उन्हें पकड़ा गया था (परन्तु इस बात का ध्यान रखा जाए कि वह स्थान स्कूल, अस्पताल, रेलवे स्टेशन और खेल परिसर इत्यादि जैसे संवेदनशील स्थान ना हों)। समय-समय पर प्रशासन के द्वारा संतुलित और प्रभावी व्यवस्था की जाए, ताकि इंसान और कुत्ते के बीच सामंजस्य बना रहे। मैं सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का पूरा सम्मान करता हूँ, एक सच्चे नागरिक की तरह। यदि प्यार, क़ानून और व्यवस्था साथ चले, तो मनुष्य और जानवर दोनों ही सुरक्षित रह सकते हैं। समाधान न केवल खाना खिलाने में है, न मुझे मारने में है, और न ही सिर्फ दया दिखाने से है। असली समाधान है, दया और व्यवस्था के बीच संतुलन। नसबंदी, टीकाकरण, साफ-सफाई, पशु आश्रय गृह और जागरूकता।

मुझे यकीन है, इन सारे प्रयासों से भविष्य में मनुष्य और मेरे (स्ट्रे डॉग) के बीच स्थितियाँ और बेहतर होंगी, जिससे कि एक भयमुक्त वातावरण में दोनों ही साँस ले सकेंगे।

अब मैं अपनी वाणी को विराम देते हुए आपसे विदा लेता हूँ।

आपका साथी "कुत्ता"।

सुश्री नेहा रानी
लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

साहसी मन

एक बच्चे की तीखी चीख ने शांत सुबह की खामोशी को चीर दिया। अचम्मा समझ गईं कि सुबह के चार बजे की प्रार्थना के लिए उठने का समय हो गया है। ये चीखें उनके पड़ोस की सात साल की बच्ची, कोचु मरियम, की थीं, जिसे उसकी सौतेली माँ नींद से उठाकर पीट रही थी। यह घटना केरल के त्रिशूर शहर के एक शांत उपनगर की थी।

अचम्मा पिछले एक साल से यह सब देख रही थीं। जब से कोचु मरियम ने अपनी माँ को खोया था और उसके पिता देवासी अपनी नई पत्नी रोज़ी को घर लाए थे, तब से यह सिलसिला शुरू हुआ। रोज़ी, कोचु मरियम की दिवंगत माँ ग्रेसी जैसी बिल्कुल नहीं थी। ग्रेसी शांत, सुंदर और अपने परिवार व पड़ोसियों से बेहद प्रेम करने वाली महिला थीं। एक दिन अचानक खबर फैली कि गर्भावस्था के दौरान ग्रेसी का निधन हो गया। लोगों में यह कानाफूसी थी कि देवासी ने ही उनकी हत्या की है, लेकिन 1920 के दशक में शिकायत करने का मतलब था क्रूर अंग्रेज़ी हुकूमत की जेल।

बेबस अचम्मा केवल कोचु मरियम की बढ़ती हुई पीड़ा को देख सकती थीं। उसे स्कूल से निकालकर पूरे समय की नौकरानी बना दिया गया था। सुबह से शाम तक काम करते-करते उसकी दर्दभरी चीखें अक्सर हवा में गूंजतीं और अचम्मा का दिल दहला देतीं। एक दिन अचम्मा ने देखा कि रोज़ी ने केवल नमक डालना भूल जाने पर उसके ऊपर गरम दलिया उढ़ेल दिया था।

समय के साथ कोचु मरियम एक बेहद सुंदर युवती बन गई, उसके घुंघराले बाल और नैन-नक्श पूरे मोहल्ले में चर्चा का विषय बन गए। लेकिन उसकी तकलीफ़ें कम नहीं हुईं। दो सौतेली बहनों के

आने के बाद रोज़ी को उसे सताने के नए तरीके मिल गए। फिर उसके पिता का भी निधन हो गया और वह पूरी तरह रोज़ी की दया पर निर्भर हो गई।

उसकी ऊँची चीखें अब धीमी सिसकियों में बदल गई थीं। एक दिन अचम्मा ने उसकी स्थिति अपने रिश्तेदार, जो एक पादरी थे, को बताई। उसकी हालत से विचलित होकर पादरी ने उसे बचाने की योजना बनाई। मात्र 13 वर्ष की उम्र में कोचु मरियम की शादी कोट्टायम के एक अनाथ युवक वर्की से कर दी गई, जिसने हैजे में अपना परिवार खो दिया था। वह धार्मिक, मेहनती और बिना दहेज की मांग वाला युवक था–उसकी एकमात्र उम्मीद। रोज़ी ने भी उसे बोझ समझकर तुरंत सहमति दे दी।

कोचु मरियम की ज़िंदगी में चमत्कारिक बदलाव आया। वर्की प्रेमपूर्ण, ऊर्जावान और मेहनती था। वह दो सरकारी नौकरियाँ करता था और शाम को एक छोटी दुकान भी चलाता था। सप्ताहांत में वह स्थानीय नाटकों में अभिनय करता और मधुर गीत गाता। कोचु मरियम की ज़िंदगी जैसे संगीत बन गई। उसने चार बेटों और तीन बेटियों को जन्म दिया और साधारण मगर संतुष्ट जीवन में खुशी पाई।

लेकिन अचानक वर्की की तीव्र ब्रोंकाइटिस से मृत्यु हो गई। मात्र 38 वर्ष की आयु में कोचु मरियम सात बच्चों की विधवा माँ बन गई, जिनमें सबसे छोटा केवल एक वर्ष का था। उसकी दुनिया बिखर गई। सहारे के नाम पर केवल वह घर था जो उसके पति ने बनाया था। बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए उसने अपने पति की अस्थायी सरकारी नौकरी संभाली और बिजली विभाग में सफाईकर्मी बन गई, जबकि वह ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी।

उसका दिन सुबह चार बजे शुरू होता। वह खाना बनाती, पाँच किलोमीटर पैदल चलकर काम पर जाती, दोपहर ढाई बजे लौटती और फिर घर के काम संभालती। रास्ते में लकड़ी इकट्ठा करती, राशन खरीदती और कभी-कभी पड़ोसियों के यहाँ घरेलू काम भी करती। वह अपना दर्द चुपचाप सहती रही, केवल अपने तकिए से अपनी बातें कहती, क्योंकि उसे पता था कि दुख बांटने का कोई लाभ नहीं।

समय बीतता गया। उसने अपनी बेटियों की शादियाँ कीं। पड़ोसियों से लिए गहनों के कर्ज को हर वेतन दिवस पर ईमानदारी से चुकाया। उसकी बेटियाँ प्रसव के समय मायके आतीं। तंग आर्थिक हालत के बावजूद वह कभी शिकायत नहीं करती। उसके पोते-पोतियाँ उसे बेहद प्यार करते और वह उनके साथ बच्चों जैसी हँसी हँसती।

सेवानिवृत्ति के बाद भी उसने काम करना नहीं छोड़ा। वह आत्मनिर्भर रहना चाहती थी। उसका संसार उसके बच्चे और पोते-पोतियाँ थे। दो दिल के दौरे पड़ने के बावजूद उसने परिवार का साथ नहीं छोड़ा। बेंगलूरु में अपने नवजात नाती के जन्म पर वह आईसीयू से छुट्टी मिलने के मात्र दस दिन बाद ही बेटी के पास पहुँच गई।

19 अप्रैल 2000 की रात 10:30 बजे, अपना पसंदीदा धारावाहिक देखने और परिवार के साथ भोजन करने के बाद, कोचु मरियम ने शांतिपूर्वक अंतिम साँस ली। अंतिम संस्कार की तैयारी के दौरान

उसकी पुरानी सहेली ने उसके बेटे को एक बंद लिफाफा दिया। उसमें अंतिम संस्कार के लिए बचाई गई रकम थी, ताकि उसके बच्चे पैसों को लेकर झगड़ें नहीं। वह मृत्यु में भी आत्मनिर्भर थी।

कोचु मरियम, मेरी नानी, मेरी "वो" हैं। वह नारीत्व की प्रतिमूर्ति, आशा और शक्ति की मिसाल थीं। उन्होंने सामाजिक बंधनों को तोड़कर अपना भाग्य स्वयं गढ़ा। क्या वह नारीवादी थीं? मुझे नहीं पता। लेकिन इतना जानती हूँ कि उन्होंने जीवन की हर कठिनाई का सामना अद्भुत साहस से किया, अपने आत्मसम्मान से कभी समझौता नहीं किया और हमेशा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखी।

उन्होंने मुझे दृढ़ता और गरिमा का पाठ पढ़ाया। मुझे गर्व है कि मैं उनकी नातिन हूँ। उनकी विरासत मुझे सिखाती है कि परिस्थितियों के आगे कभी झुकना नहीं, बल्कि साहस के साथ लड़ना है– ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने लड़ा।

सुश्री बीना थॉमस
व.लेखापरीक्षा अधिकारी,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

<u>"सुबह का सपना: विश्वगुरु भारत अपना"</u>

"अगर किसी देश की सुबह उसके बच्चों की आँखों में झलकती है, तो भारत की कई सुबहें आज भी अधूरी हैं—क्योंकि वहाँ शिक्षा अब भी पूरी तरह नहीं पहुँची।"

भारत की शिक्षा केवल अक्षरों और शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि एक ऐसे राष्ट्र की चेतना है, जो अपने अस्तित्व को निरंतर गढ़ने की प्रक्रिया में है। यह वह अदृश्य धागा है, जो पीढ़ियों को जोड़ता है, और वह आधार है, जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है। यह उन अनगिनत सपनों की सीढ़ी है, जिन पर चढ़कर एक साधारण बालक असाधारण बन सकता है। किन्तु जब हम इस व्यवस्था की परतों को खोलकर देखते हैं, तो यह एक ऐसी अधूरी कथा प्रतीत होती है, जिसमें शब्दों का विस्तार तो है, पर अर्थों की गहराई कहीं खो गई है। बाहर से सुसज्जित और आकर्षक दिखने वाली यह व्यवस्था भीतर से कई दरारों को समेटे हुए है, जो समय के साथ और गहरी होती जा रही हैं। "ज्ञान का प्रकाश हर घर तक पहुँचे"—यह आदर्श आज भी अनेक गाँवों की धुंधली गलियों में प्रतीक्षा कर रहा है, जहाँ बाल्यावस्था पुस्तक से अधिक दायित्वों का भार उठाती है।

भारत में शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा केवल साधनों की कमी नहीं, बल्कि अवसरों की असमानता है, जो समाज को अनेक स्तरों में विभाजित कर देती है। एक ओर महानगरों के सुसज्जित विद्यालय हैं, जहाँ अत्याधुनिक सुविधाएँ, प्रशिक्षित शिक्षक और उन्नत शिक्षण पद्धतियाँ उपलब्ध हैं, वहीं दूसरी ओर दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे विद्यालय भी हैं, जहाँ आधारभूत संरचना तक का अभाव है। कहीं कक्षाओं की छत टपकती है, तो कहीं शिक्षक नियमित रूप से उपस्थित नहीं हो पाते। यह विषमता केवल भौतिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक और अवसरगत स्तर पर भी स्पष्ट दिखाई देती है। "एक ही राष्ट्र, पर दो पृथक संसार" यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि एक कठोर यथार्थ है, जो हमारी शिक्षा व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है।

इसके अतिरिक्त, हमारी शिक्षा प्रणाली का एक और गंभीर पक्ष है रटने की प्रवृत्ति, जिसने सीखने के वास्तविक उद्देश्य को धूमिल कर दिया है। यहाँ ज्ञान को आत्मसात करने के बजाय उसे स्मृति में सीमित कर देने की प्रवृत्ति प्रबल हो गई है। शिक्षा एक ऐसी प्रतिस्पर्धा बन गई है, जहाँ समझ से अधिक अंक का महत्व है। परीक्षा का दबाव इतना तीव्र है कि जिज्ञासा, सृजनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। "प्रश्न पूछना ही ज्ञान की पहली सीढ़ी है" किन्तु हमारे अनेक शिक्षण संस्थानों में यह सीढ़ी चढ़ने से पहले ही हटा दी जाती है। विद्यार्थी उत्तरों के अर्थ को समझने

के बजाय उन्हें चिन्हित करना सीख जाते हैं, और यही हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी विडंबना बन जाती है।

शिक्षकों की भूमिका इस समूची व्यवस्था का केंद्रबिंदु है, किन्तु वे भी अनेक चुनौतियों से घिरे हुए हैं। एक शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, प्रेरक और चरित्र-निर्माता होता है। परंतु जब वही शिक्षक संसाधनों के अभाव, अपर्याप्त प्रशिक्षण और प्रेरणा की कमी से जूझ रहा हो, तो वह अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग कैसे कर पाएगा? अनेक बार प्रशासनिक दायित्वों का बोझ इतना अधिक होता है कि शिक्षण का मूल उद्देश्य पीछे छूट जाता है। "गुरु वही, जो अज्ञान के अंधकार में ज्ञान का दीप प्रज्वलित करे" पर यदि उस दीप में ही ऊर्जा क्षीण हो, तो प्रकाश का विस्तार कैसे संभव होगा?

यदि हम विश्व के अन्य देशों की ओर दृष्टि डालें, तो अनेक प्रेरणादायक उदाहरण सामने आते हैं। फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों पर अनावश्यक दबाव नहीं डाला जाता; वहाँ सीखना एक स्वाभाविक और आनंददायक प्रक्रिया है। वहाँ शिक्षक बनने के लिए उच्चतम स्तर की तैयारी आवश्यक है और उन्हें समाज में अत्यधिक सम्मान प्राप्त है। इसी प्रकार दक्षिण कोरिया ने अनुशासन, परिश्रम और तकनीकी नवाचार के माध्यम से शिक्षा को एक सशक्त माध्यम बनाया है। वहीं जर्मनी का व्यावसायिक शिक्षा मॉडल यह दर्शाता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता भिन्न होती है, और उसे उसी के अनुरूप दिशा दी जानी चाहिए। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि भारत को अपनी शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यावहारिक, समावेशी और दूरदर्शी बनाने की आवश्यकता है।

अब यदि हम एक और गहन पक्ष पर विचार करें, तो वह है राजनीति का प्रभाव। भारत में शिक्षा केवल सामाजिक विकास का साधन नहीं रह गई है, बल्कि कई बार यह राजनीतिक विचारधाराओं का माध्यम बन जाती है। नीतियों का निर्माण प्रायः दीर्घकालिक दृष्टिकोण के स्थान पर तात्कालिक लाभ को ध्यान में रखकर किया जाता है। पाठ्यक्रमों में निरंतर परिवर्तन, संस्थानों में हस्तक्षेप और नियुक्तियों में पारदर्शिता का अभाव ये सभी कारक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। जब शिक्षा स्थिरता खो देती है और नीति निरंतर परिवर्तन के अधीन रहती है, तब उसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया पर पड़ता है। शिक्षा का उद्देश्य स्वतंत्र चिंतन को विकसित करना है, परंतु जब वही शिक्षा किसी विचारधारा के प्रभाव में आ जाती है, तो उसकी निष्पक्षता प्रभावित होती है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षा को राजनीति के तात्कालिक प्रभावों से ऊपर उठाकर, एक स्थिर, निष्पक्ष और दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ विकसित किया जाए।

फिर भी, हर चुनौती अपने भीतर संभावनाओं का बीज समेटे होती है। भारत की शिक्षा व्यवस्था में सुधार की दिशा समान अवसर से प्रारंभ होती है। यदि प्रत्येक बालक चाहे वह किसी भी क्षेत्र, वर्ग या परिस्थिति से आता हो समान गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त कर सके, तो यह राष्ट्र की दिशा ही परिवर्तित कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया जाए, तकनीकी साधनों को सर्वसुलभ बनाया जाए और शिक्षकों के प्रशिक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित रखने के स्थान पर जीवन से जोड़ना होगा, ताकि विद्यार्थी केवल परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि जीवन के विविध आयामों के लिए तैयार हो सकें।

“और अगर सब कुछ ऐसे ही चलता रहा, तो शायद हम ‘विश्वगुरु’ तो बन जाएँगे बस अपने ही बच्चों को ठीक से सिखाए बिना।”

हमें शिक्षा में ऐसा परिवर्तन लाना होगा, जहाँ रटने के स्थान पर समझ को महत्व मिले, और अंक के स्थान पर ज्ञान को प्राथमिकता दी जाए। विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और असफलताओं से सीखने की स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी, क्योंकि असफलता ही सफलता की जननी है। यदि हम उन्हें केवल सही उत्तर देने का अभ्यास कराएँगे, तो वे जीवन के जटिल प्रश्नों का समाधान कैसे खोज पाएँगे?

प्रौद्योगिकी भी शिक्षा सुधार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है, परंतु इसका उपयोग संतुलित और समावेशी होना चाहिए। डिजिटल शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचे, न कि केवल सीमित वर्गों तक। अन्यथा, यह विभाजन को और गहरा कर देगी। अतः तकनीक को साधन के रूप में उपयोग करते हुए, उसके साथ मानवीय मूल्यों का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

अंततः, शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि मूल्य-निर्माण और व्यक्तित्व विकास का आधार बनाना होगा। एक शिक्षित व्यक्ति वही नहीं, जिसके पास प्रमाण-पत्र हो, बल्कि वह है जो विवेकशील हो, संवेदनशील हो और समाज के प्रति उत्तरदायी हो। जब शिक्षा मनुष्य को मनुष्य बनाना सिखाती है, तभी वह अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करती है।

निष्कर्षतः, भारत की शिक्षा व्यवस्था आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ से वह या तो अपनी सीमाओं में बंधी रह सकती है, या फिर नवाचार, सुधार और दूरदर्शिता के माध्यम से एक नई दिशा प्राप्त कर सकती है। यह केवल शासन की नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह इस परिवर्तन में सहभागी बने।

और अंत में–
“जब शिक्षा सच में जागेगी, तब केवल विद्यालय नहीं बदलेंगे, पूरा राष्ट्र अपनी दिशा बदल देगा।”

श्री नवनीत महेश्वरी
लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

मखाना

मखाना एक प्रकार का ड्राई फ्रूट है। यह जल कुमुदनी के बीज द्वारा प्राप्त होता है। इसकी उपज मुख्य रुप से भारत, चीन और जापान के तालाबों में होती है। भारतीय राज्य बिहार पूरे विश्व का 90% मखाना का उत्पादन करता है। बिहार में 96,000 हेक्टयर क्षेत्र में मखाना का उत्पादन किया जाता है। बिहार का मिथिला क्षेत्र इसका मुख्य उत्पादक क्षेत्र है। यह शुद्ध जल के तालाब में उपजाया जाता है। इसके पत्ते बड़े और हरे रंग के होते हैं। पत्तियों का आकार 3 फुट तक का गोलाकार लिए होता है। इसके फल 5 से 10 सें.मी. आकार के होते हैं। यह पानी के अंदर मिट्टी में उपजता है। इसके बीज को ही मखाना कहा जाता है। यह बिहार के तीन जिलों दरभंगा, मधुबनी और पूर्णिया में मुख्यत उगाया जाता है। यह प्रोटीन से भरपूर होता है। मखाना प्रोटीन, फाइबर, मैग्नेशियम और पोटैशियम से भरपूर होता है। यह शुगर लेवल को नियंत्रित करने, हड्डियों को मजबूत करने, पाचन शक्ति बढ़ाने तथा हदय की क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है। यह वजन नियंत्रण में भी अहम भूमिका निभाता है। मखाना को घी में भूनकर खाने से हड्डियों को मजबूती मिलती है। मखाने से बहुत से उत्पाद जैसे मिठाई, हलवा, मखाना पूरी स्पेशल बनाया जाता है। मखाना को कच्चा, भुना या पाउडर के रुप में भी उपयोग किया जा सकता है। मखाना को सात्विक आहार माना जाता है। यह धार्मिक अनुष्ठानों में भी प्रसाद के रुप में प्रयोग किया जाता है। इसका रंग उजला सफ़ेद होता है। मिथिला क्षेत्र में शरद पूर्णिमा के दिन नव विवाहिता जोड़ी कोजगरा पर्व मनाते हैं, जिसमें मखाना एक प्रमुख वस्तु है। इस त्योहार में मखाना की खीर बनाकर वर वधू को खिलाया जाता है। इस त्योहार में मखाना को प्रेम और अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक माना जाता है।

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा बिहार में राष्ट्रीय मखाना बोर्ड की स्थापना की गई है। इसका उद्देश्य मखाना का उत्पादन और वितरण कराना है। मखाना बोर्ड के बनने से मखाना उत्पादन और इससे जुड़े किसानों की स्थिति सुधरेगी। यह एक जोखिम रहित व्यापार है। यह वर्षा ऋतु से शुरु होकर शरद ऋतु तक पूर्ण रुप से तैयार होती है। पुराने जमाने में श्रमिक अपने हाथों से मखाना का अंतिम उत्पादन करते थे। आधुनिक समय में मशीनों के आने से मखाना तैयार करने और बाजार में उपलब्ध कराने में आसानी हुई है। बैकों द्वारा किसानों को लोन भी उपलब्ध कराया जाता है। मखाना उद्योग आज वृद्धि की ओर अग्रसर है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों को इसे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। यह एक व्यापारिक फसल हो सकती है। मखाना उद्योग रोजगार उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

श्री संजीव चन्द्र पाठक
व.लेखापरीक्षा अधिकारी,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

निरंतरता

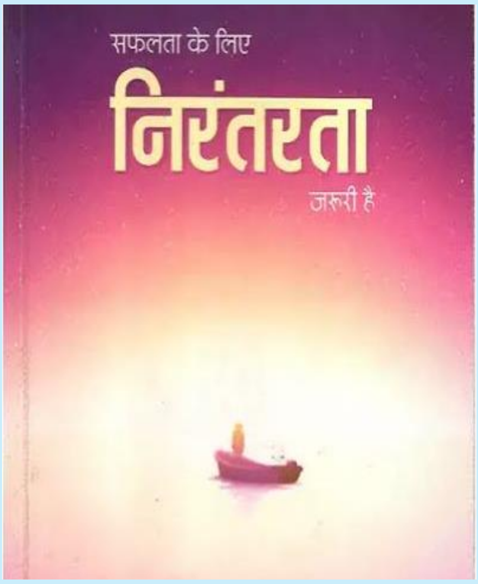

निरंतरता जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की कुंजी है। यह केवल अचानक किए गए प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि छोटे-छोटे नियमित कदमों से आदत और अनुशासन बनाती है। पढ़ाई में, रोज़ाना थोड़ा समय देना लंबे समय तक कहीं अधिक प्रभावी होता है बनिस्बत कुछ दिनों में घंटों तक पढ़ने के। नियमित अध्ययन से जानकारी बेहतर तरीके से याद रहती है, तनाव कम होता है और धीरे-धीरे लक्ष्य तक पहुँचना आसान हो जाता है।

फिटनेस में भी यही सच है। कोई भी व्यक्ति दस या बीस दिनों में अपनी मनचाही बॉडी नहीं बना सकता। ताकत, सहनशक्ति और अच्छा स्वास्थ्य लगातार किए गए व्यायाम से ही आता है। कभी-कभी एक दिन छूट जाना सामान्य है, लेकिन पूरी तरह रुक जाना प्रगति को तोड़ देता है। असली बदलाव तीव्रता से नहीं, बल्कि नियमितता से आता है।

रिश्तों में भी निरंतरता उतनी ही ज़रूरी है। प्यार और दोस्ती केवल बड़े बड़े इशारों से नहीं, बल्कि रोज़ाना की छोटी छोटी कोशिशों से मजबूत होते हैं। एक साथ समय बिताना, हालचाल पूछना और छोटे पल साझा करना रिश्तों को गहराई देता है। कभी कभी ऊब या उदासीनता आ सकती है,

लेकिन ऐसे समय में भी निरंतरता बनाए रखना ज़रूरी है। छोटी सी बातचीत या साधारण देखभाल भी रिश्ते को जीवित रखती है।

आख़िरकार, निरंतरता ही इरादों और उपलब्धियों के बीच का पुल है। चाहे पढ़ाई हो, फिटनेस हो या रिश्ते, रोज़ाना किए गए छोटे प्रयास ही लंबे समय में बड़ी सफलता, स्वास्थ्य और प्यार की नींव रखते हैं। प्रेरणा आती-जाती रहती है, लेकिन निरंतरता यह सुनिश्चित करती है कि प्रगति कभी रुके नहीं।

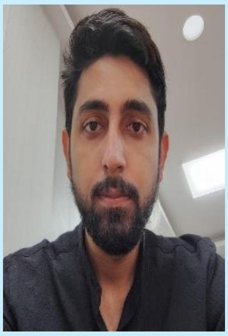

श्री नीरज कुमार
लेखापरीक्षक,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

पहली भगवद्गीता

जब गुरु का विक्रम,

शिष्य की उन्नति पर हो!

तर्क से परे,

वामन से त्रिविक्रम होने का

विस्मय!!

बढ़ना- कुचलना,

रूपक मात्र......

वामन बलि को समझा के,

पाया विजय था विशेष

वाग्जाल!!

पक्ष-विपक्ष का तर्क

प्रस्तुति की सुंदरता..?

या एक तरफ की उपदेशामृत बाढ़?

इह-पर दोनों पर विजय पाने वाला..

बलि ही था!!

सत्य और मिथ्या का निरूपण था क्या..?

या धर्म और कर्म की जिज्ञासा..?

सबके भीतर स्वयं रहकर,

हर कण में व्याप्त वह अपनी ही...

अस्मिता....?!

क्या हुआ था वहाँ..?

किस ज्ञान का अनावरण.?

पुरुषार्थ का वास्तविक

मार्गदर्शन दी हुई पहली..

भगवदगीता .?!!

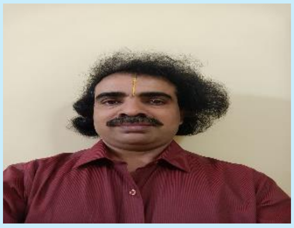

श्री बि. एस. श्रीनाथ
व.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

सतर्कता जागरूकता सप्ताह की कुछ झलकियां

"एटॉमिक हैबिट्स" - छोटी आदतों की बड़ी शक्ति

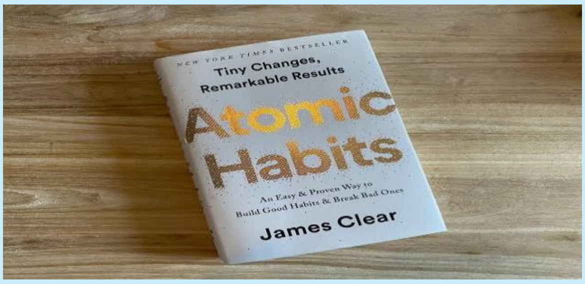

आज के समय में अधिकांश लोग अपने जीवन में बदलाव लाना चाहते हैं। कोई स्वस्थ बनना चाहता है, कोई आर्थिक रूप से सफल होना चाहता है, तो कोई किसी बुरी आदत से छुटकारा पाना चाहता है। लेकिन अक्सर लोग बड़े लक्ष्य तो निर्धारित कर लेते हैं, परंतु उन्हें प्राप्त करने की प्रक्रिया में निरंतरता बनाए नहीं रख पाते। जेम्स क्लियर की पुस्तक *"एटॉमिक हैबिट्स"* इसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है।

यह पुस्तक इस विचार पर आधारित है कि जीवन में बड़े परिवर्तन अचानक नहीं होते, बल्कि छोटी-छोटी आदतों के निरंतर अभ्यास से उत्पन्न होते हैं। लेखक का मानना है कि यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन केवल 1 प्रतिशत बेहतर बनने का प्रयास करे, तो समय के साथ उसका जीवन पूरी तरह बदल सकता है।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता और व्यावहारिकता है। लेखक ने आदतों के निर्माण और परिवर्तन को चार चरणों संकेत, लालसा, प्रतिक्रिया और पुरस्कार के माध्यम से समझाया है। साथ ही, उन्होंने अच्छी आदतें विकसित करने और बुरी आदतों को छोड़ने के लिए स्पष्ट एवं उपयोगी उपाय भी बताए हैं।

पुस्तक का एक महत्वपूर्ण संदेश यह है कि हमें अपने लक्ष्यों पर नहीं, बल्कि अपनी प्रणालियों (Systems) पर ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति स्वस्थ बनना चाहता है, तो केवल वजन कम करने का लक्ष्य निर्धारित करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और अनुशासित दिनचर्या जैसी प्रणालियों का निर्माण आवश्यक है।

हालाँकि, पुस्तक की एक सीमा यह है कि इसमें दिए गए कुछ उदाहरण मुख्यतः पश्चिमी समाज से संबंधित हैं। भारतीय पाठकों को कुछ संदर्भ अपने परिवेश से भिन्न लग सकते हैं। फिर भी पुस्तक का मूल संदेश सार्वभौमिक है और हर व्यक्ति के जीवन में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

वर्तमान समय में, जब लोग त्वरित सफलता की अपेक्षा रखते हैं, यह पुस्तक धैर्य, निरंतरता और छोटे सुधारों के महत्व को रेखांकित करती है। विद्यार्थियों, कर्मचारियों, उद्यमियों तथा आत्म-विकास में रुचि रखने वाले सभी लोगों के लिए यह एक प्रेरणादायक और उपयोगी पुस्तक है।

<u>निष्कर्ष-</u> *"एटॉमिक हैबिट्स"* केवल आदतों पर आधारित पुस्तक नहीं है, बल्कि यह आत्म-अनुशासन और व्यक्तिगत विकास की एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। यह पाठकों को सिखाती है कि असाधारण परिणाम प्राप्त करने के लिए असाधारण कदम उठाना आवश्यक नहीं है; बल्कि छोटे-छोटे सकारात्मक परिवर्तन ही दीर्घकाल में बड़ी सफलताओं का आधार बनते हैं।

"आप अपने लक्ष्यों के स्तर तक नहीं उठते, बल्कि अपनी प्रणालियों के स्तर तक गिरते हैं।" यही इस पुस्तक का सार है।

श्री प्रशांत शर्मा
स.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

<u>भारत में नारियों की सुरक्षा</u>

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता”

जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है। भारत ऋषि मुनियों एवं तपस्वियों की भूमि है। यहाँ प्राचीन काल से लेकर अभी तक स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल में ऋषि मुनि अपनी तपस्या और योग माया से स्त्रियों को राक्षसों से सुरक्षित करते थे।

हमारे प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण में भी स्त्रियों की सुरक्षा के बारे में चर्चा है। भगवान श्री राम ने माता सीता का हरण करने के कारण ही रावण का संहार किया था। महाभारत में भीम ने दु:शासन का वध द्रौपदी के चीरहरण के कारण किया। आधुनिक काल में स्त्रियों की सुरक्षा के लिए अनेक कदम उठाये गए। राजा राम मोहन राय के अथक प्रयास से सती प्रथा का अंत कर स्त्रियों को सुरक्षित किया गया।

आजादी के समय से स्त्रियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। बाल विवाह तथा सती प्रथा का अंत एक ठोस पहल थी। स्त्रियों को सामाजिक एवं शैक्षणिक दोनों स्तर पर महत्ता प्रदान की गई। बालिका शिक्षा पर फोकस किया गया। भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने भी लडकियों की शिक्षा के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं चलाई। लड़कियों को पोशाक, साइकिल, छात्रवृत्ति आदि प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया। सरकारों द्वारा उन्हें नौकरी और अन्य क्षेत्रों में भी आरक्षण प्रदान किया गया। आज स्त्रियाँ आत्मनिर्भर हैं। वे वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर, रक्षा सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबर की भूमिका में है।

कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा के लिए उनके कार्यक्षेत्र में शिकायत निवारण कोष्ठ का गठन किया गया है। उनकी सुरक्षा के लिए कार्य स्थल पर कैमरो द्वारा मॉनीटरिंग की व्यवस्था हुई है। महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा के लिए हेल्प लाइन नंबर और स्पेशल टास्क फोर्स गठित किये गये

हैं। उनके लिए बसों और ट्रेनों में अलग से सीट और डब्बे आरक्षित किए गए है। सबसे महत्वपूर्ण सुधार महिलाओं को लोकतंत्र में पंचायत स्तर पर प्रतिनिधि बनने का आरक्षण प्रदान किया गया है। महिलाएँ लोकतंत्र के पहले सोपान पंचायत में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस आरक्षण से गांधी जी का ग्राम स्वराज्य का सपना साकार होते नज़र आ रहा है।

नारियों की सुरक्षा के लिए भारत सरकार द्वारा निर्भया फंड की शुरुआत हुई है। इसके अलावा महानगरों में महिलाओं के लिए सेफ सिटी परियोजना राज्य सरकार के सहय़ोग से केन्द्र सरकार द्वारा शुरु की गई है। इस योजना के अंतर्गत कुल बजट का केन्द्र सरकार अपना 60 प्रतिशत और राज्य सरकार 40 प्रतिशत अंशदान दे रही है। यह परियोजना भारत के आठ शहरों मुंबई, बेंगलूरु, दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ, हैदराबाद, अहमदाबाद में शुरु किया गया है। इसके अंतर्गत महिलाओं को घर की चहारदिवारी से बाहर सुरक्षित किया गया है। इसके अंतर्गत उन्हें जागरुक और जरुरत पड़ने पर टोल फ्री नंबर, मोबाइल एप, कैमरों, पुलिस गश्त वाहन द्वारा सुरक्षित किया गया है।

महिला आयोग, महिला पुलिस थाना की भी स्थापना हुई है। आज भारतीय नारियां हर एक क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही हैं। खेलों में भी महिलाओं की भागीदारी मजबूत हुई है। अभी हाल ही में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप जीता है। भारतीय नारियों ने रक्षा क्षेत्रों में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। आज हम विकसित भारत बने हैं क्योंकि हमने महिलाओं को पुरुषों के बराबर महत्त्व दिया है। रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनीनायडू, आहिल्याबाई होल्कर, इंदिरा गाँधी, सुषमा स्वराज, कल्पना चावला, भावना कंठ, द्रौपदी मूर्मु जैसी महिलाओं ने अपने देश की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नारियों की दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ही वर्तमान में भारत की ऱाष्ट्रपति और वित्त मंत्री दोनों महिला है। महिला की सुरक्षा को ध्यान में रखकर ही प्रतिवर्ष 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। महिलाएँ आज पूरी तरीके से आधुनिक भारत में आत्मनिर्भर और सुरक्षित हैं।

श्री संजीव चन्द्र पाठक
व.लेखापरीक्षा अधिकारी,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

सुख-दुःख (दादी माँ की कहानी)

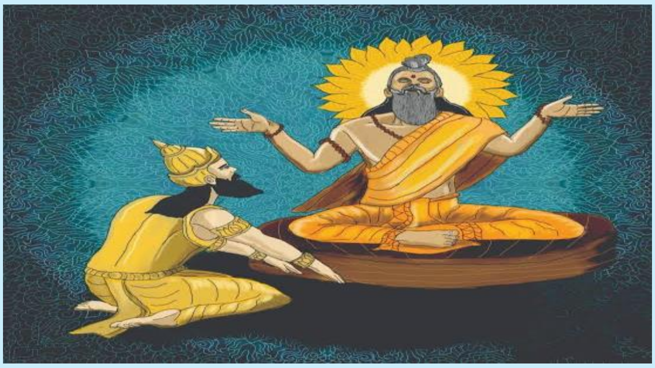

एक दिन की बात है। एक था राजा एक थी रानी उनकी सात बेटियां थी। राजा रानी सातों बेटियों के साथ खुशी खुशी रहते थे। एक बार एक सिद्ध ऋषि उसके राजमहल में आए और राजा को बताया कि आपके जीवन में सुख और दुःख दोनों है। आपको जवानी में सुख चाहिए या बुढ़ापा में? क्योंकि आपके हाथ की रेखा बता रही है कि अगर आप जवानी में सुख भोगोगे तो आपको बुढ़ापा में दुःख होगा। अगर आप जवानी में दुःख भोगोगे तो आपको बुढ़ापा में सुख की प्राप्ति होगी। यह सुनकर राजा चिंता में पड़ गया। बहुत सोच विचार करने के बाद राजा अपने परिवार से विचार विमर्श करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि उन्हें जवानी में दुःख चाहिए और बुढ़ापे में सुख।

क्योंकि जवानी में शरीर दुःख को झेल सकता है, लेकिन बुढ़ापे में शरीर बहुत कमजोर होता है। वह दुःख नहीं झेल सकेंगे।

राजा के यह निर्णय लेने के बाद ऋषि मुनि तथास्तु कह कर शाम को वापस चले गए। रात हो गई सभी सो गए जब सुबह हुई तो देखा कि रातोंरात राजा का महल गायब हो चुका था। राजा के महल के जगह पर एक टूटी फूटी झोपड़ी थी और झोपड़ी में कुछ पुराने बर्तन। जब सुबह हुई, राजा रानी और सातों बेटियाँ सुबह उठे तो ये देखकर सभी दंग रह गए। लेकिन वो समझ गये कि ये उसके बुरे दिन है और जब तक राजा और रानी जवान रहेंगे वे कष्ट में ही रहेंगे। सभी ने इस स्थिति को समझा और परिस्थिति के अनुसार पूरा परिवार अपने आप को ढालने लगा। अब राजा -रानी और उनकी बेटियों को नगरवासी भी नहीं पहचान रहे थे।

समय बदल चुका था। राजा का परिवार अपने आपको परिस्थिति के अनुसार ढाल चुके थे। हर रोज राजा-रानी और उसके सातों बेटियाँ मज़दूरी करते थे और जो भी पैसा कमाकर लाते थे उसी से

गुज़र बसर करते थे। सभी मिलकर इतना भी पैसा नहीं कमाते थे कि ढ़ंग से रोटी, कपड़ा और मकान की भी व्यवस्था कर सके। कभी दिन में खाना खाते तो कभी रात में। कभी-कभी तो भूखे सोना पड़ता था। इस प्रकार किसी भी तरह से राजा का परिवार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक दिन की बात है रानी अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए राजा से बोली कि मुझे खीर खाने का बहुत मन है। राजा-रानी की खीर खाने की इच्छा सुनकर भावुक हो गए। राजा के मन में रानी की इच्छा पूरा करने की जिज्ञासा हुई। उसने एक योजना बनाई कि जब सब सो जाएंगे तब वो रानी को खीर खिलाएंगे। क्योंकि राजा की स्थिति अब बदल चुकी थी अब वो सिर्फ नाम मात्र के राजा थे। उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि वो सभी को खीर खिला सके। रात हुई योजना के तहत रानी ने सभी बेटियों को जल्दी से थोड़ा रूखा-सूखा खिलाकर सुला दिया। योजना के तहत बच्चों के सोने के बाद खीर बनाना था। राजा ने रानी को आधा किलो दूध देते हुए खुशी से कहा- ये लो दूध तुम्हे खीर खाना है न? आज तुम खीर बनाओ हम साथ में खीर खाएंगे। रानी, राजा की इस योजना और उपहार से बहुत खुश थी।

जब आधी रात हुई तो खीर बनाने के लिए रानी ने चूल्हा जलाया तो खीर बनाने के लिए बर्तन ही नहीं मिल रहे थे। रानी ने कहा राजा साहब खीर बनाने के लिए बर्तन नहीं मिल रहे हैं खीर किसमें पकाऊँ? राजा ने धीरे से कहा, अरे! धीरे बोलो, बच्चे जाग जाएंगे। इतने में सबसे बड़ी बेटी जाग गई और चिल्लाकर बोली माँ.... बर्तन यहाँ मेरे पास है। ये देखकर राजा और रानी ने बड़ी बेटी से कहा- चुप हो जाओ, जरा धीरे बोलो नहीं तो सभी जाग जाएंगे।

राजा और रानी की योजना में थोड़ा बदलाव आ गया। राजा ने कहा खीर हम तीनो बाँट कर खा लेंगे। खीर बनाने की प्रक्रिया शुरू की गई। आग पर बर्तन रखा गया। उसमें दूध उबलने के लिए डाला गया। कुछ ही देर में दूध उबल चुका था। अब चावल डालने का समय था। रानी चारों और खीर का चावल ढूंढने लगी। चावल मैने किधर रख दिया ये बड़बड़ाते हुए रानी चावल ढूंढ रही थी। तभी दो नंबर की बेटी जाग गई। बोली मां यह ढूंढ रही हो क्या? फिर राजा और रानी ने कहा, जोर से मत बोलो, चुप हो जाओ। हां, मैं यह खीर के चावल ही ढूंढ रही थी। फिर राजा रानी ने सोचा कोई बात नहीं कि सिर्फ चार लोगों मे बँटेगी। अब रानी ने उबले हुए दूध में चावल दाल दिया। खीर बनने की प्रक्रिया शुरू हो गई। खीर बनने के बाद चीनी या गुड़ डालने की बारी आई। चारों मिलकर चीनी ढूंढने लगे। तभी इस समय तीन नंबर की बेटी उठ गई और कहा मां देखो मेरे पास चीनी का डब्बा। इतने

में मां पिता ने धीरे से कहा, अरे धीरे-धीरे बोल नहीं तो सभी जाग जाएंगे। फिर राजा और रानी ने विचार किया। कोई बात नहीं। अभी तो सिर्फ तीन बेटियां ही जगी है। पांचों मिल बांटकर खा लेंगे।

फिर खीर को चलाने के लिए रानी चम्मच ढूंढने लगी। इतने में चौथे नंबर की बच्ची उठ गई और बोली माँ यह लो मेरे पास है क्या आप यह ढूंढ रहे हैं? इतने में रानी और राजा एक साथ बोले अरे.. धीरे बोल नहीं तो सब जाग जाएंगे।

अब चम्मच चलाते हुए खीर बनाया जाने लगा। अब बारी आई काजू, किशमिश और मावे की। राजा ने रानी से कहा, मैंने तुम्हें दिया था ना? तुमने कहां रख दी। जल्दी खोजो आज का खीर खास है। और बहुत खास होनी चाहिए। इतने में पांचवी नंबर की बेटी जाग गई और बोली पिताजी यह तो मेरे पास है। यह सुनते ही राजा और रानी ने साथ में कहा जरा धीरे बोलो नहीं तो सब जाग जाएंगे। चलो मेवे जल्दी से दे दो तुम्हें भी खीर मिलेगी। यह सुनकर पांचवें नंबर की बेटी ने खुशी-खुशी मेवा दे दिया और खीर तैयार होने का इंतजार करने लगी। इस तरह से धीरे-धीरे करके सारी बेटियाँ जाग जाती है और खीर बनने के बाद पूरा खीर खा लेती हैं।

यही तो विधि का विधान है। किस्मत के आगे कौन जीत पता है क्योंकि राजा ने जवानी में दु:ख मांगा था तो उसे खीर कैसे मिल सकती थी?

सुश्री ज्योत्सना
(सुपुत्री-श्री रंजन कुमार)
लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

<u>शांति का सच्चा मार्ग</u>

धरती की गोद में छिपा है,

जीवन का सारा सार,

नदियों की मधुर धारा में,

बसता है सच्चा प्यार।

पेड़ों की हरियाली कहती,

मत भूलो अपना मूल,

प्रकृति संग जो जीता है,

वही है सच में फूल।

मन के भीतर झाँको ज़रा,

शांति वहीं पर मिलती,

ध्यान की गहराई में जाकर,

आत्मा खुद से मिलती।

ना कोई सीमा, ना कोई द्वेष,

ना कोई युद्ध की रेखा,

जहाँ प्रेम का दीपक जलता,

वहीं सच्चा है लेखा।

क्रोध की ज्वाला जलती जब,

सब कुछ राख हो जाता,

पर करुणा की ठंडी छाया,

जीवन को सुख दे जाती।

धरती माँ की सेवा करना,

सबसे बड़ा है धर्म,

स्वच्छ हवा और निर्मल जल में,

बसता जीवन का कर्म।

आओ मिलकर प्रण ये लें,

प्रकृति का मान बढ़ाएँ,

मन में शांति, जीवन में प्रेम,

धरती को स्वर्ग बनाएँ।

युद्ध नहीं, अब प्रेम लिखें हम,

हर दिल में विश्वास,

शांति, साधना, और सद्भाव,

यही जीवन की आस।

चलो जलाएँ दीप प्रेम का,

हर आँगन, हर द्वार,

मानवता का हाथ थामकर,

बढ़े शांति का संसार।

यदि हर मन में दया जगे,

तो मिट जाएँगी दीवारें,

शांति के इस सुंदर पथ पर,

खिल उठेंगी बहारें।

आओ मिलकर यह संदेश,

दुनिया भर में फैलाएँ,

प्रेम, करुणा और सद्भाव से,

नई सुबह फिर लाएँ।

– मानवता, प्रकृति और शांति को समर्पित एक पुकार –

श्री रामनिवास तोमर
लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

कुछ नया हो जाए !

एक दिन पूरे शहर की बिजली और इंटरनेट बंद हो गया। सारे शहर में अफरा-तफरी मच गई, लोग घबरा गए, लेकिन रोहन ने इस मौके पर कुछ अलग करने के लिए सोचा। वैसे तो रोहन एक छोटे शांत से शहर में रहता था किन्तु ये शहर भी आधुनिक शहर की तरह ही था, तकनीक से युक्त। जहाँ लोग सुबह से मोबाइल और टीवी में घुस जाते थे। ऑफिस के काम, बच्चों की क्लास सब ऑनलाइन होने लगे थे, लोग रियल जिंदगी से रील्स की जिंदगी में खो कर सो जाते थे।

ऐसे शहर में अचानक से सुबह के 6 बजे जब लोग अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त थे कि अचानक रोहन का पंखा बंद हो गया। रोज 9 बजे जागने वाला रोहन आज 6 बजे ही जग गया। उसने देखा लाइट गायब थी। कुछ समय की बिजली कटौती सोच कर घर के बाकी लोग भी सहज से थे। थोड़ी देर बाद ही उनके मोबाइल के नेटवर्क व इंटरनेट सुविधा भी बंद मिली। दोपहर तक तो पूरा शहर जैसे थम सा गया। ना दफ्तर का कोई काम न दुकानों पर कोई मशीन काम कर रही थी। लोग अब परेशान होने लगे।

रोहन एक 15-16 साल का लड़का जो हमेशा ही अपने मोबाइल में व्यस्त रहता था। आज उसने प्राकृतिक हवा के लिए अपने कमरे की सालों से बंद पड़ी हुई खिड़की को खोला तो सामने एक कचरे से भरा हुआ पार्क नज़र आया। पार्क जो केवल नाम के लिए ही पार्क रह गया था। शहर के सारे बच्चे भी मोबाइल से व्यस्त रहने के कारण पार्क में कभी नही जाते थे। कुछ असामाजिक लोगों ने उस पार्क को कचरा घर बना दिया था। कई बार उनकी शिकायत भी की गई पर नतीजा ढाक के तीन पात । सरकारी काम सोच कर धीरे-धीरे सब उस पार्क को यूं ही भूल गए थे।

खिड़की से खड़े-खड़े ही रोहन के मन में उथल-पुथल होने लगी। आज कुछ नया करने का सोच कर अपनी साईकिल उठा सीधा कॉलोनी के कुछ दोस्तों को इकट्ठा किया। रोहन के साथ उसके 4-5 दोस्तों ने अपने-अपने घरों से सफाई का सामान लिया और पार्क की तरफ बढ़ गए। किसी ने पुरानी बोतलें उठाई तो किसी ने पॉलीथिन, किसी ने झाड़ू से सारा छोटा-छोटा कचरा एक तरफ किया। उन बच्चों को देख कर कॉलोनी के कुछ लोग भी जुड़ गए और देखते ही देखते महज 3 घंटे में पूरा पार्क

साफ व सुंदर कर दिया। कॉलोनी के सभी लोग रोहन व उसके दोस्तों की तारीफ किए बिना न रुक पाये।

शाम तक तो कॉलोनी के ढेर सारे बच्चे पार्क में कई तरह के खेल खेल रहे थे तो कुछ औरतें हंसी मज़ाक कर बातें कर रही थी। कुछ बुज़ुर्ग अपने पुराने किस्सों को दिल खोल कर सबको सुना रहे थे तो कहीं से पुराने गीतों के सुर सुनाई पड़ रहे थे जबकि लाइट अभी तक नहीं आई थी न ही नेट चला किन्तु अब किसी को मोबाइल लाइट इंटरनेट की चिंता न थी। सबकी बेचैनी अब एक सुंदर मुस्कान में बदल चुकी थी। अब हर रोज कॉलोनी में ऐसा ही माहौल रहने लगा था।

सीख - एक अच्छी सोच सब कुछ बदल सकती है।

"अँधेरों में भी मिलते हैं कई बार रास्ते,
एक उजाले का ही मुझको सहारा नहीं।"

सुश्री सोनाक्षी सक्सेना,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
मले.(लेप.-I) का कार्यालय

जीवन - एक पड़ाव

जीवन के एक पड़ाव में अनजानी राह में,

ज़िंदगी ठहरी सी, मंज़िल की तलाश में।

आँखों में उदासी सी ठहरी, चेहरा भावमुक्त सा,

तन जालों से जकड़ा और मन उनमुक्त सा।

मशीनों के हाथों में अब जीवन क़रीब सा,

कोई आहट की राह में....

जीवन के पड़ाव में.....

दिन-रात की दूरी नहीं, अनजाने अपनों के साथ,

बेगाने बने अब अफ़साने।

अंतरिक्ष के आईने में अक्स को टटोलते हुए,

बंद दरख्तों के आसमानों पर तारों को उकेरते हुए,

और तन्हाई में साँसों को भरते हुए,

अपनों की तलाश में....

जीवन के पड़ाव में....

मोह-माया का बंधन ठहरा, आँखों में समंदर ठहरा,

पथराई नैनों में नीर व पत्थर सा ठहरा।

हृदय में भी साँसों का पहरा,

और लहू भी धमनियों में ठहरा।

बर्फ़ की दरारों को पिघलाने को गर्म धूप की तलाश में,

आख़िर क्यों ज़िंदगी अनसुनी आवाज़ में।

जीवन के पड़ाव में.....

पीछे छूटे आशियाने जो बने वीराने,

एक आवाज़ की राह में........

दरवाज़े पर टकटकी सी, साँसों के दबाव में।

ढूँढती हर आहट में अपनों की तलाश में,

साँसों में बेचैनी और जज़्बात हकलाहट में।

जीवन के पड़ाव में......

दीवारों की सफेदी पर कल्पनाओं का चित्र उकेरते हुए,

अरमानों के रंगों को उम्मीदों से भरते हुए।

आशाओं के दीपों से अंधेरों को हरते हुए,

खो गया जो दूर कहीं अनसुलझे सवालों में।

अपने को अपनों में संजोते हुए,

सूर्योदय की तलाश में.....

जीवन के पड़ाव में.......

हर आहट पर भय सा, अगले पल अब कैसा?

ज़िंदगी घड़ियाल सा, अंतहीन समय की माया।

ये धन-दौलत व काया है पंचतत्व की माया,

एक दिन छूटे सब कुछ, बस प्रभु अनंत की साया।

दिन-रात एक कर बूँद-बूँद सहेज कर लाया,

अब कोई साथ न आया, बस हरि की ही छाया।

जीवन के पड़ाव में.......

हर्ष-उल्लास सकल त्योहार सब अतीत, ज़िंदगी फीकी-फीकी,

त्योहारों का मौसम छूटा, कहानियों का बचपन छूटा।

न रंग, न पिचकारी, अन दिये न दीपावली,

अरमानों के आँगन में आशाओं का सूखा पसरा।

तकते-तकते राह उत्सव की, संजोए सब रात-दुगुना,

उम्मीदों की आस में.....

आया वो दिन जब नैनों में सावन-भादों आए,

अरमानों की बारिश ने दुख-दर्द सब भिगोए।

अपनों संग गाए होरी, हृदय की शक्ति संजोए,

क़दमों के चाप से दूरियाँ घटाते हुए।

घरौंदों के पास आने को हौसलों को बढ़ाते हुए,

और जीवन को पास लाते हुए......

बारिश की बूँदों से अब हलचल आते हुए,

जो ठहर गया था समुद्र की गहराई में।

बूँदों की लहरों पर अरमानों को मचलते हुए,

ख्वाहिशों के शामियाने में हक़ीक़त को संभालते हुए।

खुशियों के पंखों को रंगों से भरते हुए,

और ज़िंदगी के कारवां को आगे बढ़ाते हुए।

जीवन की अंगड़ाई में.......

अश्रुओं की माला और आलिंगन प्रीत का,

हृदय करुण वंदन और सपना सजीव का।

प्रेम के भंवर में खुद को डुबोने का,

भावनाओं की गहराई में गोते लगाने में।

यथार्थ के आँचल और ममता की छाँव में,

उम्मीदों की रोशनी तले नव शुरुआत में।

जीवन की इस शुरुआत में.....

श्री पंकज कुमार
सहायक पर्यवेक्षक,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

मेरी पहली हवाई यात्रा - दुबई की ओर

26 नवंबर 2022 का दिन मेरे जीवन के सबसे यादगार दिनों में से एक है। इसी दिन मुझे पहली बार हवाई जहाज़ से यात्रा करने का अवसर मिला। यह केवल मेरी पहली विदेश यात्रा ही नहीं थी, बल्कि मेरे जीवन की पहली हवाई यात्रा भी थी। इसलिए इस सफर को लेकर मन में जितना उत्साह था, उतनी ही घबराहट भी थी।

इससे पहले मैंने कभी हवाई जहाज़ में यात्रा नहीं की थी। सच कहूँ तो कई बार मन में यह सवाल आता था कि क्या मैं कभी हवाई यात्रा कर भी पाऊँगी? इसकी सबसे बड़ी वजह मेरा ऊँचाई से डरना था। मैं तो किसी ऊँची इमारत से भी नीचे देखने में घबरा जाती हूँ। ऐसे में हज़ारों फीट की ऊँचाई पर उड़ने का विचार ही मुझे थोड़ा डरा देता था।

लेकिन कहते हैं न, जीवन का हर नया अनुभव हमें कुछ नया सिखाकर जाता है। मेरे मन में भी एक नई जगह देखने की उत्सुकता थी और पहली बार हवाई यात्रा करने का उत्साह भी। डर अपनी जगह था, लेकिन उससे कहीं ज़्यादा इच्छा इस नए अनुभव को जीने की थी।

हवाई यात्रा की सभी आवश्यक प्रक्रियाएँ पूरी करने के बाद मैं विमान में जाकर अपनी सीट पर बैठ गई। अब बस इंतज़ार था कि विमान कब उड़ान भरे। जैसे ही विमान ने रनवे पर गति पकड़नी शुरू की, मेरी धड़कन भी तेज़ हो गई। और जब विमान ने उड़ान भरी, तो कुछ पल के लिए मन में हल्का-सा डर महसूस हुआ। उस समय यही सोच रही थी कि जहाँ मैं किसी ऊँची इमारत से नीचे देखने का साहस नहीं कर पाती, वहाँ आज इतनी ऊँचाई पर सफर कर रही हूँ।

फिर मन ने खुद को समझाया– "जब ओखली में सिर दे ही दिया है, तो अब डर किस बात का।" बस, यही सोचकर मैंने अपने डर को पीछे छोड़ दिया। धीरे-धीरे घबराहट कम होने लगी और

उसकी जगह उत्साह ने ले ली। इसके बाद पूरा सफर बहुत आनंददायक लगने लगा। सच कहूँ तो देखते ही देखते तीन घंटे कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला।

हाँ, इस सफर की एक छोटी-सी कसक आज भी है। मेरी बहुत इच्छा थी कि मुझे खिड़की वाली सीट मिले, ताकि मैं बादलों और नीचे के मनमोहक दृश्यों को अपनी आँखों से देख सकूँ। लेकिन मुझे विंडो सीट नहीं मिली। आज भी सोचती हूँ तो लगता है कि एक तरफ़ मुझे ऊँचाई से डर लग रहा था और दूसरी तरफ़ खिड़की वाली सीट न मिलने का अफसोस भी था। शायद यही इस यात्रा की सबसे दिलचस्प बात थी।

कुछ ही देर बाद विमान दुबई में उतरने वाला था। ऊपर से ही मुझे दुबई का प्रसिद्ध पाम जुमेराह दिखाई दिया। उस समय महसूस हुआ कि इस अद्भुत द्वीप की वास्तविक सुंदरता ऊपर से ही दिखाई देती है। नीचे से देखने पर उसका पूरा आकार समझ में नहीं आता, लेकिन आसमान से उसका दृश्य सचमुच अद्भुत लगता है।

उस समय दुबई की रात रोशनी से जगमगा रही थी। चारों ओर फैली रोशनी, ऊँची-ऊँची इमारतें और सड़कों पर सजी चमकती रोशनियाँ देखकर मैं कुछ पल के लिए बस उन्हें देखती ही रह गई। वह दृश्य इतना सुंदर था कि अनायास ही मेरे मुँह से निकला– "वाह...!"

अगर आप किसी नई जगह पर जाते हैं, तो सबसे पहले आपका ध्यान वहाँ की व्यवस्था और स्वच्छता की ओर ही आकर्षित होता है। दुबई पहुँचने के बाद मेरा ध्यान भी सबसे पहले इन्हीं बातों पर गया।अगर दुबई की सबसे अच्छी बातों में से किसी एक का नाम लेना हो, तो मैं वहाँ की स्वच्छता का ज़िक्र सबसे पहले करूँगी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि स्वच्छता के मामले में दुबई भारत से कहीं आगे है। इसके पीछे कारण चाहे वहाँ की सरकार के कड़े नियम हों या फिर वहाँ के लोगों की जागरूकता, लेकिन परिणाम साफ़ दिखाई देता है। सड़कों से लेकर सार्वजनिक स्थानों तक हर जगह साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। कहीं भी अनावश्यक कूड़ा-कचरा दिखाई नहीं देता।

वहाँ के लोगों का दैनिक आवागमन भी काफ़ी व्यवस्थित है। बस और मेट्रो का व्यापक उपयोग किया जाता है। निजी वाहनों में अधिकतर लोग कार से ही यात्रा करते हैं। मोटरसाइकिलें बहुत कम दिखाई देती हैं और वे भी अधिकतर भोजन या अन्य सामान की डिलीवरी करने वाले लोगों के पास ही होती हैं।

दुबई के यातायात नियम भी काफ़ी सख्त हैं। वहाँ कोई भी व्यक्ति लापरवाही से वाहन नहीं चलाता। सड़क पार करने के भी स्पष्ट नियम हैं। हमारे यहाँ अक्सर लोग चलती हुई गाड़ियों के बीच से हाथ दिखाकर सड़क पार कर लेते हैं, लेकिन दुबई में ऐसा करना नियमों का उल्लंघन माना जाता है और इसके लिए भारी जुर्माना भी देना पड़ सकता है। यही कारण है कि अधिकांश लोग सड़क पार करने के लिए केवल ज़ेब्रा क्रॉसिंग का ही उपयोग करते हैं।

मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि वहाँ केवल नियम ही सख्त नहीं हैं, बल्कि लोग उनका पूरी ईमानदारी से पालन भी करते हैं। शायद यही कारण है कि वहाँ का यातायात इतना व्यवस्थित दिखाई देता है

वैसे तो मुझे दुबई की कई प्रसिद्ध जगहों पर घूमने का अवसर मिला और हर जगह की अपनी एक अलग पहचान और विशेषता है। कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जिन्हें देखने के लिए अलग से जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सफर के दौरान ही वे रास्ते में दिखाई दे जाते हैं। ऐसा ही एक स्थान है दुबई फ़्रेम। मैं वहाँ अंदर जाकर तो नहीं घूम पाई, लेकिन रास्ते में उसे देखकर ही उसकी भव्यता का अंदाज़ा हो गया। दूर से ही वह अपनी अनोखी बनावट के कारण सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है।

दुबई पहुँचने के बाद सबसे पहले मैं अपनी भाभी के साथ उनके कार्यस्थल गई, जो दुबई के डाउनटाउन में स्थित है। वहाँ पहुँचते ही मेरी नज़र चारों ओर बनी ऊँची-ऊँची इमारतों पर गई। उनकी ऊँचाई और खूबसूरत बनावट देखकर मेरी आँखों में एक अलग ही चमक आ गई। मैंने पहले कभी इतनी ऊँची और इतनी शानदार इमारतें एक साथ नहीं देखी थीं।

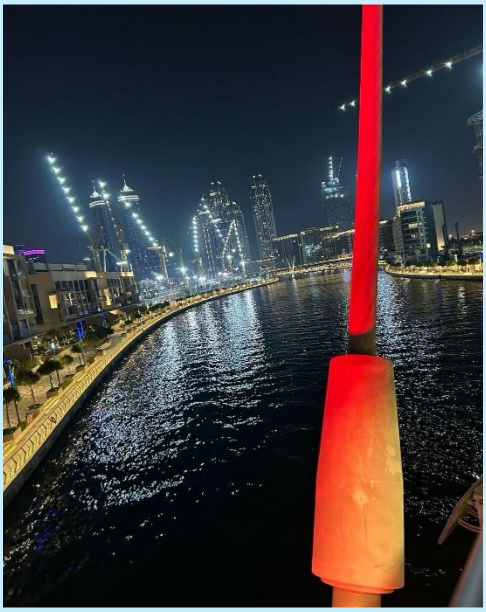

डाउनटाउन की सड़कों पर घूमते हुए मुझे बार-बार ऐसा महसूस हो रहा था, मानो मैं किसी वीडियो गेम का हिस्सा हूँ। चारों ओर इतनी ऊँची इमारतें थीं कि उनके सामने इंसान और गाड़ियाँ दोनों ही बहुत छोटे दिखाई देते थे। शायद यही वजह थी कि मुझे वह जगह किसी गेम की दुनिया जैसी लग रही थी। यह अनुभव मेरे लिए बिल्कुल नया और बेहद रोमांचक था।

धीरे-धीरे मैंने अपने परिवार के साथ दुबई घूमना शुरू किया। मुझे वहाँ की कई प्रसिद्ध जगहों पर जाने का अवसर मिला। मेरे लिए वहाँ की हर जगह, हर चीज़ और वहाँ का रहन-सहन बिल्कुल अलग था। वहाँ का वातावरण, संस्कृति और अलग-अलग देशों के लोगों को एक साथ देखकर मुझे बहुत

अच्छा लगा। मुझे तो ऐसा लगा कि दुबई को 'मिनी वर्ल्ड' कहना गलत नहीं होगा। इसका कारण यह है कि वहाँ आपको हर दिन अलग-अलग देशों के लोग मिल जाते हैं। यहाँ तक कि जिस इमारत में आप रहते हैं, हो सकता है आपका पड़ोसी भी किसी दूसरे देश का हो। इतने अलग-अलग देशों के लोगों को एक साथ रहते देखना अपने आप में एक नया अनुभव था।

अब बात करते हैं वहाँ की कुछ खास जगहों की। वैसे तो मुझे दुबई की लगभग हर जगह बहुत अच्छी लगी, क्योंकि उनमें से अधिकांश चीज़ें मैंने पहली बार देखी थीं। लेकिन मेरे भाई के घर के पास स्थित ग्लोबल विलेज ने मुझे सबसे ज़्यादा आकर्षित किया। यह स्थान साल में केवल एक निश्चित समय, लगभग अक्टूबर से मई तक ही खुलता है। अगर किसी एक जगह को सच में 'मिनी वर्ल्ड' कहा जाए, तो वह मेरे लिए ग्लोबल विलेज ही है।

ग्लोबल विलेज में अलग-अलग देशों के लोग अपनी संस्कृति, कला और परंपराओं को प्रदर्शित करने आते हैं। हर देश का अपना अलग मंडप होता है, जिसे उस देश की पहचान के अनुसार बहुत सुंदर ढंग से सजाया जाता है। प्रवेश द्वार पर उस देश का नाम भी लिखा होता है, जिससे ऐसा लगता है मानो कुछ ही घंटों में पूरी दुनिया की सैर कर ली हो। वहाँ आपको विश्व की अलग-अलग संस्कृतियाँ, भाषाएँ, पहनावा और लोग एक ही स्थान पर देखने को मिल जाते हैं, जो मुझे बहुत ही रोचक लगा।

वहाँ मैंने एक सुंदर नृत्य प्रस्तुति भी देखी। उसका नाम तो अब मुझे ठीक से याद नहीं है, लेकिन शायद वह बैले नृत्य (Ballet Dance) था। उस प्रस्तुति को देखकर मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे मैं किसी पुराने दौर या किसी अलग ही दुनिया का हिस्सा बन गई हूँ। संगीत, नृत्य और वहाँ का पूरा वातावरण इतना आकर्षक था कि वह पल आज भी मेरी स्मृतियों में बिल्कुल ताज़ा है। आज भी जब उस पल को याद करती हूँ, तो वही उत्साह और खुशी फिर से महसूस होने लगती है।

मेरी यह दुबई यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक रहेगी। इस यात्रा में मैंने बहुत कुछ नया देखा, नया सीखा और ऐसे अनुभव किए जिन्हें मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी। यह सफर हमेशा मेरी खूबसूरत यादों का हिस्सा रहेगा।

सुश्री श्वेता यादव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

<u>नई कार खरीदते समय एक लाख तक की बचत कैसे करे</u>

मैंने लंबे समय तक स्टडी की है और कई लोगों से बात करके यह लेख तैयार किया है। मेरा उद्देश्य है कि आप नई कार खरीदते समय 50,000 से 1,00,000 रुपये तक बचत कर सकें।

1. सही कार का चुनाव

सबसे पहले अपनी ज़रूरत के अनुसार कार चुनें – चाहे परिवार के लिए हो या बैचलर लाइफस्टाइल के लिए। पेट्रोल, डीज़ल या इलेक्ट्रिक – यह पूरी तरह आपकी प्राथमिकता पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, मैंने *Thar Roxx* चुनी। मेरा सुझाव है कि बेसिक मॉडल न लें क्योंकि उसमें अच्छे फीचर्स नहीं होते जैसे टचस्क्रीन, अलॉय व्हील्स, फॉग लैम्प्स, 360° कैमरा आदि। बेहतर है कि आप मिड या अपर-मिड वेरिएंट चुनें।

2. खरीदने का सही समय

कार खरीदने का समय बहुत मायने रखता है। मेरी राय में **मार्च** और **दिसंबर** सबसे अच्छे महीने हैं, क्योंकि इन महीनों में कंपनियाँ एक्स-शोरूम प्राइस पर 30,000 से 1,00,000 रुपये तक का डिस्काउंट देती हैं।

हालाँकि, अगर कार की डिमांड बहुत ज़्यादा है (जैसे मेरे केस में Thar Roxx), तो डिस्काउंट मिलना मुश्किल हो सकता है।

3. बीमा (Insurance)

कंपनियाँ अक्सर आपको 50% तक ज़्यादा प्रीमियम ऑफर करती हैं। लेकिन अगर आप पहले से थर्ड-पार्टी इंश्योरेंस कंपनियों जैसे **Acko** या **Go Digit** से कोटेशन ले लें, तो आपको 40% तक कम प्रीमियम पर बीमा मिल सकता है। मेरे केस में Go Digit ने मुझे 3 साल के लिए 51,000 रुपये का *Own Damage Premium* दिया, जबकि कंपनी ने सिर्फ 1 साल के लिए 90,000 रुपये माँगे थे। यानी मैंने सिर्फ बीमा पर ही लगभग 70,000 रुपये बचाए।

महत्वपूर्ण ऐड-ऑन:

- आरटीआई (इनवॉइस पर वापसी) RTI (Return to Invoice)
- ज़ीरो डेप्रिसिएशन (Zero Depreciation)
- इंजन वारंटी (Engine Warranty)
- आरएसए (रोडसाइड असिस्टेंस) RSA (Roadside Assistance

- चूहे के काटने और इस्तेमाल होने वाली चीज़ों (कंज्यूमेबल्स) का कवर (Rat Bite & Consumables Cover)

इनसे आपकी कार पूरी तरह सुरक्षित रहती है।

4. टैक्स और एनसीबी (NCB)

अगर आपकी कार की एक्स-शोरूम कीमत 10 लाख से ज़्यादा है तो TCS (Tax Collected at Source) 1% कटेगा। लेकिन आप **फॉर्म 28** लेकर इनकम टैक्स रिटर्न में इसका रिफंड पा सकते हैं। अगर आप पुरानी कार बेच रहे हैं और उस पर कोई क्लेम नहीं लिया है, तो **No Claim Bonus Certificate** ट्रांसफर करवा लें। इससे नई कार पर भी वही लाभ मिलेगा।

5. लोन का चुनाव

लोन लेते समय **Floating Rate of Interest** चुनें, क्योंकि यह फिक्स्ड रेट से सस्ता पड़ता है। मेरी रिसर्च के अनुसार, यूनियन बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा 7.6% ब्याज दर पर लोन देते हैं (अगर आपका CIBIL स्कोर 751-799 है)। प्रोसेसिंग फीस लगभग 600 रुपये और स्टाम्प ड्यूटी 0.5% होती है।

6. प्री-डिलीवरी इंस्पेक्शन

कार लेने से पहले **Pre-Delivery Inspection** ज़रूर करें।

- बैटरी
- चेसिस नंबर
- व्हील्स की मैन्युफैक्चरिंग डेट
- नंबर प्लेट
- इलेक्ट्रिकल आइटम्स और पेंट

इन सबकी जाँच एक दिन पहले कर लें ताकि कोई खराबी न रह जाए।

निष्कर्ष

अगर आप ऊपर बताए गए स्टेप्स अपनाते हैं तो नई कार खरीदते समय आसानी से 1 लाख रुपये तक बचत कर सकते हैं। समझदारी से खरीदें, सही समय चुनें और इंश्योरेंस व लोन पर ध्यान दें।

श्री विजय कुमार
स.लेखापरीक्षा अधिकारी,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

<u>कार्यरत महिला: "दो मोर्चों की विजेता"</u>

सुबह के पाँच बजे थे। अलार्म की मधुर आवाज़ के साथ ही नेहा की आँख खुल गई। बाहर अभी अँधेरा था, लेकिन उसके दिन की शुरुआत हो चुकी थी। वह एक राष्ट्रीयकृत बैंक में सहायक प्रबंधक थी। घर में सास-ससुर, पति, आठ वर्ष की बेटी और पाँच वर्ष का बेटा था। परिवार बड़ा था और जिम्मेदारियाँ उससे भी बड़ी।

नेहा ने सबसे पहले रसोई का रुख किया। गैस पर चाय चढ़ाई, बच्चों के टिफिन की तैयारी की, सास-ससुर के लिए नाश्ता बनाया और पति के लिए दोपहर का भोजन पैक किया। इस बीच उसने वॉशिंग मशीन भी चला दी और बच्चों को जगाकर स्कूल के लिए तैयार किया।

सुबह के आठ बजते-बजते घर का अधिकांश काम पूरा हो चुका था। जल्दी-जल्दी स्वयं तैयार होकर वह बस स्टॉप की ओर निकल पड़ी। रास्ते में उसे हमेशा एक ही बात याद आती–

"जो स्त्री घर और कार्यस्थल दोनों का संतुलन साध लेती है, वह केवल परिवार नहीं, पूरे समाज का भविष्य गढ़ती है।"

बैंक पहुँचते ही ग्राहकों की लंबी कतार उसका इंतजार कर रही थी। किसी को ऋण चाहिए था, किसी को पासबुक अपडेट करवानी थी, तो किसी को शिकायत दर्ज करानी थी। दिन भर लगातार काम, लक्ष्य पूरे करने का दबाव और अधिकारियों की बैठकें–सब कुछ उसकी दिनचर्या का हिस्सा था।

एक दिन बैंक में अचानक निरीक्षण की सूचना मिली। सभी कर्मचारी तनाव में थे। नेहा ने धैर्यपूर्वक पूरी टीम का नेतृत्व किया। उसने देर रात तक रुककर आवश्यक फाइलें व्यवस्थित कीं। निरीक्षण सफल रहा और वरिष्ठ अधिकारियों ने उसकी प्रशंसा की।

लेकिन यह सफलता इतनी आसान नहीं थी। कई बार उसे यह भी सुनना पड़ता–

"इतना काम क्यों करती हो? आखिर घर भी तो संभालना है।"

वह मुस्कुराकर कहती–

"घर भी मेरा है और मेरा सपना भी मेरा है। दोनों को साथ लेकर चलना ही मेरी असली सफलता है।"

एक शाम बेटी को तेज बुखार हो गया। उसी दिन बैंक में अत्यंत महत्वपूर्ण बैठक भी थी। नेहा असमंजस में थी। उसने अपने अधिकारी से स्थिति बताई। सौभाग्य से अधिकारी ने उसकी परिस्थिति को समझा और बैठक ऑनलाइन अटेंड करने की अनुमति दे दी।

उस दिन नेहा ने महसूस किया कि कार्यस्थल पर संवेदनशीलता और सहयोग कितना आवश्यक है।

धीरे-धीरे उसने अपने बच्चों को भी आत्मनिर्भर बनाना शुरू किया। बेटी अपना स्कूल बैग स्वयं तैयार करने लगी और बेटा अपने खिलौने समेटना सीख गया। पति ने भी रसोई के छोटे-मोटे कामों में हाथ बँटाना शुरू कर दिया।

नेहा अक्सर कहा करती थी–

"घर तभी घर बनता है, जब जिम्मेदारियाँ केवल एक व्यक्ति की नहीं, पूरे परिवार की होती हैं।"

समाज की सोच

कई रिश्तेदार आज भी कहते–

"इतनी अच्छी नौकरी है, लेकिन बच्चों का क्या?"

नेहा मुस्कुराकर उत्तर देती–

"बच्चों को सबसे बड़ा उपहार केवल समय नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक उदाहरण भी होता है। यदि वे अपनी माँ को मेहनत करते, ईमानदारी से काम करते और सपनों के लिए संघर्ष करते देखेंगे, तो वे भी जीवन में कभी हार नहीं मानेंगे।"

समय बीतता गया। अपनी मेहनत, ईमानदारी और नेतृत्व क्षमता के कारण नेहा की पदोन्नति हुई और वह शाखा प्रबंधक के रूप में चयनित हो गई।

पदोन्नति समारोह में उसने अपने भाषण में कहा–

"यह सम्मान केवल मेरा नहीं है। इसमें मेरे माता-पिता के संस्कार, पति का सहयोग, बच्चों का धैर्य और मेरे सहकर्मियों का विश्वास शामिल है। एक कार्यरत महिला तभी आगे बढ़ सकती है, जब परिवार और समाज उसके साथ खड़े हों।"

पूरा सभागार तालियों से गूँज उठा।

उसकी बेटी, जो पहली पंक्ति में बैठी थी, गर्व से अपनी माँ को देख रही थी। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह भी बड़ी होकर अपने सपनों को कभी अधूरा नहीं छोड़ेगी।

नेहा की कहानी हमें सिखाती है कि कार्यरत महिला केवल वेतन कमाने वाली व्यक्ति नहीं होती; वह एक बेटी, पत्नी, माँ, बहू, सहकर्मी और समाज की प्रेरणा होती है। उसका हर दिन संघर्षों से भरा होता है, लेकिन वह अपने धैर्य, परिश्रम और आत्मविश्वास से हर चुनौती को अवसर में बदल देती है।

"नारी केवल घर की नींव नहीं, राष्ट्र की प्रगति का आधार है। जिस घर में स्त्री के सपनों को सम्मान मिलता है, वहाँ आने वाली पीढ़ियाँ भी ऊँची उड़ान भरती हैं।"

कार्यरत महिला की सफलता केवल उसकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं होती, बल्कि यह उस समाज की प्रगति का प्रमाण होती है जो स्त्री और पुरुष को समान अवसर देता है। आज की नारी यह सिद्ध कर चुकी है कि वह घर और कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए अपने सपनों को भी साकार कर सकती है।

सुश्री साधना सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
मले.(लेप-I) का कार्यालय

नजरिया - जीवन जीने का

कुछ को आनंद है दिखता,

कुछ को दिखती है समस्या।

कुछ का जीवन है रंगमंच,

कुछ की है घोर तपस्या।

कुछ के लिए सब है आसान,

कुछ हैं मुश्किल के मारे।

कुछ खुद में ही संपूर्ण है,

कुछ ढूंढ रहे हैं सहारे।

कुछ के लिए सब गंभीर है,

कुछ के लिए सब मजाक है ।

कुछ में अब भी वो अग्नि है,

कुछ को कर गई वो खाक।

कुछ काम से मोहित रहते हैं,

कुछ को नहीं काम सुहाता।

कोई ज्यादा जानकर तंग है,

कोई कुछ समझ नहीं पाता।

कुछ को लगता कोई कारण है,

कुछ कहते सब अकारण है।

कुछ के लिए सब चमत्कार सा है,

कुछ के लिए सब साधारण है।

हर किसी का अपना नजरिया है,

हर किसी के अलग विचार है।

हर किसी की अलग स्थिति है,

बस जीवन का यही सार है।

श्री कमल नयन प्रसाद
लेखापरीक्षक,
मले.(लेप.-I) का कार्यालय,

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) कार्यालय द्वारा आयोजित एक <u>दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी की कुछ झलकियां</u>

<u>सच्ची दोस्ती</u>

सच्ची दोस्ती का रिश्ता सबसे खास होता है,

पास न होकर भी, वो दिल के पास होता है।

ये वो धागा है जो कभी टूट नहीं सकता,

सच्चा दोस्त कभी अपने दोस्त से रूठ नहीं सकता।

मुश्किल राहों में जो थाम ले हाथ,

वो यार ही निभाता है उम्र भर का साथ।

बिना कहे जो दिल की हर बात समझ जाए,

चेहरे की मायूसी को देख, जो खुद भी उदास हो जाए।

ना कोई शर्त होती है, ना कोई दिखावा होता है,

इस मतलबी दुनिया में, दोस्त ही सबसे सच्चा सहारा होता है।

हंसाने के लिए जो खुद को भी जोकर बना दे,

रोते हुए दोस्त के चेहरे पर भी मुस्कान सजा दे।

"दुआ है रब से कि ये यारी कभी न छूटे,

वक़्त बदले चाहे जमाना, ये बंधन कभी न टूटे।"

बाजार की हर नेमत को मैंने पाकर देख लिया,

पर सुकूँ न मिला कहीं जो तेरे आँचल में मिला।"

श्री प्रसाद पी जोशी
सहायक पर्यवेक्षक
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

मेरा ब्लड ग्रुप- ओ (ओम) पॉजिटिव..!

"मेरे प्यारे दोस्तों, इस कार्यक्रम के लिए यहाँ इकट्ठा हुए आप सभी का मैं सम्मानपूर्वक धन्यवाद करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि भविष्य में ऐसे और भी कार्यक्रम होंगे, उनमें और भी लोग शामिल होंगे।" अपनी बात पूरी करने के बाद, वक्ता ने मंच से दर्शकों का फिर से अभिवादन किया और मंच पर अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

वर्ष 2002 मेरे कॉलेज में आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम अपने आखिरी चरण में था। चूँकि यह मेरे कॉलेज का कार्यक्रम था और पढाई के दौरान और पढाई पूरी करने के बाद भी, कॉलेज के सभी कार्यक्रमों में शामिल होना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार हुआ करता था इसलिए मैं अपने दोस्तों के साथ दर्शकों में बीच वाली लाइन में बैठा और मेरा ध्यान मंच पर हो रही घोषणाओं के बजाय अपने दोस्तों के साथ मौज मस्ती में था।

तभी मेरे पीछे बैठे एक दोस्त ने पूछा, "तेरा ब्लड ग्रुप क्या है?" कॉलेज के रिकॉर्ड और आई डी कार्ड पर लिखवाने के लिए मैंने पहली बार अपना ब्लड टेस्ट करवाया था, मुझे पता था कि मेरा ब्लड ग्रुप O+ है। मुझे लगा मजाक मस्ती में दोस्त अकारण यूँ ही पूछ रहा है, और बिना सोचे जाने मेरा जवाब था- "O+"।

इससे पहले मैं कुछ समझ पाता, अचानक दोस्त ने मेरा एक हाथ पकड़ कर खड़ा कर दिया और जोर से चिल्लाया कि "हाँ, मेरा हैं।" मुझे कोई भी आईडिया नहीं था कि क्या चल रहा हैं और तभी स्टेज से मुझे इशारा करके बुलाया गया। अब जब मेरा हाथ ऊपर था और मेरी तरफ सबकी नज़र थी तो मेरे पास स्टेज पर जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। जब मैं स्टेज पर पंहुचा तब पता चला कि किसी तीन साल के छोटे बच्चे को ब्लड की जरुरत थी, O पॉजिटिव। और उसी के लिए स्टेज से अनाउंसमेंट हो रहा था कि कौन ब्लड डोनेट करना चाहता है?

मैं समझ गया कि उस दोस्त ने मेरे साथ खेल कर दिया है, मुझे फंसा दिया है, ब्लड डोनेशन के लिए, बिना मेरा कंसेंट जाने।

मुझे पता नहीं चल रहा था कि क्या हो रहा हैं और क्यों हो रहा हैं? मेरे दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था, धड़कन भी बहुत तेज हो गयी क्योंकि ब्लड देना एक बहुत बड़ा डर था। न मैंने आज तक ये काम किया और न ही करने का मन था। मैं सोच रहा था कि किसी तरह पीछा छूट जाये । मैं इधर-उधर टालमटोल करने लगा और कहा कि मेरी तबियत ठीक नहीं है, फिर दूसरा बहाना बनाया कि जल्दी क्लास है, फिर एक और बहाना कि घर से बुलावा आया है, पर सारे बहाने फेल।

"अब तो बेटा जाना ही पड़ेगा" ये थी मेरे दिमाग की आवाज़।

मैं टैक्सी में बैठ कर उस बच्चे के पिता के साथ चल दिया। उनका परिवार बहुत ही गरीब था, पिता लगभग 30- 32 वर्ष के थे। बच्चे का नाम विकास था। माँ उस के साथ वहीं अस्पताल में ही थी। विकास जिला अस्पताल में एडमिट था, 30 किलोमीटर दूर कॉलेज से। हालांकि जाने का किराया बच्चे के पिता ने ही दिया । जेब में उस समय फूटी कौड़ी नहीं हुआ करती थी, पर तब भी मैंने जाते हुए एक दोस्त से 50 रुपये उधार लिए थे, यह सोच कर कि किसी गरीब से क्या पैसे लेने?।

जब मैं अस्पताल पंहुचा तो मेरा दिल घबराने लगा, कोई दोस्त भी साथ में नहीं आया था सहारा देने। फिर सोचा कि "ओखली में सिर दिया है तो मूसल से क्या डरना?"

डोनर कार्ड भरते समय डॉक्टर ने सामान्य स्वास्थ्य जांच की, दिल और ब्लड प्रेशर की निगरानी की।

ब्लड सैंपल के लिए फ़्लेबोटोमिस्ट (प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवर होता है जो जाँच, अनुसंधान, रक्ताधान (ट्रांसफ्यूजन) या रक्तदान के लिए मरीजों के शरीर से रक्त (खून) के नमूने एकत्र करता है) ने लेफ्ट हैंड में सुई से सिरिंज में ब्लड लिया और जहाँ से ब्लड लिया वहां पर कॉटन से दबाया। मैं हाथ में कॉटन दबाये उठ कर जाने लगा तो फ़्लेबोटोमिस्ट बोला- किधर भाई ? कहाँ चल दिए?

मैंने बिना सोचे मासूम सा जवाब दिया - "घर, और कहाँ? दिया ना ब्लड?" फ़्लेबोटोमिस्ट हँसते हुए बोला- बिरादर, ये सिर्फ सैंपल हैं।"

मैं हैरान रह गया और कहा- "और कितना लोगे? इतना तो लिया ना ?" वहां खड़े बाकी लोग मेरी बात सुन कर हंस पड़े।

"ये सैंपल टेस्ट के लिए जायेगा, 30 मिनट बाद पता चलेगा कि तुम्हारा ब्लड लेने लायक है भी कि नहीं।" फ़्लेबोटोमिस्ट बोला। "वेट करो।"

मैं एकदम चुप।

टेस्ट रिजल्ट्स आये, सब सही। हीमोग्लोबिन, प्लेटलेट्स, सब एवरेज से ऊपर। फिर मुझे एक चेंबर में डोनर चेयर पर लिटाया और एक मेरे राइट हैंड पर बैंड बाँध कर सुई डाल कर ब्लड बैग में ब्लड लेने

की प्रक्रिया शुरू हुई। ब्लड डोनेशन चेम्बर में बैठते ही एक अजीब-सा ठहराव महसूस हुआ जैसे कुछ बड़ा कर रहा हूँ।

ब्लड देने के बाद मुझे कॉफ़ी या जूस लेने के लिए बोला गया, जिससे थोड़ी एनर्जी मिले। मैं जूस पी कर बाहर आया तो देखा कि बच्चे के माँ पिताजी मेरे आगे हाथ जोड़ कर खड़े थे। एक हल्का सा गर्व महसूस हुआ– इतनी सी बात, और किसी की ज़िंदगी में उम्मीद की किरण जगा देना। हालांकि मेरा ब्लड सीधे उसे नहीं मिलेगा पर मेरे ब्लड के बदले ब्लड बैंक से ब्लड लेकर उस बच्चे को देंगे।

अस्पताल से बाहर निकला तो लगा कि क्या ही कर लिया। दोनों हाथो में बैंड ऐड लगी थी तब भी मैं अपने बालों में उंगलिया फेरते हुए, प्राउड फील करता हुआ, लोगों को अपनी स्माइल से बताते हुए, जताते हुए कि मैंने आज कोई बड़ा काम किया है, वापसी के लिए बाहर निकला, टैक्सी स्टैंड तक पैदल। विकास की माँ मुझे टैक्सी स्टैंड तक छोड़ने आयी, मैं जब टैक्सी में बैठा तो मेरा किराया देने लगी, मैंने कहा- रहने दो दीदी, भांजा हैं वो अपना, इतना तो हक़ बनता है मेरा।

तभी अचानक से मेरा छोटा भाई कहीं से टैक्सी के पास आ खड़ा हुआ। मैंने उससे पूछा- "तू यहाँ कैसे?" तो वो बोला की स्कूल का कोई टेस्ट था वो देने आया था। मुझे विकास की माँ के साथ बात करते देख के उसको थोड़ा संशय हुआ, पता ही नहीं वो क्या कुछ सोचे उससे पहले मैं ही बोल पड़ा कि- "भाई, एक छोटे बच्चे को ब्लड की जरुरत थी, मैं उसे ब्लड देने आया था और ये उसकी माँ हैं। और एक बात कि घर में किसी को नहीं बताना कि मैं ब्लड देने आया था, वरना मम्मी पापा गुस्सा करेंगे।"

दुनिया के कोई भी माँ बाप नहीं चाहते कि उनके बच्चे किसी को कुछ भी बिना मतलब के दे, खासकर ब्लड। औरो के माँ बाप का पता नहीं पर मैं जानता हूँ, कि मेरे घरवाले तो कभी नहीं चाहते कि मैं क्या, परिवार का कोई भी ब्लड डोनेट करें। उनका डर था कि ब्लड डोनेट करने पर मैं कमजोर हो जाऊंगा, तबियत ख़राब हो सकती हैं, चक्कर आने शुरू हो सकते है इत्यादि।

खैर, भाई और मेरी बॉन्डिंग, कवलेंट बॉन्डिंग, यानि भौतिकी का सह-संयोजक बंध था। जैसे हीरे में प्रत्येक कार्बन परमाणु अपने आस-पास के अन्य कार्बन परमाणुओं से मजबूती से जुड़ा होता है ठीक वैसे ही। भाई समझ गया, टेंशन ख़त्म। दोस्त से जो पैसे उधार लिए थे वो किराये के काम आ गए।

मेरा पहला ब्लड डोनेशन इस तरह संपन्न हुआ और उस दिन का असर गहरा रहा। ये समझ आया कि किसी की थोड़ी सी हिम्मत किसी की ज़िंदगी का आधार बन सकती है।

मैंने ब्लड डोनेशन को जीवन का एक हिस्सा बना लिया। हर छह महीने पर दान करना, और अपने घर, कॉलेज और काम के साथियों में लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया। ऑफिस में, सोसाइटी में दोस्तों को, रिलेटिव्स को किसी को भी जब ब्लड लगे तो मैं पीछे नहीं हटता। अब तो मुझे याद ही नहीं कि मैंने आज तक कितनी बार ब्लड डोनेट किया हैं। मैंने कैंपस में रक्तदान शिविरों का आयोजन किया, हर किसी को समझाया कि रक्तदान केवल एक दान नहीं, एक ज़िम्मेदारी और मानवता का परिचय

है। एक ब्लड डोनर्स का ग्रुप भी है जहा जरुरतमंद अपनी सुविधा के हिसाब से जरुरत पड़ने पर रिक्वेस्ट भी कर सकते हैं और ब्लड डोनेट कर सकते है।

रक्तदान केवल मानवीयता का काम नहीं है, बल्कि इससे दाता को भी अनेक लाभ होते हैं:

- दाता के स्वास्थ्य पर लाभ: नियमित दान से लोहे (केरिटिन) का स्तर नियंत्रित रहता है, जिससे लौह-आधारित समस्याओं का ख़तरा कम होता है; डोनर का हृदय स्वास्थ्य बेहतर रहता; नियमित जांच के दौरान छोटी-छोटी स्वास्थ्य समस्याएँ भी समय रहते पकड़ में आ जाती हैं।
- मनोवैज्ञानिक लाभ: किसी की जान बचाने का संतोष और आत्मसंतुष्टि, आत्मविश्वास में वृद्धि और समाज में सकारात्मक पहचान बनती है।
- प्राप्तकर्ता के लिये लाभ: रक्त का तत्काल उपलब्ध होना जीवन बचाने में सहायक साबित होता है, विशेषकर दुर्घटना, सर्जरी और प्रसव जटिलता में रक्त संक्रमण से बचाव सुनिश्चित होता है जब सुरक्षित स्रोत से रक्त मिलता है। उपयुक्त रक्त मिलने से ऑपरेशन और उपचार सफल होते हैं, रोगसूचकता और मृत्यु दर घटती है।
- सामाजिक लाभ: एक दाता के कारण आपातकालीन स्थिति में जल्दी उपलब्धता बढ़ती है, रक्त बैंक सजग रहते हैं, और समुदाय में सहकारिता की भावना मजबूत होती है।
- देशहित: पर्याप्त रक्त उपलब्धता से दुर्घटनाओं, प्रसव जटिलताओं और आपातकालीन सर्जरी में जीवन रक्षा संभव होती है; राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा बढ़ती है और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्राइसिस से निपटने की क्षमता मजबूत होती है।

यह कहानी याद दिलाती है कि कभी-कभी किसी का एक छोटा सा मजाक, इंसान की जिंदगी बदल सकता है।

अब कोई भी मेरा ब्लड ग्रुप मुझसे पूछता है तो मैं कहता हूँ,

मेरा ब्लड ग्रुप- ओ (ओम) पॉजिटिव।

श्री ओम कुमार अड़लक
व.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

पापा, आप मेरी ताकत हैं

पापा, आप हर सुबह उठते हैं, मेरे सपनों के लिए मेहनत करते हैं।

अपने चेहरे की थकान छुपाकर, मेरी मुस्कान में अपनी खुशी ढूँढते हैं।

आप अपने लिए कम सोचते हैं, मेरे लिए हर पल आगे बढ़ते हैं।

मेरी छोटी-सी खुशी के लिए भी, आप बड़े-बड़े त्याग करते हैं।

आपकी हथेलियों की कठोरता में, मेरे भविष्य की कोमल तस्वीर है।

आपके माथे के पसीने की हर बूंद में, मेरी सफलता की एक उम्मीद है।

जब मैं डर जाती हूँ, आप मेरा हौसला बन जाते हैं।

जब मेरी आँखों में आँसू आते हैं, आप बिना कहे सब समझ जाते हैं।

आप कहते हैं, "बेटी, तुम कर सकती हो," और मेरे अंदर विश्वास जग जाता है।

आपका एक छोटा-सा भरोसा भी, मुझे हर मुश्किल से लड़ना सिखाता है।

आप अपनी परेशानियाँ छुपाते हैं, ताकि मेरे चेहरे की मुस्कान बनी रहे।

आप खुद दर्द सह लेते हैं, ताकि मेरी दुनिया खुशियों से भरी रहे।

पापा, आप सिर्फ़ मेरे पिता नहीं, मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा हैं।

मेरी हर जीत के पीछे, आपकी मेहनत और दुआएँ हैं।

मैं जानती हूँ, आपका प्यार शब्दों में नहीं समाता।

क्योंकि पिता का प्रेम वह एहसास है, जो हर दिन बिना कहे जताता है।

पापा, मैं आपकी बेटी हूँ, और यही मेरी सबसे बड़ी पहचान है।

मेरी हर साँस में आपका विश्वास, मेरी हर खुशी में आपका नाम है।

सुश्री काजल
लेखापरीक्षक,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

डॉ. अंबेडकर का मज़दूर और कर्मचारियों के लिए योगदान

समाज के प्रति डॉ. अंबेडकर का योगदान बहुत बड़ा है, लेकिन लगभग सभी लोग डॉ. अंबेडकर की मजदूर नेता के रूप में भूमिका को नजरअंदाज करते हैं। नवंबर 1937 में श्रम विभाग की स्थापना की गई और जुलाई 1942 में डॉ. अंबेडकर ने श्रम विभाग संभाला। सिंचाई और बिजली के विकास के लिए नीति निर्माण और योजना बनाना मुख्य चिंता का विषय था। डॉ. अंबेडकर के मार्गदर्शन में श्रम विभाग ने ही बिजली प्रणाली विकास, पनबिजली स्टेशन स्थलों, जलविद्युत सर्वेक्षणों, बिजली उत्पादन की समस्याओं का विश्लेषण और थर्मल पावर स्टेशन जांच के लिए "केंद्रीय तकनीकी विद्युत बोर्ड" (CTPB) की स्थापना करने का निर्णय लिया। अगर भारत में मजदूरों के अधिकारों को सुरक्षित करने वाला कोई एक व्यक्ति है, तो वह कोई और नहीं बल्कि बाबासाहेब अंबेडकर थे।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के बिना, आज भारत के मजदूरों का भविष्य अंधकार में होता। वे भारत के एकमात्र ऐसे नेता हैं जो बहुआयामी और महान दूरदर्शी थे। तथाकथित निम्न सोच के लोगों ने एक महान राष्ट्र के निर्माण में डॉ. अंबेडकर के योगदान को कभी श्रेय नहीं दिया, जो आज दुनिया की सबसे बड़ी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। यह सब केवल डॉ. अंबेडकर की मजबूत आर्थिक नीतियों के कारण संभव हो पाया है, जिन्होंने भारत को बड़ी आर्थिक मंदी के दौर में भी बचाया है। चाहे वह आरबीआई के संस्थापन के दिशा-निर्देश हों या अर्थव्यवस्था के किसी अन्य पहलू को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत। **"यह डॉ. अंबेडकर ही थे जिन्होंने भारत में 8 घंटे का कार्य दिवस लागू किया, तथा इसे 14 घंटे से कम किया।** उन्होंने इसे 27 नवंबर, 1942 को नई दिल्ली में भारतीय श्रम सम्मेलन के 7वें सत्र में अपनाया।" सभी कर्मचारियों को डॉ. अंबेडकर का आभारी होना चाहिए, खासकर महिला कर्मचारियों को, क्योंकि डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने भारत में महिला कर्मचारियों के लिए कई कानून बनाए जैसे कि **'खान मातृत्व लाभ अधिनियम', 'महिला श्रम कल्याण कोष', 'महिला और बाल श्रम संरक्षण अधिनियम', 'महिला श्रमिकों के लिए मातृत्व लाभ'** और 'कोयला खदानों में भूमिगत काम पर महिलाओं के रोजगार पर प्रतिबंध की बहाली'।

अगर आप अपनी कंपनी द्वारा स्वास्थ्य बीमा प्रदान किए जाने से खुश हैं, तो इसका श्रेय डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर को जाना चाहिए। कर्मचारी राज्य बीमा (ईएसआई) श्रमिकों को चिकित्सा देखभाल, चिकित्सा अवकाश, काम के दौरान लगी चोटों के कारण होने वाली शारीरिक विकलांगता, कामगारों के मुआवजे और विभिन्न सुविधाओं के प्रावधान में मदद करता है। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने इसे श्रमिकों

के लाभ के लिए अधिनियमित किया और अमल में लाए। भारत पूर्वी एशियाई देशों में कर्मचारियों की भलाई के लिए बीमा अधिनियम लाने वाला पहला देश था।

'महंगाई भत्ते' (DA) में हर वृद्धि से जो आपके चेहरे पर मुस्कान लाती है, आपका डॉ. अंबेडकर को धन्यवाद देने का भी अवसर होना चाहिए। अगर आपको 'अवकाश लाभ' मिल रहा है, तो डॉ. अंबेडकर को नमन करें। अगर 'वेतनमान संशोधन' आपको खुश करता है, तो डॉ. अंबेडकर को याद करें।

'कोयला और अभ्रक खान भविष्य निधि' के लिए डॉ. अंबेडकर का योगदान भी महत्वपूर्ण था। उस समय, कोयला उद्योग हमारे देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने 31 जनवरी, 1944 को श्रमिकों के लाभ के लिए **कोयला खान सुरक्षा (भंडारण) संशोधन विधेयक** पारित किया। 8 अप्रैल, 1946 को, उन्होंने **'अभ्रक खान श्रम कल्याण निधि'** की स्थापना की, जिसने श्रमिकों को आवास, जल आपूर्ति, शिक्षा, मनोरंजन और सहकारी व्यवस्था में मदद की। इसके अलावा, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने बी.पी. आगरकर के मार्गदर्शन में 'श्रम कल्याण निधि' से उत्पन्न होने वाले महत्वपूर्ण मामलों पर सलाह देने के लिए एक सलाहकार समिति का गठन किया। बाद में उन्होंने इसे जनवरी, 1944 में लागू किया।

वायसराय की परिषद के श्रम सदस्य के रूप में, डॉ. अंबेडकर ने श्रमिकों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कार्यक्रम शुरू किए, उन्हें शिक्षा और नौकरी बेहतर ढंग से करने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण कौशल प्रदान करके, महिला श्रमिकों के लिए स्वास्थ्य देखभाल और मातृत्व अवकाश का प्रावधान प्रदान करके। डॉ. अंबेडकर ने श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा उपायों की रक्षा के लिए 1942 में 'त्रिपक्षीय श्रम परिषद' की स्थापना की, जिससे श्रमिकों और नियोक्ताओं को श्रम नीति के निर्माण में भाग लेने का समान अवसर मिला।

श्री रंजन कुमार
लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

<u>याद आए मुझको माँ के हाथ</u>

जब भी जीवन में आई रात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

माथे पर जब चिंता छाती,
धीरे-धीरे लकीरें मिटाती,
दुख को देती मीठी मात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

रोटी में जो स्वाद समाया,
प्यार ने उसमें घर बनाया,
नहीं कहीं वैसी सौगात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

बचपन में जब गिर जाता था,
रो-रोकर घबरा जाता था,
देते थे मुझको हिम्मत साथ,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

खुद भूखी रहकर भी अक्सर,
भर देती थी मेरा थाल भर,
प्यार की थी वह बरसात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

समय बदलता, लोग बदलते,
अपने भी कई बार बदलते,

पर न बदले उनका जज़्बात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

अब जब जीवन की दौड़ में हूँ,
भीड़ भरे इस शोर में हूँ,
ढूँढूँ हर पल वही करामात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

न धन-दौलत, न कोई ताज,
उनसे बढ़कर क्या है आज,
ईश्वर का सबसे सुंदर प्रातः,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

जब भी जीवन में आई रात,
याद आए मुझको माँ के हाथ।

श्री प्रशांत शर्मा
स.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

ऑडिट दिवस 2025 की कुछ झलकियां

Audit Diwas 2025
TYKA

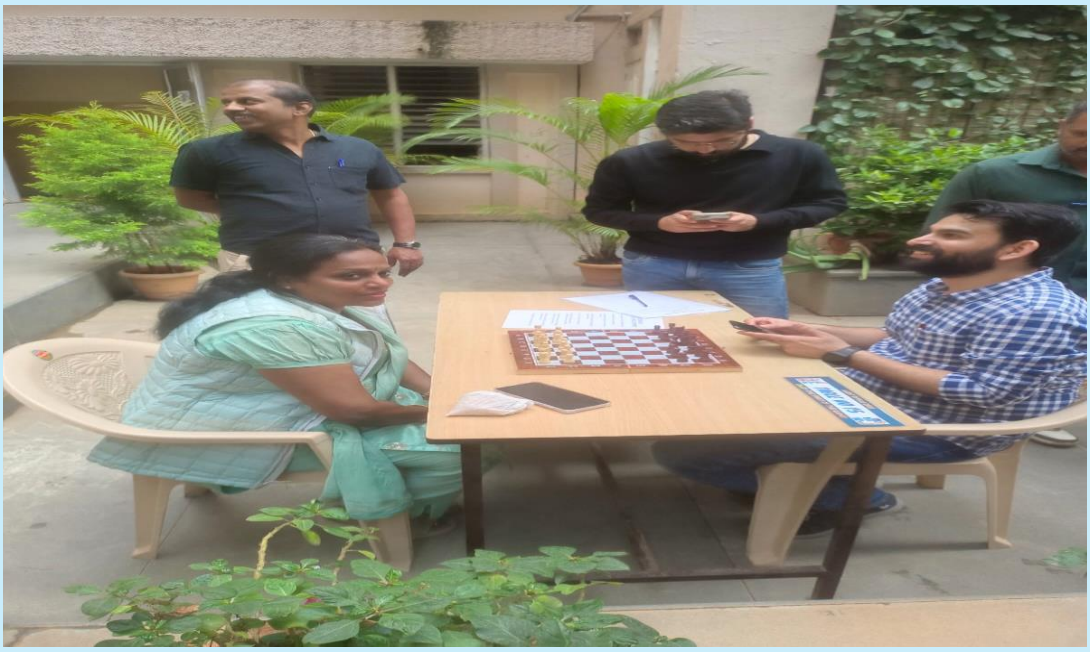

वक्त की रेत: हाथ से फिसलता जीवन

समय ब्रह्मांड की वह अदृश्य शक्ति है, जिसे न तो कोई बांध सका है और न ही कोई पीछे मोड़ सका है। जीवन की तुलना अक्सर 'रेत की घड़ी' से की जाती है। जिस प्रकार मुट्ठी में भींची गई रेत धीरे-धीरे छिद्रों से फिसल जाती है, ठीक उसी प्रकार हमारा जीवन भी समय की उंगलियों से हर पल फिसल रहा है। हम चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, हम बीतते हुए पल को थाम नहीं सकते। बचपन, जवानी और फिर बुढ़ापा—ये केवल उम्र के पड़ाव नहीं हैं, बल्कि वक्त की उस निरंतर यात्रा के साक्ष्य हैं, जो बिना रुके अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रही है।

मानव स्वभाव की यह सबसे बड़ी विडंबना है कि वह हमेशा 'कल' में जीता है। विद्यार्थी सोचता है कि परीक्षा के बाद वह जी भरकर जिएगा, युवा सोचता है कि करियर सेट होने के बाद वह खुशियाँ मनाएगा, और बुजुर्ग सोचते हैं कि रिटायरमेंट के बाद वे शांति से रहेंगे। इस 'कल' के चक्कर में हमारा 'आज' बलि चढ़ जाता है। हम उस वक्त की प्रतीक्षा करते रहते हैं जो शायद कभी आता ही नहीं, क्योंकि जब वह पल आता है, तब तक समय की रेत बहुत आगे निकल चुकी होती है।

हम धन कमाने में इतना समय लगा देते हैं कि उस धन का आनंद लेने के लिए हमारे पास समय ही नहीं बचता। यह भूल जाना कि समय ही असली पूंजी है, जीवन की सबसे बड़ी चूक है। बैंक में जमा पैसा बढ़ाया जा सकता है, लेकिन उम्र की बैंक से जो साँसें हर रोज कम हो रही हैं, उन्हें दोबारा जमा नहीं किया जा सकता।

समय की कमी का सबसे गहरा प्रभाव हमारे रिश्तों पर पड़ता है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमारे पास अपनों के लिए 'वक्त' नहीं है। माता-पिता बच्चे के बड़े होने का इंतज़ार करते हैं ताकि वे उनके साथ समय बिता सकें, लेकिन जब तक उनके पास समय होता है, बच्चा अपनी दुनिया में व्यस्त हो चुका होता है। दोस्तों के साथ बिताए गए वे सुनहरे पल, जिन्हें हम 'कल' पर टाल देते हैं, धीरे-धीरे यादों की धुंध में खो जाते हैं।

सच्चाई यह है कि रिश्ते केवल प्रेम से नहीं, बल्कि समय देने से फलते-फूलते हैं। वक्त की रेत जब रिश्तों के बीच से फिसलती है, तो पीछे केवल पछतावा छोड़ जाती है। किसी अपने के जाने के बाद

यह सोचना कि "काश! मैंने उनके साथ थोड़ा और समय बिताया होता," दुनिया का सबसे भारी बोझ होता है। इसलिए, समय रहते संवाद और साथ की अहमियत को समझना अनिवार्य है।

अक्सर हम सफलता को केवल पद और प्रतिष्ठा से मापते हैं। लेकिन क्या वह सफलता वास्तव में सफल है जिसके लिए आपने अपने जीवन के सबसे कीमती वर्ष खो दिए? समय का सही प्रबंधन (Time Management) केवल कार्यों की सूची बनाना नहीं है, बल्कि यह तय करना है कि आपके जीवन में प्राथमिकताओं का स्थान क्या है।

समय हमें सिखाता है कि हर चीज़ का एक मौसम होता है। यदि आप सही समय पर सही कार्य नहीं करते, तो अवसर की वह रेत दोबारा आपके हाथ नहीं आएगी। इतिहास गवाह है कि जिन्होंने समय की कद्र की, समय ने उन्हें अमर कर दिया, और जिन्होंने समय को बर्बाद किया, समय ने उन्हें भुला दिया। जीवन का हर एक सेकंड एक नया अवसर है, जिसे यदि पकड़ लिया जाए तो इतिहास रचा जा सकता है, और यदि छोड़ दिया जाए तो वह केवल एक खोया हुआ मौका बनकर रह जाता है।

मशीनी जीवन जीते हुए हम अक्सर खुद से मिलना भूल जाते हैं। हम भीड़ का हिस्सा तो हैं, लेकिन अपने ही अस्तित्व से दूर हैं। वक्त की इस भागदौड़ में एक पल ठहरकर यह सोचना ज़रूरी है कि क्या हम वास्तव में 'जी' रहे हैं या सिर्फ 'जीते चले जा रहे हैं'?

प्रकृति हमें समय की कीमत बहुत खूबसूरती से सिखाती है। उगते हुए सूरज और ढलती हुई शाम के बीच का जो अंतराल है, वही जीवन है। यदि हम खिलते हुए फूलों की सुगंध, चिड़ियों की चहचहाहट और बहती हवा के स्पर्श को महसूस नहीं कर पा रहे, तो समझ लीजिए कि जीवन की रेत बहुत तेज़ी से फिसल रही है। आत्म-साक्षात्कार वह क्षण है जहाँ हम समय को रोकने की कोशिश नहीं करते, बल्कि हर पल को पूरी सजगता के साथ जीना सीखते हैं।

अंततः, हमें यह स्वीकार करना होगा कि हम वक्त के स्वामी नहीं, बल्कि उसके यात्री हैं। रेत तो फिसलेगी ही, क्योंकि यही उसका गुण है। बुद्धिमानी उसे मुट्ठी में कैद करने में नहीं, बल्कि उस फिसलती हुई रेत के बीच अपने जीवन के हर पल को सार्थक बनाने में है।

अपनी खुशियों को 'कल' पर मत टालिए। जो कहना है आज कहिये, जो करना है आज कीजिये, और जिससे प्यार करना है उसे आज बताइये। जीवन की सार्थकता इस बात में नहीं है कि आपने कितने साल जिए, बल्कि इस बात में है कि उन सालों में आपने कितनी 'ज़िंदगी' जी। जब जीवन की अंतिम घड़ियाँ करीब हों, तो मन में यह संतोष होना चाहिए कि वक्त की रेत फिसली ज़रूर, लेकिन वह मेरे जीवन के अनुभवों को और भी गहरा और सुनहरा कर गई।

"वक्त को जिसने नहीं समझा, उसे मिटना पड़ा है,
बच गया तलवार से तो, फूल से कटना पड़ा है।"

श्री प्रसाद पी जोशी
सहायक पर्यवेक्षक
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

बिल्ली स्नोवी (Snowy), एक डर... और एक राहत की कहानी

पालतू जानवरों के साथ छोटी-सी घटना भी कभी-कभी बड़ी चिंता का कारण बन जाती है। Snowy की कहानी इसी का उदाहरण है। एक दिन उसने गलती से पिस्ता का छिलका निगल लिया। शुरुआत में सब सामान्य लगा, लेकिन थोड़ी देर बाद उसकी सुस्ती ने डर पैदा कर दिया कि कहीं यह छिलका पेट में फँस तो नहीं गया। तुरंत उसे डॉक्टर के पास ले जाया गया, जहाँ ब्लड टेस्ट, X-ray और बोरियम टेस्ट किए गए। डॉक्टर ने बताया कि बोरियम की मूवमेंट से ही पता चलेगा कि कोई रुकावट है या नहीं।

रात चिंता में बीती, लेकिन जब Snowy ने पेशाब और स्टूल पास किया तो पहली राहत मिली – इसका मतलब था कि रास्ता बंद नहीं है। अगले दिन X-ray में भी बोरियम आगे बढ़ता दिखा। डॉक्टर ने Flagyl दी, जिससे वह और नींद में लगने लगी, लेकिन धीरे-धीरे पानी पीना, हमें देखना और थोड़ा-थोड़ा खाना शुरू करना उसके रिकवरी का संकेत था। उसने क्रीमी ट्रीट और उबला चिकन खाया और आराम से सो गई – इस बार नींद कमजोरी की नहीं बल्कि ठीक होने की थी।

इस अनुभव ने सिखाया कि घबराने से बेहतर है धैर्य रखकर ध्यानपूर्वक ऑब्ज़र्व करना। अगर पालतू पानी पी रहा है, स्टूल पास कर रहा है और उल्टी नहीं कर रहा है, तो अक्सर शरीर खुद ठीक हो जाता है। हर बार इंजेक्शन या दवा जरूरी नहीं होती, खासकर जब हाइड्रेशन बना हुआ हो। सबसे अहम बात यह कि X-ray से ज्यादा पालतू का व्यवहार असली स्थिति बताता है।

साथ ही, पालतू जानवरों को खासकर गर्म मौसम में पर्याप्त पानी देना बेहद जरूरी है। मेरी बिल्ली Snowy सीधे पानी नहीं पीती, बल्कि खाने के साथ ही लेती है। इसलिए मैं उसके वेट फूड में

पानी मिलाकर देता हूँ ताकि उसकी पानी की ज़रूरत पूरी हो सके। लेकिन मुझे यह एहसास देर से हुआ कि गर्मियों में ड्राई फूड देना सही नहीं होता, क्योंकि उसे पचने में ज्यादा समय लगता है और उल्टी का कारण बन सकता है। इसी वजह से Snowy को ड्रिप, कई X-ray और बोरियम टेस्ट से गुजरना पड़ा और उसका लगभग 50 ग्राम वजन भी कम हो गया। इस अनुभव से मैंने सीखा कि गर्मियों में ड्राई फूड से बचना चाहिए और वेट फूड में पानी मिलाकर देना चाहिए ताकि पालतू का हाइड्रेशन स्तर सही बना रहे।

Snowy की रिकवरी ने यह समझाया कि पालतू जानवरों की देखभाल में प्यार जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है धैर्य। सही समय पर वेट (vet) को दिखाना और शांत रहकर स्थिति को समझना ही असली देखभाल है।

श्री विजय कुमार
स.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

<u>जाने कहां गए वो दिन...?</u>

यहां मंहगाई बहुत है, यहां ट्रैफिक बहुत ज्यादा है, जिंदगी तो जैसे दौड़ते हुए ही बीत रही है। यहां की भाषा सीखनी भी थोड़ी कठिन है। फिर भी यहां से लौट कर जाने का मन नहीं करता क्योंकि यहां का मौसम बहुत अच्छा है। पढ़कर आप एक बार मे समझ गए होंगें कि ये कहां की बात हो रही है? जी हां, सही पकड़े हैं- ये है हम सभी का प्यारा बैंगलोर। बैंगलोर में सिर्फ एक ही मौसम होता है- सुहावना मौसम। लेकिन लगता है, इस मौसम को पूरे देश की नज़र लग गई है। गर्मी ने बैंगलोर में दस्तक देनी शुरु कर दी है और अब कहानी बदल गई है।

मैं 2012 की सर्दियों में पहली बार बैंगलोर आई थी। बिहार और दिल्ली की कड़कड़ाती शीतलहर को झेलते हुए अपनी पहली नौकरी का नियुक्ति पत्र लिये बैंगलोर में मेरा आगमन हुआ। मन में डर था- नया शहर, नएलोग। इनके बीच अकेले ही अपनी शुरुआत करनी थी। एयरपोर्ट से बाहर आते ही सफेद रंग के रूई जैसे बादलों ने हल्की गुनगुनी धूप के साथ मेरा स्वागत किया। मैं स्तब्ध थी। दिसंबर में पहली बार मैंनें बिना गर्म कपड़ों के खुली हवा मे सांस ली। बस उसी दिन, उसी क्षण मैंने ठान लिया कि इस जगह को छोड़कर वापस नहीं जाना, क्योंकि यहां का मौसम बहुत अच्छा है। जब गर्मियों का मौसम आया, तब भी कुछ नहीं बदला। पानी पीने के लिए फ्रिज तो क्या, मटके की भी जरुरत कभी महसूस नहीं हुई। कूलर और ए.सी. तो बहुत दूर की बात थी, पंखा भी रात को सोते समय कंबल ओढ़नेके बाद ही चलता था। जी हां-कंबल। जून-जुलाई में भी हम कंबल ओढ़ा करते थें। आठ दस साल तो मैंने और मेरे जैसे कईयों ने उबलती गर्मी और कड़कती सर्दी में भारत के अन्य प्रदेशों, खासकर उत्तर भारत में बसे अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को बैंगलोर का मौसम सुना - सुना कर जलाने मे खर्च कर दिए। शायद हमें उनकी ही हाय लग गई। पिछ्ले दो साल से बैंगलोर भी धीरे - धीरे गर्म होता जा रहा है। यूं तो बैंगलोर में बढ़ते हुए शहरीकरण तथा वनों की सघनता में कमी आने को इस बढ़ती गर्मी का मुख्य जिम्मेदार माना जा सकता है, लेकिन आत्मा इस बात को मानने से इनकार नहीं कर पा रही कि ये हम बैंगलोर वासियों पर पड़ी बुरी नज़र का

साया है। अजीब सी हालत हो गई है। घने काले बादलों को देखकर हम भी लगान के भुवन की तरह नाच उठते हैं, लेकिन बादल हमें चिढ़ाकर भाग जाते है। जब कभी बारिश के लिए प्रार्थना की, दो दिन ऐसी बारिश होती है कि पूरा शहर डूब जाए, वापस से वही गर्मी आ जाती है।

फिर भी हम बैंगलोर वासियों का विश्वास इस कदर मजबूत है कि हम रोज ए.सी. खरीदने का प्लान बनाते हैं, लेकिन अंत मे कहते हैं- छोड़ो, एक दो दिन में मौसम ठंडा हो ही जाएगा, क्यों पैसे बर्बाद करना । अंततः इस चर्चा का अंत एक गरम फिल्टर कॉफ़ी की गिलास से होता है, इस उम्मीद में कि ये बैंगलोर है, देर सबेर इसे अपने असली मौसम की याद आ ही जाएगी और हमारा बैंगलोर फिर से पूरे साल के लिये "सुहावना बैंगलोर" बन जाएगा।

सुश्री आरती प्रिया दर्शिनी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

भागदौड़ में खोया हुआ जंगल

एक समय की बात है, दूर पहाड़ियों और नदियों के बीच एक विशाल, सुंदर और हरा-भरा जंगल था। उस जंगल में हर प्रकार के जीव-जंतु रहते थे। सुबह होते ही जंगल में हलचल शुरू हो जाती। बंदर पेड़ों से छलांग लगाते, हिरण तेज़ी से दौड़ते, पक्षी आसमान में उड़ते और हाथी भारी लकड़ियाँ उठाने में लग जाते। ऐसा लगता मानो पूरा जंगल किसी अदृश्य दौड़ का हिस्सा हो।

हर किसी के पास काम था, सपने थे और कुछ बड़ा हासिल करने की चाह थी। लेकिन इस भागदौड़ में किसी के पास खुद के लिए समय नहीं था। सभी केवल आगे बढ़ना चाहते थे। कोई रुककर यह नहीं सोचता था कि वे क्यों दौड़ रहे हैं और कहाँ पहुँच रहे हैं। जंगल में अब पहले जैसी हँसी और अपनापन कम होता जा रहा था।

उसी जंगल के एक शांत कोने में एक बूढ़ा कछुआ रहता था, जिसका नाम था "धीरेश"। वह बाकी जानवरों से बिल्कुल अलग था। न वह तेज़ दौड़ सकता था, न ऊँची छलांग लगा सकता था। लेकिन उसके चेहरे पर हमेशा एक गहरी शांति रहती थी। हर सुबह वह झील के किनारे बैठकर ध्यान करता और प्रकृति को निहारता रहता।

धीरेश को जंगल का हर जीव अजीब समझता था। कुछ जानवर कहते, "इतना धीमा होकर कोई कैसे खुश रह सकता है?" लेकिन धीरेश कभी किसी की बात का बुरा नहीं मानता। वह बस मुस्कुराकर कहता, "जो खुद को समझ लेता है, वही सच्चा सुख पाता है।"

एक दिन बंदर ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "अरे धीरेश! तुम हर दिन यहाँ बैठे-बैठे क्या करते रहते हो? देखो दुनिया कितनी तेज़ी से आगे बढ़ रही है और तुम हो कि बस आँखें बंद करके बैठे रहते हो!"

धीरेश मुस्कुराया और बोला, "मैं रुका नहीं हूँ मित्र, मैं अपने भीतर की यात्रा कर रहा हूँ।"

बंदर उसकी बात सुनकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। बाकी जानवरों ने भी उसकी बात को मज़ाक समझा। उनके लिए जीवन का मतलब था—ज्यादा काम, ज्यादा दौड़ और ज्यादा उपलब्धियाँ।

दिन बीतते गए और जंगल की भागदौड़ बढ़ती गई। सभी जानवर अपने काम में इतने व्यस्त हो गए कि वे एक-दूसरे से बात तक कम करने लगे। पहले जहाँ शाम को सब मिलकर गीत गाते और कहानियाँ सुनते थे, अब वहाँ केवल थकान और चिंता दिखाई देती थी।

धीरेश यह सब चुपचाप देखता रहता। वह जानता था कि लगातार भागने वाला मन एक दिन थक ही जाता है। लेकिन कोई उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था।

एक दिन जंगल में रहने वाली छोटी गिलहरी “चिंकी” धीरेश के पास आई। वह उदास थी। उसने कहा, “मैं पूरे दिन भागती रहती हूँ, फिर भी मुझे खुशी नहीं मिलती। ऐसा क्यों?”

धीरेश ने प्यार से कहा, “क्योंकि तुमने अपने मन को आराम देना भुला दिया है। केवल शरीर को नहीं, मन को भी शांति चाहिए।”

चिंकी ने पहली बार किसी की बात ध्यान से सुना। उसने धीरेश के साथ कुछ देर शांत बैठना शुरू किया। कुछ ही दिनों में वह पहले से ज्यादा खुश और शांत महसूस करने लगी।

धीरे-धीरे जंगल के कुछ और छोटे जानवर भी धीरेश के पास आने लगे। वे उसके साथ बैठते, ध्यान करते और अपने मन की बातें साझा करते। लेकिन बड़े जानवर अब भी इसे समय की बर्बादी मानते थे।

फिर एक दिन अचानक जंगल में भयंकर सूखा पड़ गया। कई दिनों तक बारिश नहीं हुई। झील का पानी सूखने लगा, पेड़ों की पत्तियाँ मुरझाने लगीं और छोटे जानवर प्यास से परेशान होने लगे। पूरा जंगल डर और घबराहट से भर गया।

हिरण घबराकर बोला, “हमें तुरंत यह जंगल छोड़ देना चाहिए!”

लोमड़ी बोली, “हमें कोई चालाक योजना बनानी होगी!”

बंदर पेड़ों पर इधर-उधर कूदता हुआ रास्ता ढूँढने लगा। लेकिन जितना वे भागते, उतना ही परेशान होते जाते। किसी को कोई सही रास्ता नहीं मिल रहा था।

उसी समय धीरेश धीरे-धीरे चलता हुआ सबके बीच आया। उसकी आवाज़ शांत थी, लेकिन उसमें आत्मविश्वास था। उसने कहा, “पहले रुकिए... शांत हो जाइए। डर और घबराहट में लिया गया निर्णय अक्सर गलत होता है।”

लेकिन उस समय कोई उसकी बात सुनना नहीं चाहता था। सब अपने-अपने तरीके से समस्या हल करने में लगे रहे। कई दिन बीत गए, पर समाधान नहीं मिला। आखिरकार थककर सभी जानवर धीरेश के पास आए।

धीरेश उन्हें झील के किनारे ले गया। उसने कहा, “अपनी आँखें बंद करो, गहरी साँस लो और अपने मन को शांत करो। जब मन शांत होता है, तभी सही रास्ता दिखाई देता है।”

पहले तो सबको यह अजीब लगा, लेकिन धीरे-धीरे सभी शांत होने लगे। पहली बार उन्होंने अपने भीतर की आवाज़ सुनी। कुछ देर बाद हाथी अचानक बोला, “मुझे याद आया! जंगल के पीछे एक पुरानी नदी बहती थी। अगर हम सब मिलकर उसका रास्ता साफ करें, तो पानी वापस यहाँ आ सकता है।”

सभी जानवरों की आँखों में उम्मीद चमक उठी। अगले ही दिन सबने मिलकर काम शुरू कर दिया। हाथी बड़े पत्थर हटाने लगा, बंदर पेड़ों की शाखाएँ काटने लगे, हिरण मिट्टी हटाने लगे और पक्षी ऊपर से रास्ता दिखाने लगे।

काम करते समय भी अब जानवरों के बीच पहले जैसा झगड़ा नहीं था। वे एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। पहली बार उन्हें समझ आया कि एकता और शांति में कितनी ताकत होती है।

कई दिनों की मेहनत के बाद आखिरकार नदी का पानी फिर से जंगल की ओर बहने लगा। सूखी झील भरने लगी, पेड़ फिर से हरे हो गए और जंगल में जीवन लौट आया। सभी जानवर खुशी से झूम उठे।

उस रात जंगल में एक बड़ा उत्सव मनाया गया। पक्षियों ने मधुर गीत गाए, बंदरों ने नृत्य किया और हाथियों ने पानी की फुहारों से सबका स्वागत किया। लेकिन सबसे ज्यादा खुशी सभी के चेहरों पर ख़ुशी दिखाई दे रही थी।

बंदर धीरेश के पास आया और बोला, “मित्र, अब हमें समझ आया कि हम बाहर की दुनिया में इतने खो गए थे कि अपने अंदर की शांति को भूल बैठे थे।”

धीरेश मुस्कुराया और बोला, “जीवन में काम करना जरूरी है, लेकिन अपने मन और आत्मा को शांत रखना उससे भी ज्यादा जरूरी है। जब भीतर शांति होती है, तभी बाहर की दुनिया सही दिखाई देती है।”

धीरे-धीरे जंगल की दिनचर्या बदल गई। अब हर सुबह कुछ समय सभी जानवर झील के किनारे एकत्र होकर ध्यान करते। उसके बाद ही अपने काम में लगते। इससे वे पहले से ज्यादा खुश और स्वस्थ रहने लगे।

छोटी गिलहरी चिंकी अब दूसरों को भी सिखाती थी कि कैसे कुछ पल शांत बैठने से मन हल्का हो जाता है। जंगल के बच्चे धीरेश की कहानियाँ सुनते और उनसे सीखते कि जीवन केवल जीतने की दौड़ नहीं है।

अब जंगल में केवल भागदौड़ और शोर नहीं था। वहाँ संतुलन, प्रेम और शांति भी थी। और धीरेश कछुआ? वह अब भी झील के किनारे बैठता था–शांत, मुस्कुराता हुआ और सबको जीवन का सही अर्थ सिखाता है।

कई वर्षों बाद भी जब कोई नया जानवर जंगल में आता, तो उसे सबसे पहले धीरेश की कहानी सुनाई जाती। ताकि वह समझ सके कि जीवन में सबसे बड़ी ताकत केवल तेज़ दौड़ना नहीं, बल्कि शांत और संतुलित रहना है।

<u>सीख:</u>

जीवन की दौड़ में खुद को मत खोइए। सफलता जरूरी है, लेकिन मानसिक शांति, धैर्य और आध्यात्मिक संतुलन ही हमें सही दिशा देते हैं।

श्री रामनिवास तोमर
लेखापरीक्षक,
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

माँ का नि:स्वार्थ प्यार

कहा जाता है कि मनुष्य का पहला परिचय संसार से उसकी माँ के द्वारा ही होता है। जब एक शिशु अपनी आँखें खोलता है तो वह दुनिया को नहीं पहचानता, वह माँ की गोद को पहचान लेता है। यही वह स्थान होता है जहाँ उसे सुरक्षा मिलती है, अपनापन मिलता है और बिना किसी शर्त के मिलता है। शायद इसी कारण संसार की लगभग हर संस्कृति में माँ को केवल एक संबंध नहीं, बल्कि जीवन की आधारशिला माना गया है।

प्रेम के अनेक रूप हैं—मित्रता का प्रेम, भाई-बहन का स्नेह, दांपत्य का प्रेम और देश के प्रति प्रेम। इन सभी की अपनी-अपनी गरिमा है, लेकिन माँ का प्रेम इन सबसे अलग दिखाई देता है। इसका कारण यह नहीं कि वह सबसे अधिक भावुक होता है, बल्कि इसलिए कि उसमें अपेक्षा का स्थान बहुत कम और समर्पण का स्थान बहुत अधिक होता है।

एक माँ अपने बच्चे के लिए जो कुछ करती है, उसके पीछे किसी पुरस्कार, प्रशंसा या प्रतिफल की इच्छा नहीं होती। उसका सुख बच्चे की मुस्कान से जुड़ जाता है और उसकी चिंता बच्चे की परेशानी से। माँ बनने के साथ ही एक स्त्री का जीवन बदल जाता है। उसकी प्राथमिकताएँ बदलती हैं, उसकी दिनचर्या बदलती है और कई बार उसके अपने सपने भी पीछे छूट जाते हैं। यह त्याग किसी मजबूरी का परिणाम नहीं होता, बल्कि उस गहरे लगाव का स्वाभाविक रूप होता है जिसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त करना कठिन है। एक छोटे बच्चे की रात भर देखभाल करना, उसकी बीमारी में स्वयं की नींद भूल जाना, उसकी शिक्षा के लिए अपनी इच्छाओं को टाल देना, ये सब ऐसे कार्य हैं जिन्हें माँ सामान्य मानकर करती रहती है। समाज अक्सर इन प्रयासों को "कर्तव्य" कह देता है, जबकि वास्तव में यह असाधारण धैर्य और प्रेम का उदाहरण है। यदि हम अपने बचपन की स्मृतियों में लौटें, तो पाएँगे कि हमारी अनेक आदतों की जड़ हमारी माँ से जुड़ी होती है। पहली बार किसी का अभिवादन करना, भोजन करने का तरीका सीखना, किसी की सहायता करना, सच बोलना, गलती स्वीकार करना या बड़ों का सम्मान करना इनमें से अधिकांश बातें हमें

किसी पुस्तक ने नहीं, बल्कि माँ ने सिखाया है। वह केवल उपदेश ही नहीं देती बल्कि वह अपने व्यवहार से शिक्षा देती है। यही कारण है कि माँ को जीवन की पहली और सबसे प्रभावशाली शिक्षिका कहा जाता है। आज शिक्षा और तकनीक ने समाज को बहुत आगे बढ़ाया है, लेकिन भावनात्मक शिक्षा का महत्व आज भी उतना ही है। एक बच्चा कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, यदि उसमें संवेदनशीलता, सहानुभूति और नैतिकता का विकास नहीं हुआ, तो उसका व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है। इन गुणों की पहली नींव घर में पड़ती है और इस निर्माण में माँ की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। वह बच्चों को केवल सफलता का अर्थ नहीं समझाती, बल्कि यह भी सिखाती है कि सफलता के साथ विनम्रता क्यों आवश्यक है और असफलता के समय धैर्य क्यों नहीं खोना चाहिए।

माँ का निस्वार्थ प्रेम केवल सुख के दिनों में नहीं, बल्कि कठिन समय में सबसे अधिक दिखाई देता है। जब परिवार आर्थिक संकट से गुजरता है, जब किसी सदस्य की तबीयत खराब होती है या जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाती हैं, तब अक्सर माँ सबसे पहले स्वयं को मजबूत बनाती है। वह अपनी चिंताओं को भीतर छिपाकर परिवार के बाकी लोगों को साहस देती है। उसके चेहरे पर मुस्कान बनी रहती है ताकि बच्चों के मन में भय न आए। यही वह शक्ति है जो किसी भी परिवार को टूटने से बचाती है। समय के साथ समाज में माँ की भूमिका भी बदली है। आज की माँ केवल घर की देखभाल करने वाली महिला नहीं है। वह शिक्षक है, डॉक्टर है, वैज्ञानिक है, पुलिस अधिकारी है, व्यवसायी है और अनेक क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही है। वह अपने पेशेवर दायित्वों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। सुबह कार्यालय जाने से पहले बच्चों की तैयारी करना और शाम को लौटकर उनके साथ समय बिताना आसान नहीं होता, फिर भी लाखों माताएँ प्रतिदिन यह जिम्मेदारी निभाती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि माँ का प्रेम समय और परिस्थितियों के साथ अपना रूप बदल सकता है, लेकिन उसका मूल भाव नहीं बदलता। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि माँ का प्रेम केवल लाड़-प्यार तक सीमित नहीं होता। कई बार वही माँ बच्चे को अनुशासन भी सिखाती है। वह उसकी गलतियों पर रोक लगाती है, उसे मेहनत करने के लिए प्रेरित करती है और आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय भी लेती है। उस समय बच्चे को उसका व्यवहार कठोर लग सकता है, लेकिन बाद में वही अनुभव जीवन की सबसे उपयोगी सीख बन जाता है। सच्चा प्रेम हमेशा केवल सुविधा नहीं देता; वह सही दिशा भी देता है।

आज का समय पहले की तुलना में अधिक व्यस्त हो गया है। लोग शिक्षा, नौकरी और व्यवसाय के कारण अपने परिवार से दूर रहने लगे हैं। ऐसे में कई बार माँ-बेटे या माँ-बेटी के बीच बातचीत भी सीमित हो जाती है। यह दूरी केवल भौगोलिक नहीं होती, बल्कि भावनात्मक भी हो सकती है। इसलिए आधुनिक जीवन में माँ के प्रति सम्मान व्यक्त करने का सबसे अच्छा तरीका केवल उपहार देना नहीं, बल्कि उन्हें समय देना है। उनकी बातें सुनना, उनके अनुभवों का सम्मान करना और उनके साथ सहज बातचीत करना किसी भी महँगे उपहार से अधिक मूल्यवान हो सकता है। भारतीय संस्कृति में माँ को सदैव सर्वोच्च सम्मान दिया गया है। बचपन से ही हमें सिखाया जाता है कि माता-पिता का आदर करना केवल सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि नैतिक कर्तव्य भी है। यह सम्मान किसी भय के कारण नहीं, बल्कि उस कृतज्ञता के कारण होना चाहिए जो उनके अथक प्रयासों के प्रति हमारे मन में स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। जिस व्यक्ति

ने बचपन में हमारा हाथ पकड़कर चलना सिखाया, जीवन के उत्तरार्ध में उसका हाथ थामना हमारी जिम्मेदारी है। मुझे लगता है कि माँ के प्रेम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह व्यक्ति की सफलताओं से अधिक उसके अस्तित्व से प्रेम करती है। संसार अक्सर हमारी उपलब्धियों के आधार पर हमारा मूल्यांकन करता है, लेकिन माँ के लिए हमारा महत्व हमारी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि हमारे होने से होता है। यही कारण है कि असफलता के समय सबसे पहले जिस व्यक्ति की याद आती है, वह प्रायः माँ ही होती है। उसकी आवाज़ में एक ऐसा विश्वास होता है जो टूटे हुए आत्मविश्वास को भी फिर से खड़ा कर देता है।

अंततः माँ का निस्वार्थ प्यार केवल एक भावनात्मक विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन की सबसे गहरी सच्चाइयों में से एक है। यह हमें सिखाता है कि प्रेम का वास्तविक अर्थ अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी है अपेक्षा नहीं, बल्कि समर्पण है और शब्द नहीं, बल्कि कर्म हैं। माँ का जीवन हमें यह समझाता है कि महानता हमेशा बड़े कार्यों में नहीं, बल्कि उन छोटे-छोटे त्यागों में छिपी होती है जो प्रतिदिन चुपचाप किए जाते हैं। हम अपने जीवन में चाहे कितनी भी ऊँचाइयाँ क्यों न प्राप्त कर लें, माँ के प्रेम का ऋण कभी पूरी तरह नहीं चुका सकते। हाँ, इतना अवश्य कर सकते हैं कि उनके त्याग का सम्मान करें, उन्हें समय दें, उनकी भावनाओं को समझें और यह एहसास दिलाएँ कि जिस प्रकार उन्होंने हमारे जीवन को संवारने में अपना सर्वस्व लगा दिया, उसी प्रकार हम भी उनके जीवन को सम्मान, स्नेह और अपनत्व से भरने का प्रयास करेंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी और यही माँ के निस्वार्थ प्यार का सबसे सुंदर प्रतिदान भी।

सुश्री काजल
लेखापरीक्षक,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह की कुछ झलकियां

ಹಿಂದಿ ಪಕ್ಷ 2025
हिंदी पखवाड़ा 2025

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) के कार्यालय, बेंगलूरु
दिनांक 14.09.2025 से 28.09.2025 तक

हिंदी पखवाड़ा 2025
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) के कार्यालय, बेंगलूरु
दिनांक 14.09.2025 से 28.09.2025 तक

भाग्यशाली कौन?

शर्मा जी आज दस दिन बाद फिर से अपने घर के सामने बने बगीचे में लगी हुई बेंच पर बैठे थे। तभी बगीचे का चौकीदार आकर बोला 'अरे शर्मा जी आप तो बहुत भाग्यशाली हैं, इतनी बड़ी दुर्घटना में आपको कुछ खरोंचें आई और आपकी सारी विपत्ति बसंल जी अपने ऊपर लेकर इस दुनिया से चल बसे। सच में यह तो किसी चमत्कार से कम नहीं।' यह सब सुनकर शर्मा जी की आँखों से अश्रु की एक धारा निकली और वे गहरी सोच में डूब गए। आज उनकी आँखों के सामने अतीत के दो साल की सारी दिनचर्या एक फिल्म की तरह चल रही थी।

अशोक शर्मा और अनंत बंसल सालों से पड़ोसी थे और दोनों सरकारी विभाग में कार्यरत थे। शर्मा जी जब 50 साल के थे तभी उनकी पत्नी का देहांत हो चुका था और बंसल जी की पत्नी का भी उनकी सेवानिवृत्ति से एक साल पहले स्वर्गवास हो गया था। सेवानिवृत्ति के बाद दोनों के पास भरपूर समय था। दोनों के बच्चे अपने-अपने परिवार में व्यस्त थे, लेकिन समस्या यह थी कि दूर से देखने पर दोनों की खुशहाल एवं सुखी जिंदगी थी जैसे कि आदर्श परिवार, घर, गाड़ी, बंगला, नौकर इत्यादि परंतु यह पहाड़ जैसा समय काटना दोनों के लिए ही बहुत मुश्किल था।

एक दिन शर्मा जी और बंसल जी दोनों ने निर्णय किया घर के सामने बने बगीचे में आने का, बस फिर क्या था दोनों को जीवन जीने का एक नया उद्देश्य मिल गया। दोनों सुबह की सैर के लिए बगीचे में आते, वहाँ उन्हें अन्य बुज़ुर्गों का एक ग्रुप मिल गया था। वे दोनों ग्रुप के साथियों के साथ योग करके वापस अपने घर को जाते और नित्य क्रिया करके अपना दोपहर का खाना लेकर वापस बगीचे में आ जाते। बगीचे में बैठकर माली के साथ खाना खाते, गप्पे लड़ाते और माली की मदद से उन्होंने बगीचे में काफी फलदार वृक्ष लगवाए। वहाँ बैठकर चैस खेलते, चौकीदार से उसकी गाँव की कहानियाँ सुनते फिर शाम को ग्रुप के सभी साथियों के आने पर फिर से हल्का व्यायाम करते, ठहाके लगाते और बगीचे में खेलते हुए अपने पोते-पोतियों पर भी नजर रखते और समय होने पर उन्हें वापस घर ले जाते फिर रात का खाना खा कर वापस रात की सैर पर निकल जाते और सैर पूरी करके घर सोने चले जाते। कुछ इस तरह दोनों की दिनचर्या हो गई थी।

लेकिन कुछ दिन पहले उनके शाम के वॉक वाले एक साथी का एक्सीडेंट हो गया और वे अस्पताल में भर्ती थे। उन्हीं साथी से मिलने शर्मा जी और बंसल जी कैब से अस्पताल जा रहे थे कि बीच में एक ट्रक ने जोरदार टक्कर मारी और उनकी कैब का एक्सीडेंट हो गया। इस हादसे में शर्मा जी

और कैब चालक सकुशल बच गए परन्तु यह हादसा बंसल की जिंदगी लील गया। इसके बाद बंसल जी के घर में कोहराम मच गया या यूं कहे कि शर्मा जी की जिंदगी में कोहराम मच गया। उसी रात उनका अंतिम संस्कार हुआ और फिर शुरू हुआ मृत्यु उपरांत रिवाजों का सिलसिला जिसे बंसल जी के बच्चे समाज के सामने पूरी निष्ठा से निभा रहे थे। इन सब के बीच शर्मा जी बिल्कुल शांत हो गए, उनका जीवन उन्हें कचोटने लगा और हद तो तब हो गई जब वे घर में अपने ही बेटे और बहू के दुश्मन बन गए। उनके बेटे-बहू को उनका घर में रहना अखरने लगा, बात-बात पर वे झगड़ा करने लगते, उन्हें घर पर बैठे रहने वाला आलसी टट्टू बोलने लगे। जब वे नौ वें दिन बंसल जी के घर उनके अंतिम पाठ में गए तो अपने बेटे- बहू के कड़वे वचन सुन उनके पैरों तले जमीन खिसक गई।

उनके बेटे-बहू बंसल जी के बेटे-बहू से कह रहे थे कि आप कितने भाग्यशाली हैं कि उस हादसे में आपके पिताजी की मृत्यु हो गई, अब आप सभी जिम्मेदारियों से मुक्त हो गए और अपना जीवन स्वतंत्रता से जी सकते हैं। काश हमारे पिताजी भी इस हादसे में चले जाते तो कितना अच्छा होता और यह बात सुनकर बंसलजी के निष्ठावान बच्चों के चहरों पर कुटिल मुस्कान आ गई।

यह बात सुनकर शर्मा जी के दिल में एक टीस उठी थी यह वही बेटा है जिसके लिए उन्होंने और उनकी पत्नी ने जीवन-भर त्याग किए। अपनी हैसियत से बढ़कर उसकी पढ़ाई-लिखाई पर खर्चा किया, जिसकी वजह से आज वो इतनी ऊँची मुकाम पर है। पैसा बचाने के लिए वे अपनी पत्नी की तीर्थ यात्रा पर जाने की अंतिम इच्छा को भी पूरा नहीं कर सके। यह वही बेटा है जिसके खरोंच आने पर वे बड़े अस्पतालों के चक्कर लगाने से नहीं चूकते थे, आज वही समाज का आदर्श बेटा उनकी मृत्यु की इच्छा कर रहा है।वर्तमान में वे यही सोच रहे थे कि मैं भाग्यशाली हूँ जो यह कटु सच्चाई सुनने के लिए जीवित रह गए या बंसल जी भाग्यशाली हैं जो इस समाज के कटु अनुभव से इतर रह गए।

सुश्री सोनाक्षी सक्सेना
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
मले. (लेप.-I) का कार्यालय

प्राचीन हिंदी से आधुनिक हिंदी की विकास यात्रा

हिंदी भाषा की उत्पत्ति हजारों वर्ष पूर्व उत्तरी भारत की प्राचीन इंडो-आर्यन भाषाओं में देखी जा सकती है। हिमालय और अरावली जैसी पर्वत शृंखलाओं के किनारे एवं गंगा तथा अन्य इसकी सहायक नदियों के मैदानी इलाकों में अनेकों समुदाय विकसित हो रहे थे, जिनमें पारस्परिक संवाद हेतु सांकेतिक और मौखिक भाषाओं के बाद लिखित रूप में भाषा का विकास हुआ। सर्वप्रथम वैदिक काल में प्राचीन ऋषियों द्वारा वैदिक ग्रंथों की रचना संस्कृत भाषा में की गई। ऐसा माना जाता है कि संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं की जननी है। इसके काफी शब्द जर्मन जैसे यूरोपीय भाषाओं से भी मेल खाते हैं। द्रविड़ तथा पूर्वोत्तर भाषाओं की उत्पत्ति भी संस्कृत से हुई है। वैदिक संस्कृत का उदय 1500 ई. पूर्व ऋग्वेद जैसे ग्रंथों में मिलता है। इसका व्याकरण दुरूह था जिसे कालांतर में विद्वानों ने लौकिक संस्कृत में परिवर्तित किया। अत: जन सामान्य के लिए लौकिक संस्कृत का प्रयोग होने लगा। परंतु जब बौद्ध भिक्षुओं का युग आया तो पाली और प्राकृत का प्रयोग होने लगा। बौद्ध साहित्य पाली तथा प्राकृत भाषा में प्रचुर रूप से मिलता है।

समय बीतने के साथ-साथ संस्कृत अपने लौकिक रूप या शास्त्रीय रूप में विकसित हुई जिसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप में शिक्षा, दर्शन और साहित्य में किया जाता है। बोलियों में विविधता के बावजूद संस्कृत विद्वता और आध्यात्मिकता का प्रतीक बनी रही, फलस्वरूप इसका एक नाम देववाणी भी हुआ। संस्कृत ने अन्य भारतीय भाषाओं के लिए व्याकरणिक ढांचा और अनगिनत शब्दावली प्रदान की है। कालांतर में ये भाषाएं सरलीकरण और अनुकूलन के माध्यम से अवहट्ट और अपभ्रंश के चरणों से गुजरती हुई हिंदी भाषा बनी। यह संस्कृत से अधिक सरल तथा लचीली थी जिसे जनमानस ने अधिक सरलता से ग्रहण किया। उत्तर तथा मध्य भारत में बोली जाने वाली शौरसेनी अपभ्रंश ने आधुनिक हिंदी के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रारंभ में हिंदी पद्यात्मक रूप में दोहों और छंदों में लिखी जा रही थी। इनका प्रमुख विषय धर्म, नीति, उपदेश आदि था। ध्यातव्य रहे कि उसी कालखंड में भारत की जनता आक्रांताओं की क्रूरता से अत्यधिक व्यथित थी। अत: भक्ति काल से पूर्व भी कवियों द्वारा चारण काल में राजाओं की प्रशंसा

आदि में अपभ्रंश तथा अवहट्ट भाषा का भरपूर प्रयोग किया है परंतु इन भाषाओं का कालखंड सीमित था। भक्ति काल में कवि स्वांत: सुखाय के साथ-साथ आम जनमानस में ईश्वर के प्रति निष्ठा, विश्वास एवं सदाचरण पर बल देते थे। भक्तिकाल के पश्चात भारत देश छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटा होने के कारण सामंतवाद युग प्रारंभ हुआ जिसमे छोटे-छोटे राजाओं के यहाँ राज्याश्रित कवियों ने शृंगार रस एवं वीर रस युक्त तथा राजाओं के शौर्य, पराक्रम और स्तुति गान करते रहे।

विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न समाज के कारण पुरानी अपभ्रंश और अवहट्ट आदि में एकरूपता नहीं थी। कुछ रचनाएँ आज की खड़ी बोली के रूप में थी। चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने खड़ी बोली से पहले की रचनाओं को पुरानी हिंदी नाम दिया था। कुछ लोग हिंदी नामकरण पर भी प्रश्न उठाते हैं कि यह नाम विदेशी मुसलामानों द्वारा सिंधु नदी या सिंधु घाटी से उत्पन्न हुआ है।

हिंदी दीर्घकाल से अखंड भारत के जन-जन में पारस्परिक संपर्क की भाषा बनी रही है। आठवीं-नवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने देश के चारों कोनों में यात्रा करके चार मठों की स्थापना की है, जिसका मुख्य उद्देश्य यह था कि धर्म के माध्यम से उत्तर के लोग दक्षिण में एवं दक्षिण के लोग उत्तर में इसी प्रकार पूर्व या पश्चिम में जाकर अपने देश को जानेंगे और भारत की सांस्कृतिक एकता मजबूत करेंगे तथा विचार विनिमय द्वारा धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जड़ों को सुदृढ़ करेंगे। भला सोचिए कि केरल जैसे सुदूर प्रांत से एक संन्यासी निकलकर देश के चारों कोनों में जाकर किसी एक भाषा में ही संपर्क बनाया होगा और अभी भी उत्तर भारतीय लोग दक्षिण में मदुरै, तिरुपति, रामेश्वरम, कन्याकुमारी जाकर आराम से दर्शन करते हैं तथा तमिल-तेलगू भाषी लोग काशी, प्रयाग, मथुरा, अयोध्या में दर्शन करते हैं, किसी को कोई कठनाई नहीं होती है। इसमें संवाद की भाषा हिंदी ही है चाहे टूटी-फूटी ही क्यों न हो। दक्षिण के संतों में स्वामी वल्लभाचार्य, रामानंदाचार्य, रामानुज जैसे महान संतों ने अपने मतों का प्रचार हिंदी में ही किया। इसके अलावा अन्य हिंदीतर राज्यों जैसे असम के शंकरदेव वर्धन, महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत तुकाराम, समर्थ रामदास, गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता, बंगाल के स्वामी चैतन्य महाप्रभु आदि ने हिंदी को ही अपने धर्मप्रचार और साहित्य का माध्यम बनाया था। सिखों के पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब एवं अनेक संत कवियों ने अपनी रचनाएँ हिंदी में की है। कश्मीर के प्रसिद्ध कवि कल्हण ने प्रसिद्ध रचना राजतरंगिणी संस्कृत में की है। हिंदी के प्रसिद्ध कवि भूषण, बिहारी जैसे राजकवि एवं भक्ति काल के प्रसिद्ध कवि सूर, कबीर, रहीम, तुलसी आदि सभी की रचनाएँ हिंदी में हुई है।

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी - सन् 1800 मैं स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता में आधिकारिक रूप से हिंदुस्तानी (हिंदी/उर्दू) की पढ़ाई शुरू हुई। यहां ब्रिटिश विद्वान जॉन गिलक्रिस्ट और लल्लू लाल जैसे विद्वानों ने हिंदी गद्य के विकास और शिक्षण पर काम किया।

18वीं शताब्दी में भगवान कृष्ण की अनन्य भक्त मीरा के पदों का लिखित संकलन इसी काल में हुआ। भरतपुर राज्य तथा पूर्वी राजस्थान के कई राजे-रजवाड़े हिंदी (ब्रजभाषा) में रचनाएँ कर रहे

थे। रीतिकालीन कवि शिरोमणि बिहारी सतसई ने ब्रजभाषा में दोहे आदि की रचना की थी जिसमें शृंगार रस एवं नीतिशास्त्र की प्रचुरता पाई जाती है। कवि भूषण ने वीर शिवाजी और सम्राट छत्रसाल की वीरता और प्रशंसा में अनेकों छंद लिखे। फिर भी हिंदी के विकास में कुछ वर्ष मील के पत्थर की तरह साबित है, जिनका विवरण निम्न है:-

सन् 1826- हिंदी का पहला समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन कलकत्ता (अब कोलकाता) से पंडित युगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित किया गया।

सन् 1829 - महान समाज सुधारक राजा राम मोहन रॉय ने बंगदूत का प्रकाशन हिंदी, बंगला, अंग्रेजी और फारसी भाषा में किया।

सन् 1835 - बिहार में हिंदी आंदोलन शुरू हुआ था, इस तरह के अनवरत प्रयासों और आंदोलनों से 1875 में बिहार के स्कूलों और अदालतों में हिंदी प्रतिष्ठित हुई।

सन् 1872 - आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती कलकत्ता के केशवचंद्र सेन से मिले और उनकी सलाह से वे संस्कृत में बोलना छोड़कर हिंदी में बोलना शुरु किया जिससे भारत की गरीब जनता का कल्याण हुआ और जनता उनके विचारों को समझी। 1875 में उन्होंने अपने विख्यात ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना गुजराती या संस्कृत में न करके **हिंदी** में किया।

सन् 1873 - महेंद्र भट्टाचार्य द्वारा हिंदी में 'पदार्थ विज्ञान' की रचना की।

सन् 1882 - भारतेंदु हरिश्चंद्र जो खड़ी बोली के 'जनक' भी कहे जाते है, वे शिक्षा आयोग (हंटर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही हिंदी में दी और न्यायालयों की भाषा को हिंदी बनाने पर बल दिया।

सन् 1880 के ही दशक में गुजराती के महान कवि 'श्री नर्मद' ने सर्वप्रथम हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव दिया था।

सन् 1893 - काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य हिंदी शब्द संपदा को बढ़ाना तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना था।

सन् 1898 में पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने पश्चिमोत्तर प्रदेश एवं अवध के गवर्नर के समक्ष प्रमाण प्रस्तुत करके देवनागरी लिपि और न्यायालयों में हिंदी भाषा का प्रवेश कराया।

सन् 1907 में न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र द्वारा देवनागरी लिपि में 'देवनागर' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन कराया।

सन् 1916 में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा माँ सरस्वती के प्राकट्य दिवस 4 फ़रवरी 1916 को बसंत पंचमी के दिन बनारस में हिंदी-हिंदू-हिंदुस्तान के उत्थान के लिए 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिसका मूल उद्देश्य हिंदी में शिक्षा देना था।

सन् 1917 में महात्मा गांधी ने गुजरात के भरूच में शैक्षिक सम्मलेन के दौरान अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल देते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं में हिंदी ही एकमात्र भाषा है जिसे भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है।

सन् 1918 में ही महात्मा गाँधी ने दक्षिण भारत में हिंदी को अपनाने एवं प्रचार-प्रसार के लिए मद्रास (अब चेन्नई) में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की स्थापना की, जिससे दक्षिण के सभी राज्यों में हिंदी सहज भाव से अपनाई जा सके। इसी वर्ष मराठी भाषी 'बाल गंगाधर तिलक' ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषणा की कि हिंदी ही भारत की एकमात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा बनने के लायक है।

सन् 1919 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम हिंदी में एम.ए. की पढ़ाई की व्यवस्था तत्कालीन कुलपति सर आशुतोष मुखर्जी के प्रयासों से हुई तत्पश्चात 1922 में हिंदी विभाग की स्थापना हुई और नियमित अध्यापन शुरू हुआ।

सन् 1929 में 'हिंदी शब्द सागर' का प्रकाशन किया गया।

सन् 1930 में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मलेन में स्वीकार किया गया कि देश का अंतरप्रांतीय कार्य राष्ट्रभाषा हिंदी में होना चाहिए। इसी वर्ष शैलेंद्र मेहता द्वारा हिंदी टाइपराइटर का विकास किया गया।

सन् 1935 में मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने अपने राज्य में हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

सन् 1937 में 'हरि गोविन्द गोविल' द्वारा देवनागरी के लिए एक नए टाइप फेस के आविष्कार किया।

इस प्रकार हिंदी का क्रमिक रूप से विभिन्न चरणों में विकास होता रहा और अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में महात्मा गाँधी का नारा **'करो या मरो'** के उद्बोधन से संपूर्ण देश के हर नागरिक में जोश जगा और पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने की आग लगी। देश की सारी जेलें भर गई विदेशी सामानों का बहिष्कार हुआ तब ब्रिटिश शासन को यह अहसास हुआ कि अब अधिक दिनों तक भारत को गुलाम नहीं रखा जा सकता है। अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत ब्रिटिश चंगुल से आज़ाद हुआ। अब सरकार को अपना राजकाज चलाने में किस भाषा का प्रयोग होगा, इस पर गहन विचार-मंथन चला। संविधान सभा के महत्वपूर्ण सदस्यों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए जिसमें कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी (गुजराती भाषी) संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ भीमराव अंबेडकर (मराठी भाषी) और एन गोपाल स्वामी अयंगर (तमिल भाषी) के संयुक्त प्रयास से 14 सितंबर 1949 को एकमत से घोषित की गई। 26 जनवरी 1950 को देश में संविधान लागू किया गया और हिंदी के प्रयोग के लिए प्रारंभिक स्तर पर 15 वर्ष दिए गए तथा इसके प्रयोग हेतु संविधान में अनेकों प्रावधान किए गए। जिसमें अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी के प्रयोग, नीति, जांच-निरीक्षण, विकास, संवर्धन आदि का वृहद वर्णन है। 1963 का

राजभाषा अधिनियम और 1976 के राजभाषा नियम, राजभाषा के सरकारी विकास में मील का पत्थर साबित हो रहे हैं।

आज 77 वर्षों बाद जब पीछे मुड़कर देखें तो यह प्रतीत होता है कि हिंदी नामक बीज अंकुरित होकर एक विशाल वट वृक्ष बन गया है, परंतु अभी भी इसको और अधिक विस्तारित होना है, इसके लिए हम सभी भारतीयों का यह नैतिक और संवैधानिक कर्त्तव्य है कि सभी मिलकर हिंदी के विकास हेतु नित नए दैनंदिन काम करें और हिंदी के प्रति सकारात्मक सोच रखें। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में-

'जिसको न निज गौरव, निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं, नर पशु निरा जीवित मृतक समान है।'

'जय हिंद, जय हिंदी'

श्री देव प्रकाश गुप्ता
सहायक निदेशक (राजभाषा),
मले.(लेप-I) का कार्यालय

पुरानी घड़ी

दीवारों पर टंगी घड़ी,

चुपके-चुपके रोती है,

पहले जैसा घर ये अब

कहाँ किसी का होता है।

पहले आँगन में बच्चों की

आवाज़ें गूँजा करती थीं,

छोटी-छोटी बातों पर ही

शामें हँसकर ढलती थीं।

माँ रसोई में गाती थी,

चूड़ियाँ छन-छन करती थीं,

रोटी की उस खुशबू से ही

पूरी रात महकती थी।

पापा जब घर आते थे,

चेहरे सब खिल जाते थे,

थकान दरवाज़े पर रुकती,

घर में मेले लग जाते थे।

बरसातों की उन रातों में

सब छत पर सो जाते थे,

तारों वाली चादर नीचे

सपने भी मुस्काते थे।

दादी अपनी बातों में

पूरा बचपन लाती थीं,

राजा-रानी की कहानियाँ

नींदों तक ले जाती थीं।

फिर ना जाने वक़्त को

किसकी नज़र लगी ऐसी,

धीरे-धीरे घर के अंदर

खामोशी बसने लगी।

बेटा बोला – "काम बहुत है",

बेटी शहर बदल बैठी,

माँ की आँखों की चमक भी

अब थोड़ी-थोड़ी कम रहती।

पापा अक्सर खिड़की पर

शाम ढले रुक जाते हैं,

हर जाती हुई गाड़ी में

अपने बच्चे पाते हैं।

त्योहारों की वो रौनक भी

अब जल्दी ढल जाती है,

एक दिया तो जलता है पर

रोशनी कम आती है।

माँ अब भी चारों थाली

आदत से रख देती है,

फिर खुद ही चुपके से उनको

आँखों से भर लेती है।

घड़ी की टिक-टिक रातों में

धीरे-धीरे कहती है –

“घर ईंटों से नहीं बनते,

साथ से दुनिया रहती है।”

“पैसे सब कम जाते हैं,

नाम बड़े हो जाते हैं,

पर बूढ़े माँ-बाप अकेले

जल्दी टूट भी जाते हैं।”

“जिस घर में आवाज़ें हों,

वो घर जिंदा रहता है,

वरना सुंदर दीवारों में

बस सन्नाटा रहता है।”

दीवारों पर टंगी घड़ी

अब भी चल तो रही है,

पर उसके संग पूरा घर

धीरे-धीरे बूढ़ा है।

काश कोई फिर लौटे और

वैसी शामें लाए फिर,

माँ की हँसी, पापा की बातें,

आँगन में भर जाएँ फिर।

श्री नवनीत महेश्वरी

लेखापरीक्षक,

प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

आदि के संघर्ष से सफ़लता तक का सफ़र

आदि का जन्म अल्लूर गाँव में हुआ था और वह एक बहुत ही शरारती लड़का था, जिसे क्रिकेट और संगीत बहुत पसंद था। बचपन से ही वह हमेशा ऊर्जावान, चंचल और अपने आस-पास की हर चीज़ के बारे में जानने को उत्सुक रहता था। छह साल की उम्र में, उसने पहली कक्षा में पढ़े बिना ही, सीधे दूसरी कक्षा में तेलुगू माध्यम के सरकारी स्कूल में दाखिला ले लिया। हर दिन वह हरि अन्ना के साथ स्कूल जाता था, जो उस समय आदि के पिता द्वारा ली जाने वाली ट्यूशन कक्षाओं में पढ़ते थे।

आदि गणित में विशेष रूप से प्रतिभाशाली था और अपनी बुद्धिमत्ता तथा हंसमुख स्वभाव के कारण वह जल्द ही सभी शिक्षकों का पसंदीदा छात्र बन गया। पाँचवीं कक्षा में किसी ने उसे नवोदय प्रवेश परीक्षा की तैयारी करने का सुझाव दिया। परीक्षा के स्तर के बारे में जानने के बाद, उसने पूरी गंभीरता से तैयारी शुरू कर दी। हालाँकि, नवोदय स्कूलों के हॉस्टल के कड़े माहौल के बारे में सुनकर वह डर गया। इसी डर के कारण, वह आत्मविश्वास के साथ परीक्षा नहीं दे पाया और वह परीक्षा उत्तीर्ण करने में असफल रहा। मन ही मन वह इस परिणाम से खुश था।

उसी साल, उसने मंडल-स्तर की एक परीक्षा दी, लेकिन उसमें उसके अंक अच्छे नहीं आए। उसे निराशा हुई और उसने तब से और भी ज़्यादा मेहनत से पढ़ाई करने का फ़ैसला किया। उसी साल एक बार वह अपने माता-पिता को बिना बताए पास के ही एक गाँव में क्रिकेट खेलने चला गया। जब उनके माता-पिता को इस बात का पता चला, तो उसे बहुत डांट पड़ी और मार भी खानी पड़ी।

सातवीं कक्षा में, जिसे उस समय एक सार्वजनिक परीक्षा माना जाता था आदि ने शानदार प्रदर्शन किया और 473 अंक प्राप्त करके मंडल में प्रथम स्थान हासिल किया। इनाम के तौर पर, गाँव के मुखिया रामसुब्बा रेड्डी ने उसे एक रेडियम डायल वाली घड़ी उपहार में दी। आदि को वह घड़ी बहुत पसंद थी, क्योंकि उसका डायल चमकता था और रात में भी साफ़ दिखाई देता था।

आदि को हमेशा कुरनूल जाना बहुत पसंद था, जहाँ उसकी दादी रहती थीं। हर गर्मियों की छुट्टियों में, वह बेसब्री से वहाँ जाने का इंतज़ार करता था। लेकिन इस बार, उसने अपने माता-पिता से गुज़ारिश की कि उसे आठवीं क्लास से आगे की पढ़ाई वहीं करने दी जाए। उसकी इच्छा पूरी हो गई

और उसने कुरनूल में अपनी दादी के घर के पास रवींद्र विद्या निकेतन स्कूल में दाखिला ले लिया और इंग्लिश मीडियम में पढ़ाई शुरू कर दी। यह आदि की ज़िंदगी में एक नए अध्याय की शुरुआत थी।

जब आदि ने पहली बार कुरनूल के रवींद्र विद्या निकेतन स्कूल में दाखिला लिया, तो उसके लिए यह बदलाव आसान नहीं था। पहले तेलुगू माध्यम में पढ़ाई करने के कारण, उसे उन विषयों के साथ तालमेल बिठाने में मुश्किल हुई, जो अब अंग्रेज़ी में पढ़ाए जा रहे थे। शुरुआत में, वह तेलुगू और गणित को छोड़कर लगभग सभी विषयों में फेल हो जाता था ये दोनों विषय उसकी मज़बूती बने रहे। उसे हिंदी में भी काफ़ी संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि उसके सरकारी स्कूल में हिंदी का कोई उचित शिक्षक नहीं था।

आठवीं कक्षा के दौरान आदि ने कड़ी मेहनत की और धीरे-धीरे उसमें सुधार आया। हालाँकि पूरे साल उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ा, फिर भी वह अंतिम परीक्षाओं में सभी विषयों में उत्तीर्ण होने में सफल रहा। इस सफलता ने उसे आत्मविश्वास प्रदान किया।

नौवीं कक्षा तक आते-आते, आदि पूरी तरह से बदल चुका था। वह नियमित रूप से अच्छे अंक लाने लगा था और अक्सर क्लास टेस्ट तथा परीक्षाओं में शीर्ष दस छात्रों में शामिल रहता था। स्कूल में होने वाली क्विज़ प्रतियोगिताओं में भी उसका प्रदर्शन बेहतरीन रहता था, जहाँ उसकी तेज़ सोच और मज़बूत सामान्य ज्ञान उसे सबसे अलग पहचान दिलाते थे।

पढ़ाई के अलावा, आदि को गणेश उत्सव से गहरा लगाव था। उसे भगवान गणेश बहुत प्रिय थे और वो हर साल इस उत्सव का बेसब्री से इंतज़ार करता था । कुरनूल में गणेश उत्सव के दौरान, उसकी दादी के घर के सामने कई खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती थीं। आदि ने सभी प्रतियोगिताओं में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और कई पुरस्कार जीते, जिससे उसे अपार खुशी और आत्मविश्वास मिला।

दसवीं कक्षा में शिक्षकों ने सबसे होशियार दस छात्रों को चुना और उन्हें पब्लिक परीक्षाओं की तैयारी पर पूरी तरह ध्यान देने के लिए अलग बिठाया। आदि भी उस समूह में शामिल था। हालाँकि, हर समय गंभीरता से पढ़ाई करने के बजाय वह और उसके दोस्त अक्सर क्लासरूम में ही क्रिकेट खेलते थे।जिसमें वे इरेज़र को गेंद और नोटबुक को बल्ले की तरह इस्तेमाल करते थे। इस तरह ध्यान भटकने की वजह से बाद की परीक्षाओं में उसके नंबर कम हो गए और शिक्षकों ने उसे वापस बाकी छात्रों के साथ बिठा दिया।

जब दसवीं कक्षा की पब्लिक परीक्षा के नतीजे घोषित हुए, तो आदि ने 533 अंक हासिल किए। हालाँकि यह एक सम्मानजनक स्कोर था, फिर भी वह इससे संतुष्ट नहीं था, क्योंकि उसे इससे कहीं ज़्यादा हासिल करने की उम्मीद थी। फिर भी इस दौर ने उसे अनुशासन, एकाग्रता और मौज-मस्ती के साथ-साथ ज़िम्मेदारी निभाने के बारे में कई अहम सबक सिखाए।

दसवीं कक्षा पूरी करने के बाद आदि ने श्री कृष्णा जूनियर कॉलेज में MPC स्ट्रीम (गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान) में इंटरमीडिएट में दाखिला लिया। उसने पहले वर्ष में पूरी लगन से पढ़ाई की और असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हुए 470 में से 457 अंक प्राप्त किए।

ठीक दसवीं कक्षा की तरह ही दूसरे साल के लिए भी टॉपर्स को एक खास सेक्शन में अलग कर दिया गया। इस बार आदि ने अपना ध्यान बनाए रखा और अपनी एकाग्रता भंग नहीं होने दी। उसने पूरे साल कड़ी मेहनत की और 971 अंकों का शानदार स्कोर हासिल किया, जिसके लिए उसे केंद्र सरकार की छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया।

इसके बाद उसने EAMCET प्रवेश परीक्षा दी, जिसमें उसने अच्छा प्रदर्शन किया और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग स्ट्रीम में राजीव गांधी मेमोरियल कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (RGM कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग) में दाखिला प्राप्त किया।

आदि अपने इंजीनियरिंग के दिनों में बहुत ही मेहनती छात्र था। हर दिन वह कुरनूल से बस से कॉलेज जाता और पूरी लगन से अपनी कक्षाएँ अटेंड करता था। इंजीनियरिंग के तीन साल सफलतापूर्वक पूरे करने के बाद चौथे साल में ही कैंपस प्लेसमेंट के ज़रिए उसका चयन हो गया।

लेकिन, आदि का एक इससे भी बड़ा सपना था। वह किसी प्रतिष्ठित 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी' (IIT) से VLSI Systems में M.Tech करके एक 'चिप डिज़ाइनर' बनना चाहता था। इसी लक्ष्य को लेकर, उसने GATE परीक्षा के लिए पूरी गंभीरता से तैयारी की। अपनी कड़ी मेहनत के बावजूद, उसे वह परिणाम नहीं मिला जिसकी उसने उम्मीद की थी।

एक बार फिर महज़ 20 साल की कम उम्र में ही नौकरी के लिए चुने जाने के बाद, उसका ध्यान धीरे-धीरे उच्च शिक्षा से हटता गया। अपने सपनों को कुछ समय के लिए एक तरफ रखते हुए, आदि ने 4 मार्च 2013 को अपने दोस्तों के साथ हैदराबाद में 'टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज़' (TCS) जॉइन कर ली, और इस तरह उसके जीवन में एक नए पेशेवर अध्याय की शुरुआत हुई।

आदि का पेशेवर करियर आसानी से शुरू नहीं हुआ। मन ही मन, उसे कभी भी कॉर्पोरेट नौकरियों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। काम करते समय उसे लगातार यह महसूस होता था कि दफ़्तर की ज़िंदगी उसके लिए नहीं बनी है। साथ ही उसके पिता उसे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए और विशेष रूप से डाक विभाग में नौकरियों के लिए ज़ोर-शोर से प्रोत्साहित करते थे। आखिरकार आदि ने सरकारी नौकरियों की तैयारी गंभीरता से करने का फ़ैसला किया।

2015 में, उसने डाक विभाग की परीक्षा दी और अपने पहले ही प्रयास में इसे पास कर लिया, जिसके बाद उसका चयन 'पोस्टल असिस्टेंट' के रूप में हो गया। यह उसके परिवार के लिए बेहद गर्व का क्षण था, खासकर इसलिए क्योंकि उसके पिता और दादा दोनों ने ही डाक विभाग में सेवा की थी।

इस परीक्षा को पास करके आदि को बहुत खुशी हुई। उसने 'टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज़' में अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया और कुरनूल में डाक विभाग में शामिल हो गया।

लेकिन, नौकरी ज्वाइन करने के बाद उसे एहसास हुआ कि उसे यह काम सचमुच पसंद नहीं है। उसकी सबसे बड़ी तमन्ना सरकारी क्षेत्र में ग्रुप सर्विस की कोई ऊँची पोस्ट पाने की थी। एक साहसी और जोखिम भरा फ़ैसला लेते हुए, उसने पोस्टल डिपार्टमेंट की नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया ताकि वे पूरी तरह से अपनी तैयारी पर ध्यान दे सकें। नौकरी छोड़ने पर कई रिश्तेदार नाराज़ हुए और उसकी आलोचना करते हुए कहने लगे कि इतनी सुरक्षित सरकारी नौकरी छोड़ना तो पागलपन है। लेकिन उस मुश्किल दौर में, सिर्फ़ उसकी माँ और बहन ही मज़बूती से उसके साथ खड़ी रहीं। उन्हें पूरा यक़ीन था कि आदि ज़िंदगी में कुछ बहुत बड़ा हासिल करेगा। सबसे अहम बात यह थी कि आदि को भी अपने उस सपने पर पूरा भरोसा था।

इस्तीफ़ा देने के बाद लगभग दो सालों तक उसे बार-बार असफलता का सामना करना पड़ा। उसने हर तरह की परीक्षाओं में हिस्सा लिया–बैंकिंग, कर्मचारी चयन आयोग की भर्तियाँ और राज्य समूह सेवाएँ, लेकिन वह एक भी बड़ी परीक्षा पास नहीं कर पाया । यह एक बेहद कठिन दौर था, जो अनिश्चितता, दबाव और आत्म-संदेह से भरा हुआ था।

आखिरकार, 2019 में उसकी मेहनत और लगन रंग लाई, जब उसका चयन भारतीय रेलवे में 'गुड्स गार्ड' के पद पर हुआ और उसे राजमुंदरी में तैनात किया गया। ट्रेनिंग के दौरान उसकी मुलाक़ात कार्तिक नाम के एक व्यक्ति से हुई कार्तिक मूल रूप से राजमुंदरी के ही रहने वाले थे, लेकिन उन्हें गुंटकल में तैनात किया गया था। तब तक आदि का चयन तीन अन्य पदों के लिए भी हो चुका था और उसे यह भली-भांति ज्ञात था कि वह अंततः रेलवे की नौकरी छोड़ देगा । कार्तिक को उनके माता-पिता के साथ रहने में मदद करने की मंशा से, आदि ने 'म्यूचुअल ट्रांसफर' (आपसी तबादले) के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और स्वयं गुड्स गार्ड के रूप में रायचूर चला गया ।

वहाँ तीन महीने सेवा करने के बाद आदि ने एक बार फिर इस्तीफ़ा दे दिया और कुरनूल में DAO के पद पर कार्यभार ग्रहण कर लिया यह एक ऐसा राजपत्रित पद था जिसे अपने पसंदीदा शहर में पाने का सपना वह लंबे समय से देख रहा था।

यह वह पल था जिसने सारी आलोचनाओं को गलत साबित कर दिया। वह लड़का जिसे कई लोग पागल कहते थे, आखिरकार वहाँ पहुँच ही गया जहाँ वह हमेशा से पहुँचना चाहता था।

श्री बी. राजू आदित्य,
स.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(के) का कार्यालय

<u>**हिंदी दिवस: ईमानदारी और उत्साह की कहानी**</u>

हिंदी दिवस के अवसर पर हमारे कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रोत्साहन से जुड़े कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें से एक था *हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता* । मुझे लगा था कि यह कार्यक्रम 3:30 बजे शुरू होगा, इसलिए मैं और मेरी एक मित्र ठीक उसी समय स्थल पर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर पता चला कि प्रतियोगिता तो 3 बजे ही शुरू हो चुकी थी। थोड़ी विनती करने पर हमें भी प्रवेश मिल गया।

शुरुआत में सीटें सीमित थीं, इसलिए हम दोनों पास-पास बैठे। जैसे-जैसे प्रतिभागी अपना प्रश्नपत्र पूरा कर बाहर जाते गए, हमें थोड़ी दूरी पर बैठा दिया गया। प्रश्नोत्तरी में कुछ सवाल हमें आते थे, और कुछ में हमने अनुमान लगाया। मेरी मित्र को तो मुझसे भी कम उत्तर आते थे, इसलिए उसने अधिकतर प्रश्नों में अनुमान लगाया। यह एक मज़ेदार अनुभव था और हमने भी अपना प्रश्नपत्र पूरा कर जमा कर दिया।

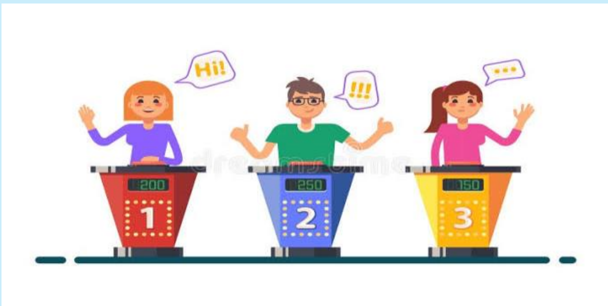

कुछ दिनों बाद परिणाम घोषित हुए। हमारी कोई विशेष उम्मीद नहीं थी, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से हम दोनों को *सांत्वना पुरस्कार* के लिए चुना गया। मेरी मित्र चौथे स्थान पर और मैं पाँचवें स्थान पर रहा। हम दोनों बेहद खुश थे।

इस घटना ने हमें यह सिखाया कि कभी-कभी छोटी और अप्रत्याशित सफलता भी महत्वपूर्ण होती है, आवश्यकता है, बस सजग रहने की ।

संदेश: हिंदी दिवस केवल भाषा का उत्सव नहीं है, बल्कि यह हमें ईमानदारी, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का महत्व भी याद दिलाता है।

श्री नीरज कुमार
लेखापरीक्षक,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) कार्यालय की सहायक निदेशक

<u>सुश्री पद्मा सुरेश की सेवानिवृत्ति की कुछ झलकियां</u>

जीवटता

अप्पू का मन पहले ही ख़राब था। करीब दो साल के बाद घर गया था और पलक झपकते ही उसकी वापसी का दिन आ गया। ये चार दिन पलक झपकते बीत गए। अचानक से कल शाम में उसको एयर लाइन्स की तरफ से मेसेज आता है कि उसकी फ्लाईट एक घंटे पहले प्री-पोन हो गई है। वह तब बाज़ार में था। घर आकर माँ को ये बात बताई। माँ ने उसके लौटने की तैयारी लगभग कर ली थी, फिर भी उनका चेहरा थोड़ा और उतर गया।

अगली सुबह अप्पू के निकलने की तैयारी हो चुकी थी। माँ ने नाश्ते में उसके पसंद की कढ़ी-पकोड़ी बनाई थी। साथ ही आलू की पूड़ी और अचार भी पैक कर दिया। एक बैग तो ऐसा था, जिसमें माँ ने घर के अनाज भर रखे थे और पिछले दो दिनों से वह बैग का साइज़ बड़ा होता जा रहा था। संजू को भी पता था माँ को एयरलाइन्स से जुड़े नियम-कायदों को बताने का बहुत लाभ नहीं है। उसने चुपचाप उस बैग को खोला और कम ज़रूरी सामानों को निकालकर एक तरफ रख दिया। माँ को बोलता तो चीज़ें कम तो नहीं होती, दो- चार और बढ़ ज़रूर जाती।

सामान कम करते-करते भी तीन बैग हो गए थे। माँ पूजा घर से आरती की थाली लेकर आई। उस थाली के दिये की ज्योति की टिम-टिम और आंसुओं से भरी माँ की आँखों से अप्पू का मन और आँखें दोनों नम हो रहे थे। जैसे-तैसे उसने अपनी इन भावनाओं पर नियंत्रण करने का प्रयास किया। तब तक पापा भी वहाँ आ चुके थे। उस कमरे के भारीपन को भांपते हुए उन्होंने अपना गला साफ़ कर 'जल्दी करो, देर हो रही है'- कहा। माँ के आंसुओं की धार अब रुक न पाई और अप्पू से भी अब खुद पर नियंत्रण नहीं हो पाया। आरती लेकर माँ के पैर छूकर वह अपना सामान लेकर भरे मन से नीचे आ गया।

घर से कुछ 200 मीटर दूर एयरपोर्ट की बस मिल जाती। माँ के पैर छूकर, सामान कंधे पर रख अप्पू पापा के साथ बस अड्डे की ओर निकल पड़ा। माँ ने खाने का एक बैग दिया था, जो पापा ने ले रखा था। पापा बहुत कुछ कहना चाहते थे और अप्पू भी, पर दोनों के मन की मन में ही रह गई और इतने में एयरपोर्ट की बस आ गई। अप्पू पापा के पैर छूकर बस की ओर बढ़ चला। पापा ने खाने का बैग बढ़ाकर 'फिर जल्दी आना'- कहकर, मजबूत बनने का निरर्थक प्रयास करते हुए आंसू रोकने का असफल प्रयास किया। अप्पू के सब्र का भी बाँध टूटा और अपना गला साफ़ करते हुए बस वो जी बोलकर सीट की ओर मुड़ गया।

बस आगे बढ़ चली। बस के पीछे के शीशे से उसने देखा तो पापा अब भी वहीं खड़े थे। अपने आंसुओं को पोंछते हुए उसने सामान रखकर बैठने के लिए इधर-उधर नज़र दौड़ाई। आखिर की सीट उसे खाली दिखी। वह जाकर बैठ गया। बस कुछ दूर जाकर रुक गई। मन के हजारों उधेड़बुन में अप्पू की नज़र हाथ घड़ी पर गई। उसकी फ्लाईट को अब बस 2.30 घंटे बचे थे। बस थी कि रुक- रुककर

चल रही थी। रास्ते के हर मुसाफिर को बस में बैठाने का ज़िम्मा इसी बस ने ले रखे था। कुछ देर तो अप्पू ने सब्र रखा। बस फिर रुकी और कंडक्टर बस के सारे स्टॉपों के नाम तोते की तरह रटने लगा। अब उससे न रहा गया। जैसे ही वह अपनी सीट से उठा बस चल पड़ी। उसने कंडक्टर के पास जाकर बिना स्टॉप के बस को रोकने पर अपनी खीझ जताई। कंडक्टर ने हंसी में बात टालने की कोशिश की। तब तक दुबारा बस ने ब्रेक लगाई। अब अप्पू से न रहा गया। वह उठा और सीधे ड्राईवर के बगल में जाकर बैठ गया। ड्राईवर को भी थोड़ा अजीब लगा। अप्पू ने उसे झिड़कते हुए कहा- 'अब स्टॉप के अलावा अगर बस रुकी तब तुम्हारी और इस बस की खैर नहीं। मेरी फ्लाईट छूट जाएगी।' उसको सुनकर साथ के और भी यात्रियों ने भी अपनी आवाज़ बुलंद की और उसकी हाँ में हाँ मिलाई।

जैसे-तैसे बस ने अप्पू को एयरपोर्ट के नजदीक के एक चौराहे पर उतारा। अब फ्लाईट छूटने में सिर्फ सवा घंटे का समय बचा था। हालांकि उसने वेब चेक इन की प्रक्रिया पूरी कर ली थी, पर फिर भी उसे घबराहट हो रही थी। सामान एक तरफ रखकर वह ऑनलाइन कैब ढूंढने लगा। बहुत कोशिश करने के बाद भी कोई भी कैब वाला नहीं आ रहा था। उसकी घबराहट पास खड़े एक बुज़ुर्ग ने भांप ली। उसने सलाह दी कि आगे से दाहिने मुड़कर एक बाइक स्टैंड है, उसे वहीं चले जाना चाहिए। पहले तो अप्पू के मन में संदेह हुआ, फिर भागते समय को देखते हुए उसने उस बुज़ुर्ग की बात मानना ही ठीक समझा। उसने सारा सामान इकठ्ठा किया और आगे की ओर बढ़ने लगा।

जैसे ही वो वहां पहुंचा उसे सच में वो बाइक स्टैंड दिखा। बहुत से बाइक वाले वहां खड़े थे जो एयरपोर्ट-एयरपोर्ट चिल्ला रहे थे। उन्हीं में से एक से उसने एयरपोर्ट जाने के लिए पूछा। पहले तो उसने उसे संदिग्ध नज़रों से देखा, फिर अटपटा सा मुंह बनाकर बोला- 'हम तो जाएंगे नहीं बाबू, आप उस नीली बाइक वाले के साथ जाओगे, तो चले जाओ। अप्पू ने बहस करने में समय बर्बाद करने से ज्यादा अच्छा उस बाइक वाले के साथ चुपचाप जाना सही समझा। अपने सामान के साथ संतुलन बनाकर अप्पू उस बाइक वाले के साथ बढ़ चला।

अभी कुछ दूर ही चले थे कि अप्पू को ऐसा महसूस हुआ कि बाइक लहरा रही है। फिर भी उसने बाइक वाले को तुरंत नहीं टोका। थोड़ी दूर पर उसे दुबारा ऐसा लगा कि बाइक का संतुलन पूरी तरह बिगड़ रहा है। अब उसने बाइक वाले को टोका- 'क्या बात है भाई? कुछ लिए हो क्या? तुम बाइक किनारे लगाओ। मैं चला जाऊँगा। रोको, जल्दी रोको।' बाइक वाले ने कांपती आवाज़ में कहा- 'सर आप निश्चिंत रहिए, मैं आपको ठीक से पहुंचा दूंगा।' उसकी कांपती आवाज़ में थोड़ी घबराहट और ढेर सारा आत्मविश्वास भरा था। अप्पू ने भी बिना बोले मौन सहमति देकर बैठना ही ठीक समझा। लेकिन थोड़ी दूरी पर ही बाइक ने फिर लहराना शुरू किया। अप्पू ने बाइक ड्राईवर के हाथों को ध्यान से देखा तो, वो इतनी जोर से काँप रहे थे कि अब तो उसको बहुत डर लगने लगा। उसने बाइक वाले को थोड़ा विनम्र होकर ही बाइक को किनारे लगाने का निवेदन किया।

बाइक किनारे लगाकर दोनों नीचे उतरे। अप्पू के हाथों से एक बैग लेकर बाइक ड्राईवर खड़ा हो गया। वो दूसरा बैग लेने जा रहा था, तभी उसका शरीर इतनी जोर से कांपा, जैसे उसे बिजली का तेज़ झटका लगा हो। अप्पू ने तुरंत उसे मजबूती से पकड़ लिया। थोड़ा स्थिर होने के बाद उसने अपने पॉकेट से दवा निकाली। दवा खाने के लिए वो पानी लेने के लिए पास की दुकान पर बढ़ रहा था तभी अप्पू ने उसे पानी का बोतल पकड़ा दिया। दवा खाने के बाद वह थोड़ा संयमित होकर अप्पू की ओर देखने लगा। उसे इतना समझ आ रहा था कि अब अप्पू उसके साथ आगे का सफ़र नहीं करेगा। वह हर गुजरने वाले ऑटो और कैब को रोकने का प्रयास करने लगा। अप्पू ने उसे इशारे से चलने को कहा। उसने भी चुपचाप बाइक स्टार्ट कर ली। कुछ दूर चले थे कि फिर से बाइक ने लहराना शुरू कर दिया। अप्पू ने खुद पर नियंत्रण रखते हुए सामान्य रहने का प्रयास किया। उसने बाइक ड्राईवर के कंधे पर हाथ रखकर उसे थोड़ा ढाढस बंधाया।

एयरपोर्ट अब आने वाला था। तभी अप्पू को चाय की एक गुमटी दिखी। उसने बाइक ड्राईवर को उस दुकान पर रुकने को कहा। दोनों उतरे और अप्पू ने दो चाय लिया। एक चाय उसकी ओर बढ़ाते हुए उसने बाइक ड्राईवर को ध्यान से देखा। वह नौजवान ही था, रंग भी साफ़ था, नैन नक्श भी ठीक थे। उसने चाय का ग्लास दोनों हाथों से पकड़ रखा था। बड़ी मेहनत से वह बिना ग्लास गिराए चाय पी पा रहा था। अप्पू से रहा न गया। उसने बाइक ड्राईवर से पूछ ही डाला- 'नाम क्या है?' 'घनश्याम' - उसने थोड़ा झिझकते हुए कहा। 'कुछ परेशानी है क्या?' -अप्पू ने बात आगे बढ़ाई। उसे महसूस हुआ कि अनावश्यक ही उसने ये पूछा। लेकिन घनश्याम थोड़ा सहज हो गया था। चाय का ग्लास रखकर वह थोड़ा स्थिर हुआ और बोला- 'उसका जन्म जन्माष्टमी के दिन हुआ था। माँ ने उसका नाम रखा था। माँ- बाबूजी अब नहीं रहे। वह अपनी नानी के साथ रहता है। उसे पार्किंसंस है।'

आगे अप्पू ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा- 'तुम कोई दूसरा काम क्यों नहीं करते? इसमें तो बहुत खतरा है।' घनश्याम का चेहरा थोड़ा उतर गया। अपना सा मुंह लेकर झिझकते हुए बोला- 'मुझे कोई क्यों काम देगा? बहुत कोशिश की, लेकिन मेरी हालत देखकर दो-एक दिन में ही लोग झड़पना शुरू कर देते थे। तू नहीं कर सकता, तुझसे नहीं हो पाएगा। ऐसे सैंकड़ों ताने सुनने को मिले। नानी ने बाइक दिलाई थी, अब यही जीने का माध्यम बन गया। जिस बाइक वाले ने आपको मेरे पास भेजा था न वो मेरे ही गाँव का था। उसे हमारी हालत पता है।' कहकर उसने अपना गला थोड़ा साफ़ किया।

अप्पू का ध्यान समय की तरफ गया। जैसे ही वो मुड़ा, घनश्याम की नम आँखें और कांपते हाथों ने उसे सन्न कर दिया। उसने चाय के पैसे दिए, सामान लिया और दोनों एयरपोर्ट के लिए निकल पड़े। एयरपोर्ट पहुँचने के बाद अप्पू ने उसके हाथ में पैसे दिए और बिना उसे देखे अंदर चला गया। घनश्याम ने दोनों हाथ जोड़े नमस्ते भी कहा, लेकिन अप्पू ने कोई जवाब नहीं दिया।

शाम को करीब 7 बजे अप्पू घर पहुंचा। घर की याद, सफ़र की थकान से उसका चेहरा और मन दोनों बुझे थे। निशा चाय लेकर आई। अप्पू सोफे पर ही लेटा था। निशा ने उसे चाय दी और दोनों घर की, इधर- उधर की बातें करने लगे। निशा को महसूस हुआ कि अप्पू थोड़ा असामान्य है। कुछ तो है जो उसे बहुत परेशान कर रहा है। निशा को इतना तो पता था कि अप्पू के मन को टटोलना बहुत मुश्किल है। फिर भी उसने कोशिश की- 'आज गर्मी बहुत है, उधर भी इतनी ही गर्मी है क्या?' अप्पू ने बस एक हम्म में जवाब दिया। निशा ने भी कुछ देर चुप ही रहना ठीक समझा।

निशा खाने की तैयारी में जुट गई। इतने में अप्पू ने उसे आवाज़ लगाई। निशा पानी की एक बोतल लेकर हॉल में पहुंची। 'कुछ चाहिए क्या?' उसने पूछा। अप्पू ने उसका हाथ पकड़कर सोफे पर बैठने का इशारा किया। अप्पू का गला भारी था। निशा ने ठीक समझा कि वो परेशान है। उसे इस बात की ज़्यादा चिंता थी कि वह अप्पू का मन कैसे हल्का करे। निशा ने ही बात शुरू की- 'घर पर कुछ हुआ क्या? मम्मी पापा तो ठीक है न।' अप्पू ने बस सिर हिलाकर जवाब दिया। जब उसने सिर उठाया तब उसकी आँखें डबडबाई थी। ऐसा क्या हुआ था कि अप्पू इतना परेशान था? निशा को ये चिंता सताए जा रही थी। अप्पू ने संयम रखते हुए घनश्याम के बारे में निशा को बताया। उससे भी न रहा गया और उसकी भी आँखें भर आई। घनश्याम की जीवटता ने अप्पू को बेचैन कर रख था। अप्पू को इस बात का बहुत अफ़सोस था कि उसके पास घनश्याम से संपर्क करने के कोई माध्यम नहीं था।

'ज्ञान का फोन आ रहा है'- निशा ने कहा। अप्पू भागते हुए आया और बात करने के लिए बालकनी की ओर चला गया। जब उसकी बात हो गई तो निशा ने पूछा- 'सब ठीक?' आज कई दिनों के बाद अप्पू के चेहरे की हंसी उसकी आँखों में भी झलक रही थी। 'पता है- घनश्याम का नंबर मिल गया।' आज अप्पू की आवाज़ में वही ठनक थी। निशा की भी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। उसने भी चहकते हुए पूछा- 'अरे, कैसे?' अप्पू ने ज्ञान को सारी बात बताई थी। उसे उस बाइक स्टैंड का पता बताकर घनश्याम की खोज करने का आग्रह किया था। ज्ञान को उधर की तरफ ही कुछ काम था, वो गए और घनश्याम की पूरी जानकरी मिल गई।

अप्पू ने ज्ञान के दिए नंबर पर कॉल मिलाया। उधर से कांपती आवाज़ में किसी ने हेलो कहा। अप्पू ने रुंधे गले से घनश्याम का नाम पुकारा। 'जी, मैं घनश्याम', आप कौन?' घनश्याम ने पूछा। अप्पू ने अपना परिचय देकर उस दिन की याद दिलाई। घनश्याम ने भी अप्पू को पहचानते हुए नमस्ते सर -कहा। 'कैसे हो?'- अप्पू ने पूछा। 'ठीक है सर।' घनश्याम ने कहा। निशा ने अप्पू के कंधे पर हाथ

रखा। अप्पू ने घनश्याम से उसका बैंक डिटेल्स लिया और किसी भी तरह की सहायता का आश्वासन दिया। घनश्याम ने झिझकते हुए अप्पू की सहायता स्वीकार की।

इस महीने की सैलरी आ गई थी, घनश्याम के अकाउंट में अप्पू ने पैसे भेज दिए। धन्यवाद देने के लिए घनश्याम ने कॉल किया था। अप्पू की आँखें नम थी।

सुश्री प्रियंका संजीव सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
प्र.मले.(लेप-II) का कार्यालय

<u>हमें पढ़ना है</u>

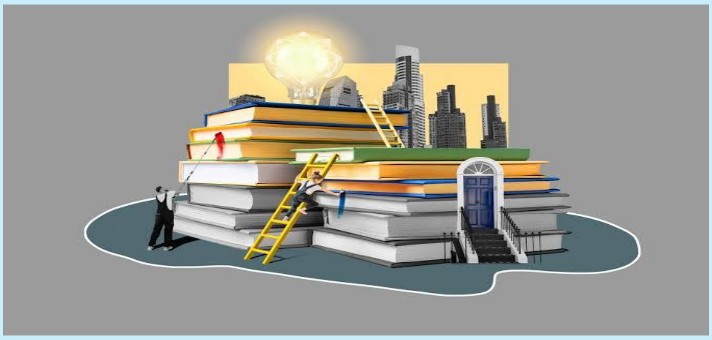

एक सवाल पूछने लगता हूँ, मैं खुद से,

हम क्या चाहते हैं, जवाब मिलता है,

“पढ़ना चाहता हूँ, लेकिन यह काले अक्षर नहीं

यह मोटी- मोटी किताबें नहीं, कोई ख़ास विषय नहीं,

मैं जीवन में पढ़ना चाहता हूँ, जो भी प्रश्नं मेरे मन में आए।

मैं पढ़ना चाहता हूँ, मैं सीखना चाहता हूँ

अनुभवों से, कुछ दूसरों से, कुछ अपनो से,

मुझे बारिश अच्छी लगती है, मैं बारिश से सीखना चाहता हूँ,

मैं हवा को सूंघना चाहता हूँ, बिछाना और ओढ़ना चाहता हूँ,

मैं चाहता हूँ कि दुनिया में, बहने वाली सभी नदियों के तट पर बैठूं

और अपने अनुभव से उनमे अंतर जानू।

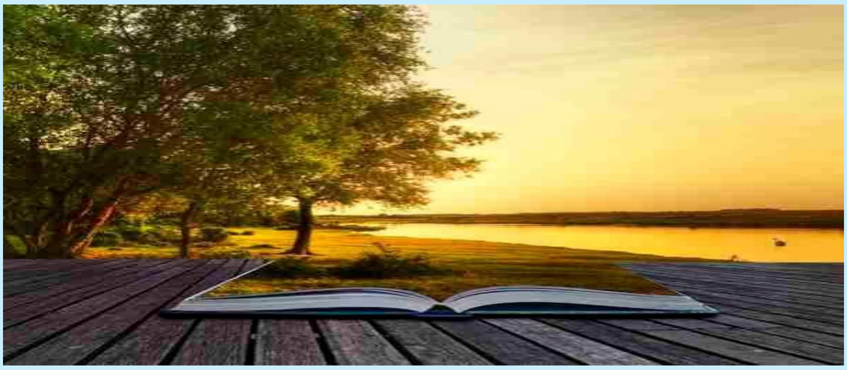

मैं प्रकृति की हर वस्तु को अपने अनुभव से पढ़ना चाहता हूँ,

हाँ, तो पढ़ते क्यों नहीं, किसने रोका है तुम्हें?

मेरे भीतर के डर ने, असुरक्षा ने, लालच ने, मोह ने,

मैंने अपनी ज़रूरतें बहत बढ़ा ली है और यह बढ़ी हुई ज़रूरतें,

मैं खुद अपने लिए पूरी नहीं कर पाऊंगा।

यह भय मुझे पढ़ने नहीं देता, जो मैं पढ़ना चाहता हूँ

और इसीलिए मुझे वह पढ़ना पड़ेगा, जो मैं पढ़ना नहीं चाहता हूँ।

श्री मुकेश अंबानी
डी.ई.ओ.
मले.(लेप-I) का कार्यालय

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का एक बहुत सरल स्त्रोत है।

- सुमित्रानंदन पंत

पाठकगण के प्रतिक्रिया की प्रत्याशा में...

संयुक्त राजभाषा परिवार

“धर्मवीर भारती: साहित्य सूर्य की शताब्दी”

“टूटे हुए सपनों की कोई आवाज़ नहीं होती।”

- पूरा नाम: धर्मवीर भारती
- जन्म: 25 दिसंबर 1926, इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज), उत्तर प्रदेश।
- निधन: 4 सितंबर 1997, मुंबई, महाराष्ट्र।
- परिचय: वे हिंदी के प्रसिद्ध कवि, लेखक, उपन्यासकार, नाटककार और पत्रकार थे।
- शिक्षा: उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की और हिंदी साहित्य में शोध किया।
- पत्रकारिता: वे लोकप्रिय हिंदी साप्ताहिक पत्रिका ‘धर्मयुग’ के लंबे समय तक संपादक रहे।
- प्रमुख रचनाएँ:
    - **उपन्यास:** ***गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा***
    - **नाटक:** ***अंधा युग***
    - **काव्य:** ***कनुप्रिया, ठंडा लोहा***
    - **निबंध/अन्य:** ***पश्यंती* आदि।**
- साहित्यिक विशेषता: उनकी रचनाओं में प्रेम, मानवीय संवेदना, नैतिक द्वंद्व, युद्ध और आधुनिक जीवन की जटिलताओं का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।
- विशेष प्रसिद्धि: *गुनाहों का देवता* हिंदी के अत्यंत लोकप्रिय प्रेम-उपन्यासों में गिना जाता है, जबकि *अंधा युग* आधुनिक हिंदी नाटक की महत्वपूर्ण कृति है।
- सम्मान: उन्हें साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक सम्मान मिले, जिनमें पद्मश्री और साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रमुख हैं।

“साहित्य के आकाश में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले कालजयी रचनाकार धर्मवीर भारती की जन्मशती पर शत-शत नमन।